ISSN No. 2582-9548

nbt.india
एकः सूते सकलम्

साहित्य और संस्कृति की द्विमासिकी

पुस्तक संस्कृति

वर्ष - 9 ◆ अंक - 2 ◆ मार्च - अप्रैल 2024 ◆ मूल्य ₹40.00

पुस्तकालय विशेषांक

- सेसून लाइब्रेरी : यहूदी धरोहर को यूनेस्को ने किया पुरस्कृत
- साक्षरता कार्यक्रमों में प्रौढ़ पुस्तकालयों की भूमिका
- पुस्तकालय, पाठक और पठन संस्कृति
- पुस्तकालय योद्धा : लोगों में जगा रहे पढ़ने की अलख

सीएसआईआर-केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान

(आईएसओ प्रमाणित आरएंडडी प्रयोगशाला)

राजभाषा गृह पत्रिका "सड़क दर्पण"

"राजभाषा हिंदी का प्रचार एवं जन-मानस में वैज्ञानिक चेतना का प्रसार"

- ❖ वैज्ञानिक तथा तकनीकी लेख
- ❖ जनमानस के लिए लोक रूचि के विषय
- ❖ संस्थान की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी
- ❖ संस्थान के अनुसंधान और विकास (आरएंडडी) संबंधित जानकारी
- ❖ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विविध पहलु
- ❖ हिंदी में साहित्यिक अभिव्यक्ति
- ❖ समसामयिक जानकारी

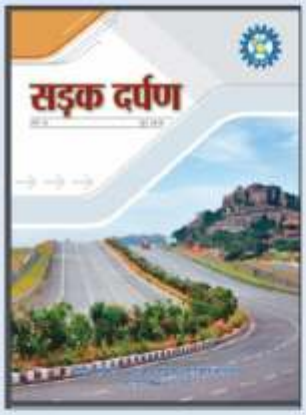

संपर्क -

संपादक, 'सड़क दर्पण'
राजभाषा अनुभाग, सीएसआईआर-केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान
दिल्ली-मथुरा मार्ग, डाकघर सीआरआरआई, नई दिल्ली- 110025
दूरभाष : 26929175, 26831760, 26832325, 26832427/165
ई-पत्रिका का लिंक : **https://www.crridom.gov.in/content/sadak-darpan-hindi-magazine**

प्रधान संपादक
प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे

संपादक
पंकज चतुर्वेदी

सहायक संपादक
दीपक कुमार गुप्ता

संपादकीय सहयोग
शिव मोहन सिंह, विजयलक्ष्मी पाण्डेय

विज्ञापन एवं प्रसार
कंचन वांचु शर्मा

उत्पादन
अनुज कुमार भारती, पवन दुबे

रेखाचित्र
नीलेश गहलोत

सज्जा/डिजाइन
ऋतुराज शर्मा, समरेश चटर्जी

शब्द संयोजन/कार्यालयीन सहयोग
प्रवीन कुमार

सदस्यता शुल्क
व्यक्तियों के लिए
एक प्रति : ₹ 40.00
वार्षिक : ₹ 225.00
(शुल्क भारत के लिए मान्य)

संपादकीय पत्र-व्यवहार
संपादक
पुस्तक संस्कृति
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
पता : नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया
फेज़-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070.
फोन : 011-26707876
ई-मेल: editorpustaksanskriti@gmail.com

प्रकाशक व मुद्रक अनुज कुमार भारती द्वारा नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया (राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत) नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 के लिए प्रकाशित और सालासर इमेजिंग सिस्टम्स, ए-97, सेक्टर-58, नोएडा-201301 (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित।

संपादक
पंकज चतुर्वेदी

सर्वाधिकार सुरक्षित : प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

ISSN NO. 2582–9548

पुस्तक संस्कृति

साहित्य एवं संस्कृति की द्विमासिकी
वर्ष-9; अंक-2; मार्च-अप्रैल, 2024
>> पुस्तकालय विशेषांक <<

इस अंक में

संपादकीय — *प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे* — 2

लेख — **अनोखी बेटियों की अनमोल माँ**—*डॉ. राजरानी शर्मा* — 3

लेख — **मेरे जीवन में पुस्तकालय**—*प्रताप सहगल* — 6

आलेख — **पुस्तकालय : अतीत से भविष्य तक**—*अरुणेंद्र नाथ वर्मा* — 8

आलेख — **पठन प्रवृत्ति के प्रोत्साहन में पुस्तकालयों की भूमिका**—*डॉ. राजन* — 12

लेख — **पुस्तकालय विज्ञान के पाँच सूत्र**—*मोहन सिंह चढ़ार* — 13

लेख — **अपने बाहर-भीतर के खालीपन से मुक्ति का अहसास दिलाता पुस्तकालय**—*महावीर रवांल्टा* — 14

लेख — **भारत में पारंपरिक पुस्तकालय एवं पुस्तकालयों की व्यवस्था का विजन-मिशन कार्यनीति के उद्भव व विकास का इतिहास**—*विजय सिंह रावत* — 18

लेख — **शोधार्थियों का तीर्थ है साहित्य सम्मेलन का 'हिंदी संग्रहालय'**—*डॉ. धनंजय चोपड़ा* — 22

लेख — **पुस्तकालय संस्कृति का सिमटता दायरा : कारण एवं सुझाव**—*प्रवीण कुमार सहगल* — 25

लेख — **पुस्तकालय, पाठक और पठन संस्कृति**—*डॉ. राजेश कुमार व्यास* — 28

झलकियाँ — **नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2024** — 32

लेख — **ग्रामीण क्षेत्र के पुस्तकालय की कथा-व्यथा**—*श्यामसुंदर दुबे* — 34

लेख — **पुस्तकालय योद्धा : लोगों में जगा रहे पढ़ने की अलख**—*शिव मोहन यादव* — 36

लेख — **सेसून लाइब्रेरी : यहूदी धरोहर को यूनेस्को ने किया पुरस्कृत**—*डॉ. के. विक्रम राव* — 38

लेख — **पुस्तकालय सूचना उत्पाद**—*डॉ. इंदु भारती घिल्डियाल* — 42

लेख — **साक्षरता कार्यक्रमों में प्रौढ़ पुस्तकालयों की भूमिका**—*लायक राम मानव* — 44

लेख — **असम में पुस्तकालयों की व्यवस्था**—*कविता शइकीया राजखोआ* — 47

पुस्तक समीक्षा — 49

पुस्तकें मिलीं — 56

साहित्यिक उत्सव — 58

पुस्तक संस्कृति को विस्तार देता नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2024

"पुस्तकें सभ्यता की वाहक होती हैं। पुस्तकों के बिना इतिहास मौन है, साहित्य गूँगा है, विज्ञान अपंग है, विचार और अटकलें स्थिर हैं। ये परिवर्तन का इंजन हैं, विश्व की खिड़कियाँ हैं, समय के समुद्र में खड़ा प्रकाशस्तंभ हैं।" उक्त कथन अमेरिका के महान इतिहासकार और लेखक बारबरा डब्ल्यू. तुचमन का है। यह बात सौ फीसदी सच है कि समय के साथ सब कुछ नष्ट हो जाता है, नहीं होता तो वह है ज्ञान, जो निरंतर विभिन्न रूपों में यथा–लिखित और मौखिक रूप में आगामी पीढ़ियों तक पहुँचता है। इस लिखित रूप को पुस्तक का आकार दिया गया। ये पुस्तकें ही तो हैं, जो हमारे इतिहास और पुरातन संस्कृति से हमें रू-ब-रू कराती हैं। पुस्तकें सोच में बदलाव लाकर स्वस्थ समाज का निर्माण करती हैं।

यद्यपि कागज का आविष्कार चीन में हुआ और यह दुनिया में सबसे ज्यादा पुस्तक प्रकाशन करने वाला देश भी है। यह उल्लेखनीय है कि वर्ष 2023 में पुस्तक पठन में भारत विश्व का प्रथम देश था, वहीं थाईलैंड दूसरे स्थान पर था।

ये आँकड़े बताते हैं कि भारत में पुस्तक पठन-पाठन की परंपरा तेजी से विस्तार कर रही है। यद्यपि इसके रूप में बदलाव जरूर आया है। पुस्तकें अब डिजिटल हो चली हैं, लेकिन पुस्तक तो पुस्तक है। वे किसी भी रूप में रहें, होंगी तो ज्ञान का भंडार ही। यह बात तो सर्वदा सच है कि छपी हुई पुस्तक की खुशबू और उसे हाथ में लेने का एहसास अलग है। पाठक जब अपनी पसंद की पुस्तक अपने हाथ में लेता है तो उसे लगता है कि उसने दुनिया की सबसे खूबसूरत वस्तु को पा लिया है।

आज के तकनीकी के दौर में वैसे तो पुस्तकें ऑनलाइन भी उपलब्ध हैं, लेकिन वहाँ तो आप किसी खास विषय की या किसी खास नाम की विशेष पुस्तक खरीद सकते हैं, लेकिन वहाँ आप स्वतंत्र रूप से पुस्तक का चुनाव नहीं कर पाते। यह अवसर आपको पुस्तक मेले जैसे आयोजन ही दे पाते हैं। ये वे उत्सव हैं, जहाँ लेखक, पाठक से सीधे रू-ब-रू होता है और विचार-विमर्श भी करता है। ये वे स्थान हैं, जहाँ आप अपने विषय की पुस्तक चुन सकते हैं। ये उत्सव ज्ञान का भंडार होते हैं। इस प्रकार के आयोजन संपूर्ण भारत में समय-समय पर आयोजित होते रहते हैं। ऐसा ही पुस्तक मेला राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला' नई दिल्ली स्थित प्रगति मैदान में प्रति वर्ष आयोजित होता है।

इस वर्ष एक बार फिर 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला' का सफल आयोजन दिल्ली के भारत मंडपम में किया गया। यह देश ही नहीं, एशिया का सबसे बड़ा पुस्तक महाकुंभ था। नौ दिन के इस पर्व में लाखों की संख्या में पुस्तक-प्रेमी, लेखक, पाठक और प्रकाशक शामिल हुए। इस दौरान साहित्यिक-सांस्कृतिक विरासत के आदान-प्रदान के अलावा पुस्तक लोकार्पण, गोष्ठी, कवि सम्मेलन, विषय आधारित प्रस्तुतियाँ जैसे 700 से अधिक कार्यक्रम आयोजित हुए। इस वर्ष सऊदी अरब सम्मानित अतिथि देश था। इसके अलावा, जिन विदेशी प्रकाशकों ने मेले में शिरकत की, वे देश थे–ऑस्ट्रिया, बांग्लादेश, फ्रांस, इटली, रूस, ईरान, नेपाल, स्पेन, श्रीलंका, ताइवान, तुर्किये, संयुक्त अरब अमीरात और यूनाइटेड किंगडम। इसके अलावा, लगभग 500 भाषावार प्रकाशकों ने पुस्तकों के इस पर्व में शामिल होकर देश की साहित्यिक-सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने में अपना अमूल्य योगदान दिया।

सूचना क्रांति के इस दौर में एआई तकनीक के बीच पुस्तकों का आकर्षण हमारी पठन-पाठन की परिपाटी को परिभाषित करता है। विशेष रूप से बच्चे, युवा, वृद्ध जब ऐसे आयोजनों में भाग लेते हैं तब यह देखना सुखद होता है कि पुस्तक संस्कृति का विस्तार अबाध रूप से हो रहा है। देश का नॉलेज पार्टनर होने के नाते राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत पुस्तक प्रोन्नयन में अहम् भूमिका निभा रहा है।

विदित हो कि इस वर्ष नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले का 31वाँ संस्करण था, जिसका केंद्रीय विषय 'बहुभाषी भारत : एक जीवंत परंपरा' था। इसे ध्यान में रखते हुए देश के कोने-कोने को परस्पर जोड़ने की कोशिश की गई थी। यह बताता है कि हमारा देश कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और कच्छ से लेकर किबिथू तक भारत अखंड है। भारत की एकता ही विविधता में परिलक्षित होती है। मूलतः हम एक हैं, भाषाएँ विविध हैं, लेकिन भाव एक है। संस्कृति एक है। यह एक देश-एक जन-एक संस्कृति है।

पुस्तक के प्रकाशन में भाषाओं का अहम् योगदान है। बहुभाषी पुस्तकों को सहेजने का कार्य पुस्तकालय करते हैं। पुस्तकालय स्वाध्याय की प्रकृति का विकास करते हैं। ये साक्षरता और शिक्षा का समर्थन करते हैं तथा ज्ञान प्राप्ति के सर्वोत्तम स्थान हैं। साथ ही, हमें अपने मनोवांछित विषय के अध्ययन की स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। 'पुस्तक संस्कृति' का यह अंक पुस्तकालय को समर्पित है। आप सुधी पाठकों को यह अंक कैसा लगा, हमें बताएँगे तो अच्छा लगेगा।

(प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे)
प्रधान संपादक, **पुस्तक संस्कृति**

अनोखी बेटियों की अनमोल माँ

वात्सल्य के इत्र से महकती, मौन के ताने-बाने से बुनी, गरिमा के रंग में रँगी, ममतामयी शॉल ओढ़े किसी साध्वी की अनमोल समाधि-सी हूँ मैं! जो अपनी ज्ञान-शलाका-सी जगमगाती, कालजयी और ज्योतिर्मयी बेटियों को अपने आँचल में छिपाए बैठी रहती हूँ कि कोई प्रकाश की प्यास लिये, उजास का बटोही आए और मेरी इन 'पावनानां पावन'-सी बेटियों के सान्निध्य से महके, चहके और उजास से भर जाए। शब्दों के निःशब्द अभयारण्य में ज्ञान के वरदान से निर्भय करने वाली मेरी इन पुस्तक-पुत्रियों से उस उजास का पता पा जाए, जहाँ से मानवता के, विश्व-बंधुत्व के अनेक आकाश-दीप दिग्दिगंत में दिव्य प्रकाश फैलाते रहे हैं। अपनी शब्दायतन-सी बेटियों

डॉ. राजरानी शर्मा

- मध्य प्रदेश में 36 वर्षों तक प्राध्यापिकीय सेवा देने के बाद लेखन कार्य में सक्रिय।
- प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कविता, समीक्षा एवं ललित निबंधों का प्रकाशन।
- आकाशवाणी व दूरदर्शन से साक्षात्कार एवं वार्ताएँ प्रसारित।
- अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय भागीदारी।
- दो काव्य-संग्रह प्रकाशित।

संपर्क : ई-मेल– rajranis@gmail.com

के मोह ने मुझे दुनिया का ज्ञानद्वीप बना दिया है। मानो चारों ओर अज्ञान सागर की उत्ताल तरंगें ठाठें मार रही हैं और मैं अपने वेद, पुराण, निगम, आगम कला, संस्कृति, साहित्य, विज्ञान के सितारों से जड़ी चूनर ओढ़े बैठी ललनाओं के जगर-मगर करते संसार में आत्मविश्वास के शब्दायित सिंहासन पर बैठी इठला रही हूँ कि विश्व का सारा ज्ञान-कोष तो मेरे इस मौन समाधि द्वीप में है।

मानवता के मार्गदर्शक से दिव्य रत्न तो मेरी ही बेटियों का शृंगार हैं। जहाँ मन के समुद्र को मथकर प्राप्त की जाने वाली आत्मद्युति द्योतित है। कबीर के भावों को अनुवाद करके गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने जो कहा, वह मेरी दुनिया का सच है...

"जहाँ ऋतुओं का स्वामी वसंत राज करता है, वहाँ स्वयं ही अस्फुट संगीत बजता है, वहाँ प्रकाश की धाराएँ सभी दिशाओं में बहती हैं, कुछ ही लोग होते हैं जो उस किनारे तक पहुँच पाते हैं!"

"जहाँ लाखों कृष्ण हाथ बाँधे खड़े हैं, जहाँ करोड़ों विष्णु सिर झुकाए खड़े हैं, जहाँ करोड़ों ब्रह्मा वेद पढ़ रहे हैं, जहाँ करोड़ों शिव चिंतन में खोये हुए हैं, जहाँ करोड़ों इंद्र आकाश में निवास करते हैं, जहाँ देवता और मुनि असंख्य हैं, जहाँ लाखों सरस्वती, संगीत की देवी वीणा बजाती हैं, वहाँ मेरे भगवान स्वयं प्रकट होते हैं और चंदन तथा फूलों की सुगंध उन गहराइयों में बसती है।"

ये भगवान ही शब्द-ब्रह्म हैं और उसी शब्द-ब्रह्म का मंदिर है पुस्तकालय, यानी मेरा घर। मेरे इसी घर में दुनियाभर के नूतन-पुरातन, आद्य और नव्य ऋषि-मुनियों,

शब्द-ऋषियों और प्रयोगशाला के संतों की गहनतम व सघनतम साधनास्थली है। विश्व के अन्वेषकों की मौलिक कल्पनाएँ और अद्‌भुत उद्‌भावनाएँ सिद्धांतों के रसायन में ढलकर, असंख्य अमृत-कलश बनती हैं तथा कल्याणमंत्रों के साक्षात् विग्रह-सी मेरी पुस्तक-पुत्रियों के हाथों में ही कालजयी बनती हैं।

तुलसी का ईश्वर 'बिनु पद चलै सुनै बिनु काना। कर बिनु कर्म करै बिधि नाना' है तो मेरी पुस्तक-पुत्रियाँ यही चमत्कार करती हैं। अमूर्त ज्ञान के इत्र को मानवता की आत्मा में बसाकर कल्याण मंत्रों के उच्चारण से ऐसा रहस्य लोक बसा देती हैं कि हर असंभव, संभव

लगता है। सपनों को संकल्पों में और संकल्पों को अद्‌भुत शिलालेखों में बदल देने का जादुई चिराग मेरी विरासत की हर अलमारी के हर खंड में सहज बसा है और हर खंड में निःशब्द विग्रह-सी विराजमान इन शब्द शक्ति-सी, शब्दमयी-सी, शब्द-दुर्गाओं में, अष्टभुजी नहीं सहस्रभुजी और लक्षभुजी शक्ति सन्निहित है, जो बड़े-बड़े आंदोलनों को हुंकार मंत्र देती है, मनुष्यत्व को निविड़ अंधकार की गुहा से निकाल आत्मसंभवा बनाती है।

कहते हैं कि 20वीं शताब्दी में दुनिया पिछली शताब्दी से अधिक आगे बढ़ी, किंतु किसके बल पर? मेरे संचित ज्ञान मंत्रों के बल पर, जिसमें अध्यात्म, इतिहास, दर्शन, पुरातत्व, विज्ञान, अनुसंधान और आयुर्विज्ञान से लेकर ज्योतिर्विज्ञान तक के अबूझ रहस्य भरे हैं। जिस तरह भूमंडल के सप्त समुद्र का जल एक साथ एक सागर में मिलता है, वैसे ही मेरी 'पुस्तक-पुत्रियों' के आँचल के मंत्रपूत सितारे धरा के एक छोर से दूसरे छोर तक एक ही चमक से झिलमिलाते हैं। तभी तो मौन समाधिस्थल-से लगते हैं, मेरे भव्य भवन यानी पुस्तकालय। मगर ध्यान से सुनें तो करोड़ों-करोड़ किरदारों के कलरव-कौतूहल, सुख-दुख, हर्ष-विषाद, आक्रोश-क्षमा, क्रोध-करुणा, कल्याण-त्राण, प्रार्थना-याचना, रण-संधि, अंतर्द्वंद्व-अंतर्व्यथा और प्रेम-घृणा, संयोग-वियोग, जीवन-मरण, यश-अपयश, हानि-लाभ की करुण विह्वल गाथाओं के मर्मभेदी और हृदयस्पर्शी निनाद से मेरा आकाश गूँजता ही रहता है। चिर पुरातन और चिर नवीन का सेतु काँधों पर उठाए मेरी पुस्तक-पुत्रियाँ मनु पुत्रों की अस्मिता की उद्धारक और रक्षक बनी रहती हैं। श्रीराम के अमोघ बाण-सी जो चाहें, लक्ष्य बेधकर पुनः अपनी माँ के आँचल में समा जाएँ।

गुटेनबर्ग के सपने को अपनी आत्मा में बसाकर कभी मैंने मुद्रित वसन पहने और तमस् श्यामवर्णी काले-काले अक्षरों से भोर की किरणों-सा पावन ज्ञान विकीर्ण किया। विश्व के बड़े-बड़े पुस्तकालय में वर्क-दर-वर्क ज्ञान के अर्क को अर्क (सूर्य) के तेज-सा सहेजा। विद्यार्थियों से लेकर शोध-तापसों को अपने आश्रम सरीखे माहौल में पोषित और पल्लवित करती रही। उनके ज्ञान यज्ञ की पावन आहुतियों के लिए शब्द-दर-शब्द समिधा जुटाती रही। अपने विश्वस्त वातावरण को स्नेह की विशाल बाँहों-सा फैलाकर कल्याण मंत्रों की ध्वनि की साक्षी बनती रही। पुस्तक पुत्रियों का ये अमर आँगन पुस्तकालय, विश्व सभ्यता की कड़ियाँ जोड़ता है; जिसके बिना इतिहास मौन है, साहित्य गूँगा है, विज्ञान अपंग है, विचार और अटकलें स्थिर हैं। सबसे आसान और सहज विश्वभ्रमण है, पुस्तकों की ये अद्‌भुत गहनों भरी तिजोरियाँ। शब्दों की ये बड़ी-बड़ी मीनारें दैहिक, दैविक और भौतिक तापों की संजीवनी हैं। अमर वाक्य बोलते हुए गवाक्ष हैं। समय के समुद्र में खड़े प्रकाशस्तंभ हैं। प्रसिद्ध सुभाषित है कि 'पृथिव्या त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।' ये पुस्तकालय भी ज्ञान-विज्ञान के अमर सुभाषितों की खान हैं। इस मौन-मुखर शब्द संसार के सामने सातों रत्नाकर फीके लगते हैं।

हाँ! एक बात और, पारंपरिक शृंगार करे अलमारियों में सजे कैटलॉगों में बंद रहकर, सदियों तक उजास लुटाकर आजकल मैंने और मेरी पुस्तक-पुत्रियों ने भी आधुनिक होने का नव्य संकल्प लिया है। बात ये है कि समय के साथ चलना बुद्धिमानी भी है और दूरदर्शिता भी। अब हमारे केवल अचल विग्रह ही नहीं; विश्वमोहिनी

चल मूरतें भी समाज और संसार के साथ-साथ चल रही हैं। जरा-सी पेन ड्राइव हमारी ज्ञान परंपरा की वाहिका बन रही है। अब प्यासे ही कुओं के पास नहीं आते, कुएँ भी प्यासों के पास चले जाने लगे हैं... वक्त की धार के साथ चलने में भलाई है न!

“पुस्तकें कितनी भी पुरानी, जर्जर हों, अपनी हों या परायी हों, मुद्रित हों या मुखरित हों, हमेशा ज्ञान का अमृत सँजोती हैं और मन के उपचार के व्यापार सिद्ध करती हैं। सदा ही सरस्वती की सरस धार-सी प्राणों को प्राणपण से सशक्त करती हैं और मनोव्याधियों का सरलतम उपचार करती हैं। इसलिए पुस्तक संस्कृति का अमिय विस्तार ही कल का शाश्वत सत्य है। आज अंतर्जाल (इंटरनेट) का प्रत्येक आखर या वाट्सअप का शब्द-शब्द, विकिपीडिया का प्रत्येक पृष्ठ या चैट जीपीटी और कृत्रिम बौद्धिकता यानी ए.आई., सबके मूल में मैं यानी पुस्तकालयों के सन्निहित ज्ञान ही है।”

इस परिवर्तन के पीछे का सच भी बड़ा बेशकीमती है न, वस्तुतः ‘ग्रंथ वे होते हैं जो निर्ग्रंथ करते हैं’ इसी आदर्श को सामने रखकर आज पुस्तकालय केवल पुस्तकालय नहीं, सूचनाविज्ञान के केंद्र बन गए हैं। मेरी पुस्तक-पुत्रियों के नव्य संस्करण दृश्य-श्रव्य (यानी ऑडियो-वीडियो) होने लगे हैं। लोकरंजन और लोकरक्षण, दोनों के तंत्र और मंत्र-सी शताधिक, सहस्राधिक पुस्तकें अब किंडल

की नन्ही-मुन्नी जेबी अलमारी में बड़ी शान से ज्ञानरंजन और लोकरंजन कर रही हैं। बच्चों से लेकर बड़ों तक की उँगली थाम समय की नब्ज पढ़ने में मदद कर रही हैं। बदलते समय की साक्षी बनी, समय की कसौटी पर खरी उतरती मेरी पुत्रियाँ अंतर्जाल और सी.डी., कैसेट, ऑडियो-वीडियो के हर अवतार के रूप में नए-नए बाने धारण कर रही हैं। अपनी पुस्तक-बेटियों को नए समय के सूत्र सिखा दिए हैं, जिससे वे समय के साथ कदमताल कर सकें। कौन कहता है पुस्तक संस्कृति कल की बात है... कतई नहीं! आज भी जब लंबी ड्राइव पर जाता नवयुवक या अपने लॉन में धूप सेंकता वृद्ध जब अपनी मनपसंद ऑडीबल किताबें सुनता है, तो मैं अपनी आधुनिक छवि में ढली, किंतु अपनी निष्ठा में खरी उतरती बेटियों को प्यार से निहारती हूँ। हम कहाँ हारे हैं रे? शब्द कहाँ हारा है? वरन् और सुदृढ़ हुआ है; और व्यापक हुआ है; और सहज हुआ है। बारूदों की जगह शब्दों के सपने देखती ये दुनिया सदी को बनाने का 21वाँ मंत्र तो शिद्दत से पढ़े।

‘परहित बस जिनके मन माहीं। तिन कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं’, मानस का ये अमर सिद्धांत मानव-कल्याण के विश्वास को दृढ़ करता है। पुस्तकें कितनी भी पुरानी, जर्जर हों, अपनी हों या परायी हों, मुद्रित हों या मुखरित हों, हमेशा ज्ञान का अमृत सँजोती हैं और मन के

उपचार के व्यापार सिद्ध करती हैं। सदा ही सरस्वती की सरस धार-सी प्राणों को प्राणपण से सशक्त करती हैं और मनोव्याधियों का सरलतम उपचार करती हैं। इसलिए पुस्तक संस्कृति का अमिय विस्तार ही कल का शाश्वत सत्य है। आज अंतर्जाल (इंटरनेट) का प्रत्येक आखर या वाट्सअप का शब्द-शब्द, विकिपीडिया का प्रत्येक पृष्ठ या चैट जीपीटी और कृत्रिम बौद्धिकता यानी ए.आई., सबके मूल में मैं यानी पुस्तकालयों के सन्निहित ज्ञान ही है।

‘सहस्रशीर्षा पुरुषः’ के समान, शाश्वत ज्ञान के उद्यान की अमरबेल-सी अनंत ज्ञान की साक्षी अपनी पुस्तक-पुत्रियों के साथ आपके सपने के उस कोने में मैं सदा ही जीवित रहूँगी, जहाँ किसी पुस्तकालय में मौन बैठा मनुष्य मेरी किसी प्यारी-सी पुत्री को अपने हाथों में पाकर स्वयं को विश्व का सबसे सुखी इनसान समझता है। सपनों और संकल्पों को अमृत से सींचने का सहज मनोरथ पूरा करता है। जब तक पारसमणि-सा पुस्तकालय यानी पुस्तक प्रेमियों का स्वर्ग विज्ञान के बदलते किसी भी नए रूप में मानव के अंग-संग है, तब तक सदी का ये 21वाँ अध्याय भी सुनहरे अक्षरों में लिखा जीवन मंत्र बन जाएगा।

मेरे जीवन में पुस्तकालय

पुस्तकालय से मेरा पहला परिचय स्कूल में हुआ। यह एक सरकारी स्कूल था। पुस्तकालय यानी 'पुस्तकों का घर'। पुस्तकों के उस घर में किताबें तो जरूर थीं, लेकिन वे सब कई अलमारियों में बंद झाँकती रहती थीं। तब तक यह समझ भी नहीं थी कि वस्तुतः व्यक्ति के निर्माण में पाठ्यक्रम से इतर पुस्तकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। किताबें मुझे देखतीं और मैं किताबों को, लेकिन कोई करीबी रिश्ता हममें बन न सका। दो-एक बार अपने शिक्षक से भी कहा, लेकिन परिणाम कुछ नहीं। यह बात

1960-62 की है। उन दिनों बाजार में कम-से-कम एक या दो-तीन दुकानें ऐसी भी होती थीं, जहाँ से हम किताबें किराये पर लेकर पढ़ सकते थे। रोज का किराया दो पैसे या एक आना। पढ़ने का व्यसन लगा तो यही दुकानें मेरे लिए पुस्तकालय का काम करने लगीं और रोज एक या दो किताबें पढ़ने लगा। लेकिन ये किताबें रोमांटिक किस्म की होती थीं। धीरे-धीरे साहित्य की ओर मुड़ा, लेकिन साहित्य की किताबें इन दुकानों पर बहुत कम हुआ करती थीं।

हायर सेकेंडरी यानी 11वीं का इम्तिहान पास किया और लाजपतनगर मार्किट में नौकरी करने लगा। हालात कुछ ऐसे ही थे। पुरानी दिल्ली स्टेशन से बाहर निकलते ही दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने जैसे मेरे सामने पुस्तकों के द्वार खोल दिए। वहीं बैठकर और फिर किताब इश्यू करवा के घर ले आता। इस तरह से किताबों से करीबी रिश्ता जुड़ने लगा। लिखने तो मैं पहले से ही लगा था, लेकिन जब यहाँ साहित्य की अधिकतर पुस्तकों में प्रवेश किया तो दिमाग की खिड़कियों पर दस्तक होने लगी कि ज्ञान का कोई अंत नहीं है और मेरी तो बस यह शुरुआत भर थी। दिल्ली का विस्तार हो रहा था और उसके साथ-साथ नए-नए पुस्तकालय भी खुलने लगे थे।

कॉलेज में दाखिल हुआ तो कॉलेज के पुस्तकालय से सामना हुआ। मैंने उस समय के दिल्ली कॉलेज (सांध्य) जो अब 'जाकिर हुसैन कॉलेज' के नाम से जाना जाता है, में बी.ए. करने के लिए प्रवेश लिया था।

प्रताप सहगल

- सुपरिचित कवि, नाटककार, कथाकार, उपन्यासकार और आलोचक प्रताप सहगल की डायरी लेखन, यात्रा-वृतांत तथा आलोचना आदि विधाओं पर समान पकड़ रही है; अनुवाद और संपादन कर्म से जुड़े रहे हैं।
- जाकिर हुसैन कॉलेज में प्रोफेसर रहे सहगल साहब ने बाल साहित्य में भी प्रभूत और उल्लेखनीय योगदान दिया है। लेखक की 50 से अधिक प्रकाशित कृतियों तीन मूल तथा एक अनूदित कृति न्यास से प्रकाशित है। अनेक रचनाओं के देश-विदेश की भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित। रचनाएँ पाठ्यक्रम में शामिल।
- हिंदी अकादमी के साहित्यकार सम्मान, संगीत नाटक अकादमी आदि सम्मानों से विभूति। वर्तमान में स्वतंत्र लेखन में संलग्न।

यह कॉलेज दूसरे कॉलेजों की अपेक्षा नया था, लेकिन पुस्तकालय बहुत समृद्ध था। यहाँ के शिक्षक मुझे इसी वजह से पसंद करते थे कि मैं नई-नई किताब पढ़ने की फिराक में रहता था।

“दिल्ली विश्वविद्यालय की आर्ट्स फैकल्टी का पुस्तकालय और साथ ही सटी ट्यूटोरियल लाइब्रेरी जैसे मुझे चुनौती देने लगी। सचमुच, इतनी किताबें पढ़ना किसी के भी वश की बात नहीं थी। अपना विषय तो हिंदी था, लेकिन मेरी रुचि विविध तरह की किताबों को पढ़ने में भी रहती। इतिहास, मनोविज्ञान और साहित्य मेरी पसंद के विषय थे और जितना भी पढ़ पाता, पढ़ता। कई बार तो आलम ऐसा भी आया कि साहित्य से जुड़ी कोई भी किताब मैं अपने प्राध्यापकों से भी जल्दी पढ़ लेता था। इसका मुझे भरपूर लाभ यह हुआ कि एम.ए. में विश्वविद्यालय में प्रथम श्रेणी से पास हुआ।”

एक थे श्री रूपलाल शर्मा, जो हमें संस्कृत पढ़ाते थे। जब उन्होंने मेरा शौक देखा तो पुस्तकालय अध्यक्ष से आग्रह किया कि मुझे जिस भी किताब की जरूरत हो, वह किताब उनके नाम पर ही मुझे दे दी जाए। पुस्तकालय अध्यक्ष थे इकबाल खान साहब। वे भी बड़े मददगार। अगर कोई किताब पुस्तकालय में न होती तो वे विशेष तौर पर मँगवा देते। यहीं मैंने हिंदी साहित्य के साथ-साथ संस्कृत और अंग्रेजी साहित्य का भी अध्ययन किया। दिन में नौकरी कर रहा था, शाम को पढ़ाई। इसलिए समय कम ही मिल पाता, लेकिन जितना भी समय मिलता, वह या तो कक्षा में या फिर पुस्तकालय में गुजर जाता। कुछ दिनों के लिए कॉलेज की राजनीति से भी जुड़ा, लेकिन यह बात मुझे जल्दी ही समझ आ गई कि राजनीति करना मेरी रुचि का काम नहीं है। किताबों की दुनिया में ही खुद को गर्क कर देने में जो सुख मिलता, वह और कहीं नहीं मिलता था।

लेकिन अभी किताबों की इससे भी बड़ी दुनिया मेरे इंतजार में थी। एम.ए. में दाखिला लिया तो जैसे किताबों के समुद्र के सामने ही खुद को खड़ा पाया। दिल्ली विश्वविद्यालय की आर्ट्स फैकल्टी का पुस्तकालय और साथ ही सटी ट्यूटोरियल लाइब्रेरी जैसे मुझे चुनौती देने लगी। सचमुच, इतनी किताबें पढ़ना किसी के भी वश की बात नहीं थी। अपना विषय तो हिंदी था, लेकिन मेरी रुचि विविध तरह की किताबों को पढ़ने में भी रहती। इतिहास, मनोविज्ञान और साहित्य मेरी पसंद के विषय थे और जितना भी पढ़ पाता, पढ़ता। कई बार तो आलम ऐसा भी आया कि साहित्य से जुड़ी कोई भी किताब मैं अपने प्राध्यापकों से भी जल्दी पढ़ लेता था। इसका मुझे भरपूर लाभ यह हुआ कि एम.ए. में विश्वविद्यालय में प्रथम श्रेणी से पास हुआ। यह तो नौकरी का द्वार खुल जाने जैसा था, लेकिन इससे भी बड़ा लाभ था, मेरी दृष्टि का विस्तार। बजाय एकांगी दृष्टिकोण की जगह एक समेकित दृष्टि बनी। आज भी मेरा मानना है कि जीवन जीने के लिए समेकित दृष्टि से अधिक और कोई दृष्टि नहीं है। समेकित दृष्टि न केवल आपको अपनी बात विभिन्न कोणों से रखने में मदद करती है, बल्कि दूसरों को स्पेस देने के लिए भी तैयार करती है। किताबें ही सिखाती हैं कि हर व्यक्ति अपने-आप में एक ऐसी इकाई है, जो समाज के प्रति भी किसी-न-किसी रूप में अपना दायित्व निभाती है और अगर नहीं निभा रही तो यह एक अपराध है।

विश्वविद्यालय से निकलने के बाद तो जैसे पूरा संसार ही मेरे सामने था। दिल्ली जैसे महानगर में रहने का एक लाभ यह जरूर मिला कि यहाँ पुस्तकालयों की सुविधा अनंत है। हरदयाल लाइब्रेरी, ब्रिटिश काउंसिल लाइब्रेरी, अमेरिकन लाइब्रेरी, नेहरू पुस्तकालय, केंद्रीय सचिवालय का पुस्तकालय, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर लाइब्रेरी तो मात्र कुछ उदाहरण हैं। दिल्ली में पुस्तकालयों का जाल विशाल है और गहरा भी। अपने इलाके में भी मेरे और अन्य अनेक निवासियों के प्रयास से कॉलोनियों में छोटे-छोटे पुस्तकालय खुलने लगे हैं।

किताबों का इतना महत्व है कि अपने छात्र जीवन में ही मैंने तय कर लिया था कि अपने घर में भी एक पुस्तकालय जरूर बनाऊँगा। इसका प्रेरणा-स्रोत मेरे कुछ-कुछ प्रोफेसर ही थे। जब उनके घर जाता तो उनके घर में ढेरों किताबें देखता। मन में कीड़ा प्रवेश कर गया कि किताबें घर में जरूर होनी चाहिए।

जब अवसर मिला तो ऐसा किया भी। आज मेरे निजी पुस्तकालय में हजारों की संख्या में किताबें हैं। बचपन में ही मैं जब हरिवंश राय बच्चन जी से मिला तो जिस कमरे में वे मुझसे मिले, वह किताबों से भरा हुआ था। विजयेंद्र स्नातक से मिला तो वे भी किताबों से घिरे हुए एक कमरे में ही मिले। इन दृश्यों का प्रभाव होता है। मेरा मानना है कि जिस घर में किताबें नहीं, वहाँ का परिवेश कुछ सूना रहता है। किताबें रस भी देती हैं और ज्ञान भी।

आज किताबों का स्वरूप बदल गया है और बदल रहा है। मुद्रित किताबों का स्थान धीरे-धीरे ई-बुक्स या ऑडियो बुक्स ले रही हैं। आखिर हैं तो ये किताबें ही, लेकिन हमारा संस्कार छपी हुई किताबों से जुड़ा हुआ है। ई-बुक्स किताब तो है, लेकिन उसमें किताब की गंध नहीं है। मुद्रित किताब आप बैठकर या लेटकर भी पढ़ सकते हैं। उस पर पेंसिल से निशान लगा सकते हैं। पढ़ते-पढ़ते अगर कोई विचार कौंधता है तो उसे वहीं पर दर्ज भी कर सकते हैं। ई-बुक्स के अपने लाभ हैं कि एक ही टैबलेट में आप कई किताबें एक साथ रख सकते हैं। यात्रा करते हुए पढ़ना हो तो विकल्प अधिक हैं। यानी ई-टैबलेट एक तरह से छोटा-मोटा पुस्तकालय ही है, जिसे आप अपने साथ लेकर चलते हैं।

किताबों का रूप जो भी रहे, लेकिन यह बात तो तय है कि किताब ही जीवन जीने के कई विकल्प हमारे सामने खोल देती है। पुस्तकालय से जुड़ना उसी तरह से जरूरी है, जिस तरह से साँस लेना।

पुस्तकालय अतीत से भविष्य तक

मन की भावनाएँ दूसरों तक संप्रेषित करने के लिए बोलने का कौशल मानवमात्र तक सीमित नहीं। पशु-पक्षी भी तरह-तरह की आवाजें निकालकर किसी हद तक यह कर लेते हैं, लेकिन भावनाओं के संप्रेषण को कालातीत बनाने की मानवीय क्षमता अनूठी है। आदिम मानव ने प्रागैतिहासिक काल से ही अपनी भावनाओं को बहुतों तक पहुँचाने के लिए पाषाण के ऊपर चित्रों के रूप में उकेरना प्रारंभ कर दिया था। गुफाओं की दीवारों पर उकेरे गए चित्र प्राकृतिक क्षरण से सुरक्षित रहे ऐसे चित्र भविष्य के लिए उसका संदेश बन गए। मध्य प्रदेश में भीमबेटका की

गुफाओं में उकेरे गए पूर्व-पाषाण काल के ऐसे चित्रात्मक संदेशों को आज के पुस्तकालय का प्रारंभिक स्वरूप कहना अनुचित न होगा। भारत ही नहीं, अन्य अति प्राचीन सभ्यताओं में भी धर्म और संस्कृति के संदेशों से लेकर शासकों की प्रशस्तियाँ तक अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए विविध माध्यमों और रूपों में संकलित की गईं। ऐसे संकलनों में सर्वप्रथम स्थान पर है मोरक्को में स्थित विश्व का प्राचीनतम पुस्तकालय। आज तक अपने मौलिक स्वरूप में बचा हुआ मोरक्को का अल कुराविय्यीं पुस्तकालय सन् 1359 में फेज़ नगर में स्थापित किया गया। आज भी उसमें पुस्तकों की संख्या बढ़ती जा रही है। इस पुस्तकालय में नौवीं शताब्दी में लिखा गया धर्मग्रंथ कुरआन और मोहम्मद साहेब की जीवनी जैसी पुस्तकें आज तक सुरक्षित हैं। कहते हैं कि अल कुराविय्यीं विश्वविद्यालय की स्थापना के काल में ही गणित में 'बीजगणित' (अलजेबरा) विषय की उत्पत्ति हुई और वहाँ से यह विषय यूरोप में आयातित ज्ञान के रूप में आया। फिर आश्चर्य क्या कि धार्मिक ग्रंथों के अतिरिक्त गणित एवं विज्ञान के तमाम विषयों पर भी प्राचीन पुस्तकों का भंडार इस संग्रहालय में आज तक सुरक्षित है। अन्य अति प्राचीन पुस्तकालयों का उल्लेख किया जाए तो अगले पायदान पर आता है मिस्र देश में एलेक्ज़ेंड्रिया का पुस्तकालय। टॉलेमी द्वितीय फिलाडेल्फस के शासन काल में प्रारंभ किये गए इस पुस्तकालय में संगृहीत ग्रंथों की संख्या कम-से-कम 40 हजार से लेकर कुछ लाख तक आँकी जाती है। जूलियस सीजर के समय के गृहयुद्ध में अर्थात् ईसा-पूर्व पहली सदी में यह पुस्तकालय युद्ध की विभीषिका में नष्ट हो गया। जो कुछ बचा-खुचा रह गया था, वह सब सन् 279 में नृशंस औरेलिया ने पामेरियन युद्ध में नष्ट कर दिया। एलेक्ज़ेंड्रिया के पुस्तकालय के

अरुणेंद्र नाथ वर्मा

- अरुणेंद्र नाथ वर्मा ने कमीशन मिलने के बाद वायुसेना में सेवा दी।
- उन्होंने कहानी, कविता, हास्य-व्यंग्य, संस्मरण से लेकर यात्रा-वृत्तांत तक अपनी लेखनी चलाई।
- 'जो घर फूँके अपना' शीर्षक से हास्य-व्यंग्य उपन्यास प्रकाशित।
- पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न विधाओं में लेखन निरंतर जारी। अंग्रेजी में भी एक उपन्यास प्रकाशित।
- वर्तमान में स्वतंत्र लेखन।

संपर्क : मो.– 9811631141

ईमेल– arungraphicsverma@gmail.com

बाद का सबसे महत्वपूर्ण अति प्राचीन ग्रंथागार ईसा-पूर्व 12वीं शताब्दी के कालखंड में आज के बोगजकोय शहर में स्थित था। इसमें मिट्टी के बने टेबलेट्स के ऊपर क्युनिफॉर्म लिपि में अंकित लगभग 30 हजार ग्रंथ इकट्ठा किये गए थे। इस संदर्भ में बताते चलें कि क्युनिफॉर्म चिह्नों के आधार पर भाषा को लिपिबद्ध करने वाली प्राचीनतम विधि थी, जो प्राचीन सुमेरिया में विकसित हुई थी। इराक के आधुनिक शहर मोसुल के निकट निनेवेह में ईसा-पूर्व 668 से 627 तक के बीच बने अशुर्बानिपाल के पुस्तकालय को व्यवस्थित ढंग से ज्ञान एकत्रित करने वाला पहला पुस्तकालय माना जाता है। 19वीं शताब्दी में इस पुस्तकालय की खोज होने तक इसके अधिकांश टेबलेट मिट्टी के बने होने के कारण नष्ट हो चुके थे। बेबीलोनियन संस्कृति के अवशेष के रूप में बचे हुए नूजी (1500 ईसा-पूर्व), ऊगारित (1200 ईसा-पूर्व) और टेल लीलन (1990 ईसा-पूर्व) के ग्रंथागार उस युग की संस्कृति के अध्ययन के सबसे महत्वपूर्ण माध्यम हैं। ईरान में भी तीसरी से लेकर छठी शताब्दी के बीच फारस के सस्सानीइड साम्राज्य काल के पुस्तकालय प्राचीन मध्य-पूर्व संस्कृति के सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकालय माने जाते हैं।

प्राचीन यूनानी साम्राज्य में भी बहुत सारे महत्वपूर्ण पुस्तकालय स्थापित किये गए थे। एलेक्ज़ेंड्रिया के विशालतम पुस्तकालय के अतिरिक्त इस साम्राज्य में ईसा-पूर्व दूसरी से तीसरी और चौथी शताब्दियों के बीच कई उल्लेखनीय पुस्तकालय स्थापित किये गए। इनमें सबसे महत्वपूर्ण थे—एड्फु के मंदिर से संबद्ध ग्रंथागार, आज के अंताक्या शहर में यूनानी सम्राट एंटीयोकस द्वितीय द्वारा स्थापित पुस्तकालय और आज के बैर्गामा शहर के निकट पेर्गामम का ग्रंथागार। प्राचीन यूनानी कालखंड का अकेला सार्वजनिक पुस्तकालय, जिसकी कुछ पुस्तकें पूरी तरह नष्ट होने से बच गईं, इटली के हर्क्युलेनियम क्षेत्र में है। सन् 1979 में विसूवियस ज्वालामुखी से उगले हुए लावा की राख के नीचे पूरी तरह दबकर और झुलसकर विलुप्त हो गए पोम्पेई शहर में इस सार्वजनिक पुस्तकालय की लगभग 1800 पुस्तकें जलकर कार्बन के रूप में बदल गए स्क्रोल के रूप में मिली थीं, जिनको वैज्ञानिक ढंग से मल्टीस्पेक्ट्रम इमेजिंग की तकनीक से दुबारा पढ़ने और समझने का प्रयास अब चल रहा है। एथेंस शहर में टाइटस फ्लेवियास पेंतोनियास के पुस्तकालय जैसे अनेक पुस्तकालय प्राचीन रोमन साम्राज्य और संस्कृति की गाथा सुनाते, लेकिन अब सभी काल के गर्त में समा चुके हैं। कुस्तुंतुनिया में पहले ईसाई सम्राट कोंस्टेंटाइन द्वारा स्थापित शाही पुस्तकालय में एक लाख से अधिक पेपाईरस, पार्चमेंट और वेल्लम पर अंकित ग्रंथ थे। (वेल्लम बछड़े या बकरी के कोमल चमड़े को बिना रंगे लिखने के लिए इस्तेमाल किये गए चर्मपत्र को कहते हैं)। कुस्तुंतुनिया का यह भव्य पुस्तकालय सन् 473 में लगी एक भयंकर आग में पूरी तरह नष्ट हो गया।

सर्वविदित है कि चीन की प्राचीन संस्कृति में भी मानवीय इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ दबे पड़े हैं। फिर पुस्तकालयों और ग्रंथागारों की स्थापना में वह कैसे पीछे रहता! हान साम्राज्य के कालखंड में 13 हजार से अधिक स्क्रोल पर धर्म, दर्शन, काव्य, औषधि और नक्षत्र विज्ञान की बहुमूल्य सामग्री सुरक्षित की गई थी। तांग साम्राज्य (छठी से 10वीं शताब्दी) में नागरिक सेवाओं में भरती होने के इच्छुक छात्रों को अध्ययन सामग्री मुहैया करने के लिए पुस्तकालय स्थापित किये गए थे। सहस्र बुद्ध मूर्तियों वाली मोगाओ ग्रोत्तोज़ आठवीं से लेकर 11वीं शताब्दी के बीच 15 हजार कागज पर लिखी पुस्तकों का आगार था। स्पष्ट है कि चीन की प्राचीन संस्कृति में भी पुस्तकालयों का महत्वपूर्ण स्थान था।

आइए, अब भारत की अति पुरातन संस्कृति में भी पुस्तकालयों के अस्तित्व का जायजा लें। विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में भारत की सिंधु घाटी सभ्यता थी, जहाँ से मुहरें और नंदी आदि पशुओं की मूर्तियाँ मिली हैं। इस नागरिक सभ्यता में सामूहिक स्नान के साधन तक तो थे, लेकिन पुस्तकालय जैसी संस्था होने का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता। सिंधु घाटी सभ्यता के बाद की अति महत्वपूर्ण संस्कृति वैदिक युग की है। इसका समय काल लगभग ईसा-पूर्व 1500 से 500 माना जाता है। वैदिक काल का संपूर्ण वृहद् साहित्य, जिसमें वेद संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आदि हैं, लिखित रूप में नहीं, अपितु श्रुति माध्यम द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रवाहित होता रहा। पुरातन साहित्य को लिपिबद्ध होकर पुस्तकाकार रूप लेने के लिए तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ी, जब तक भोजपत्र और ताड़पत्र पर लिखने का चलन नहीं हुआ। भोजपत्र और ताड़पत्र लंबे समय तक सुरक्षित रहते हैं। उन पर लिखे गए अध्याय पृष्ठों की तरह क्रमानुसार ढंग से पिरो लिये जाते हैं, जैसे हाथ से झलने वाला जापानी पंखा हो। बौद्ध धर्म के संदेश भी प्रारंभ में लंबे समय तक श्रुति रूप में ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे संप्रेषित होते रहे। माना जाता है कि पालि भाषा में पहली बार गौतम बुद्ध के आदेशों और प्रवचनों को ईसा-पूर्व 25 के समय में त्रिपिटक ग्रंथ का लिपिबद्ध स्वरूप दिया गया। विनय पिटक, सुत्त पिटक और अभिधम्म पिटक लिपिबद्ध ग्रंथों के रूप में संगृहीत होने के बाद विदेशों

तक प्रसारित हो सके। तिब्बत में महायान बौद्ध धर्म का प्रसार धर्मग्रंथों के संग्रहालयों के साथ-साथ बढ़ा। उस काल के महान अन्वेषक यात्री फाह्यान को बौद्ध धर्म के त्रिपिटक की जिज्ञासा श्रावस्ती के जेतवन बौद्ध विहार तक ले आई थी, लेकिन वहाँ पहुँचने पर उसे पता चला कि वह सात मंजिला मठ एक दुर्घटना में जलकर राख हो चुका था। अंततः, जिस ग्रंथागार में फाह्यान को अपने अभीष्ट ग्रंथ मिल सके, वह पाटलिपुत्र का महायान विहार था। फाह्यान आगे की यात्रा में जिन ग्रंथों को साथ लेकर श्रीलंका की तरफ बढ़े, वे उन्हें पाटलिपुत्र से ही मिल सके थे। इस तरह भारत में पुस्तकालयों की स्थापना बौद्ध धर्म के विकास के साथ संबद्ध मिलती है। वैदिक धर्म के प्रसार के लिए गांधार में स्थापित तक्षशिला विश्वविद्यालय प्राचीन भारत का सबसे महत्वपूर्ण विश्वविद्यालय था। सन् 450 में गुप्त साम्राज्य के सम्राट कुमारगुप्त के समय में पश्चिम एशिया से आने वाले हूण आक्रामकों ने इस समृद्ध पुस्तकालय को पूर्णतः नष्ट कर दिया। भारत का प्राचीन साम्राज्य मगध का विशाल बौद्ध मठ नालंदा में ईसा-पूर्व पाँचवीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी तक अध्ययन का विश्वप्रसिद्ध केंद्र रहा। एक साथ दस हजार छात्रों को रिहायशी सुविधा देने में समर्थ इस विश्वविद्यालय का पुस्तकालय भारत की सबसे महत्वपूर्ण धरोहरों में से एक होता, लेकिन सन् 1199 में अफगान आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने अपने नृशंस आक्रमण के दौरान इस विश्वविद्यालय के पुस्तकालय को जलाकर राख कर दिया। फारसी इतिहासकार सिराज-ए-मीनाज के अनुसार, इस पुस्तकालय में 90 लाख ग्रंथ थे। यह संख्या कुछ बढ़ा-चढ़ाकर बताई लग सकती है, लेकिन इस तथ्य का उल्लेख कई इतिहासकारों ने किया है कि सारी किताबों के जलने में छह महीने का समय लग गया और उनके अंगारों से अगले तीन महीनों तक धुआँ निकलता रहा।

भारत में पुस्तकालयों की स्थापना का आधुनिक युग प्रिंटिंग प्रेस के अन्वेषण के साथ आरंभ हुआ। पहला आधुनिक पुस्तकालय सन् 1784 में 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' ने स्थापित किया। भारत के सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक पुस्तकालय के रूप में समझे जाने वाले राष्ट्रीय पुस्तकालय का इतिहास मार्च सन् 1836 से शुरू होता है। इसे सन् 1844 में एक बड़े भवन में स्थानांतरित कर दिया गया। बाद में यह कलकत्ता नगरपालिका के प्रबंधन में आ गया। सरकार ने इसे सन् 1903 में पुनः अपने अधिकार में लेकर 'इंपीरियल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया' का नाम दिया और सर्वसाधारण के लिए खोल दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इसे राष्ट्रीय पुस्तकालय का नाम दिया गया। 1954 में बनाये गए सार्वजनिक पुस्तकालय प्रदाय अधिनियम के अंतर्गत भारत में प्रकाशित हर पुस्तक की एक प्रति इस पुस्तकालय को देने का नियम बना दिया गया। परिणामस्वरूप, राष्ट्रीय पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या अब सवा दो करोड़ से भी ऊपर है। अन्य बड़े पुस्तकालय हैं—तंजावुर का 'सरस्वती महल पुस्तकालय'; चेन्नई का 'अन्ना शताब्दी पुस्तकालय' (पाँच लाख से अधिक पुस्तकें और दृष्टिहीन दिव्यांगों के लिए ब्रेल लिपि में पढ़ने के लिए 150 पाठकों की सुविधा); पणजी, गोवा में 'कृष्णदास केंद्रीय पुस्तकालय' (एक लाख 80 हजार पुस्तकें); त्रिवेंद्रम का 'सार्वजनिक पुस्तकालय' (इसमें बाल पुस्तकों का विशेष संग्रह है), वडोदरा का 'श्रीमती हंसा मेहता पुस्तकालय', जिसमें अनेक पुराने ग्रंथ संगृहीत हैं, दिल्ली में चाँदनी चौक का 'सार्वजनिक दिल्ली पुस्तकालय', जिसमें हिंदी, उर्दू, पंजाबी, अंग्रेजी आदि भाषाओं की लगभग 19 लाख पुस्तकें हैं और बंगलुरु का 'शेषाद्री स्मृति पुस्तकालय'। इनके अतिरिक्त, रामपुर के 'रजा पुस्तकालय' का उल्लेख भी करना होगा, जिसमें इस्लामी धर्मग्रंथ, अरबी और फारसी के सुंदर हस्तलिखित ग्रंथ और ताड़पत्र पर लिखित पांडुलिपियाँ संगृहीत हैं। तंजावुर के सरस्वती महल पुस्तकालय में तमिल, संस्कृत एवं एकाधिक भारतीय भाषाओं की ताड़पत्र पर लिखी गई पांडुलिपियों का अनोखा संग्रह है।

भारत के इन सबसे बड़े, प्राचीन और महत्वपूर्ण पुस्तकालयों की तुलना विश्व के बड़े पुस्तकालयों से करने के लिए जिन पुस्तकालयों का नाम लेना होगा, वे हैं—संयुक्त राज्य अमेरिका की लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस (पौने दो करोड़ पुस्तकें), ब्रिटिश पुस्तकालय (लगभग दो करोड़ पुस्तकें), शंघाई पुस्तकालय (पाँच करोड़ 70 लाख पुस्तकें) और न्यूयॉर्क सार्वजनिक पुस्तकालय (साढ़े पाँच करोड़ पुस्तकें)। कनाडा का ओटावा पुस्तकालय, रूस का मास्को, जापान का टोक्यो और क्योटो, जर्मनी के लीपजिग और चीन के बीजिंग के राष्ट्रीय पुस्तकालयों का उल्लेख भी करना आवश्यक होगा। इन सबकी तुलना में भारत के राष्ट्रीय पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या कम नहीं। लेकिन रखरखाव, आधुनिक भवन एवं अन्य सुविधाएँ, पाठकों के लिए बैठकर पढ़ने की सुविधा आदि से तुलना करें तो हमारा राष्ट्रीय पुस्तकालय कुछ कमजोर ही मिलेगा। मुझे न्यूयॉर्क और सिंगापुर के सार्वजनिक पुस्तकालयों को देखने का अवसर मिला है; दोनों की भौतिक सुविधाएँ भारत के बड़े-से-बड़े और उल्लेखनीय पुस्तकालयों से बहुत ऊँचे स्तर की लगीं।

आज भारत भी डिजिटलीकरण के युग में पहुँच चुका है। साधारण रोजमर्रा की खरीदारी में आम आदमी यू.पी.आई. व्यवस्था के पेटीएम जैसे अनेक तरीकों से लेन-देन करने में जितनी तेजी से सिद्धहस्त हो गया है, उतनी ही तीव्रगति से डिजिटल पुस्तकें पढ़ने का कौशल भी आज का आम पाठक प्राप्त कर चुका है। स्कूल, कॉलेज और उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने के लिए ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था कोविड-19 काल से अपरिहार्य हो गई। अब बहुत छोटी कक्षाओं के छात्र तक इसमें कोई असुविधा नहीं महसूस करते हैं, लेकिन डिजिटल पुस्तकें पढ़ने के लिए सही और अच्छे उपकरण समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के सदस्यों और उनके बच्चों के लिए आज भी उपलब्ध नहीं हो पाए हैं। इस दिशा में सभी राज्यों की सरकारें क्रियाशील हैं, अतः डिजिटल पठन तेजी से बढ़ने की दिशा में अग्रसर है। बड़े-बड़े पुस्तकालयों के शीत ताप नियंत्रित साफ-सुथरे कक्ष में बैठकर कई सारी पुस्तकें पढ़कर नोट्स बनाना कल तक सभी छात्रों को बहुत सुविधाजनक लगता था, लेकिन आज शहरों में बढ़ती दूरियाँ, सड़कों पर लंबे-लंबे ट्रैफिक जाम और आधुनिक जीवन-शैली की लगातार बढ़ती व्यस्तताएँ सभी तरह के पाठकों को डिजिटल पठन की तरफ आकृष्ट कर रही हैं। आज अच्छी-से-अच्छी साहित्यिक पत्रिकाएँ पाठकों की घटती संख्या के कारण बंद होती जा रही हैं और समाचार पत्रों के मुद्रित संस्करण की बिक्री लगातार घटती जा रही है। दूसरी तरफ, समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के डिजिटल संस्करण दिन-प्रतिदिन लोकप्रियता की सीढ़ियाँ चढ़ते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में पुस्तकालय तक जाने का कष्ट करना किसे अच्छा लगेगा! पुस्तकालय जहाँ एक-दो या सीमित संख्या में पुस्तकें घर ले जाने देते हैं और वह भी समय-सीमा के साथ, वहीं डिजिटल पुस्तकें पढ़ने वालों के लिए संख्या और समय की कोई सीमा नहीं है। एक तरफ नए पुस्तकालयों के लिए भवन जुटाना और पुराने पुस्तकालयों में पुस्तकों की संख्या में वृद्धि के साथ भवन का विस्तार करना रियल स्टेट की आकाशफोड़ कीमतों के कारण दुःसाध्य होता जा रहा है तो दूसरी तरफ डिजिटल पद्धति में पूरा पुस्तकालय छोटी-सी पेन ड्राइव में समेट लेने की क्षमता बढ़ती जा रही है। कहते हैं कि एक जमाने में हथकरघे पर बुनी ढाका की मलमल इतनी महीन होती थी कि उसका पूरा थान छोटी-सी अँगूठी में से निकल सकता था। आने वाले काल में कृत्रिम बुद्धि (ए.आई.) के सहयोग से नैनो टेक्नोलॉजी का जादू पूरे ब्रह्मांड का ज्ञान कितने छोटे आकार के उपकरण में समेट पाएगा, इसकी कल्पना करना भी कठिन है। हाँ, यह अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है कि राष्ट्रीय पुस्तकालय का सारा भंडार हर पाठक अपनी जेब में समेटकर घर-बाहर सब जगह साथ ले जा सकेगा।

ऐसे भविष्य की दहलीज पर खड़े होकर हम पुस्तकालयों के पुराने स्वरूप को भूलना चाहें तब भी कुछ पुस्तकालय बीते हुए कल की स्मृति को सँजोकर रखने के लिए ऐतिहासिक संग्रहालयों की तरह वैसे ही जीवित रखे जाएँगे जैसे आज तंजावुर के सरस्वती महल में ताड़पत्र पर लिखी गई पांडुलिपियाँ और रजा पुस्तकालय में अरबी-फारसी की कैलिग्राफी (सुंदर हस्तलिपि) वाली पांडुलिपियाँ संगृहीत हैं। दलाई लामा और उनके अनुयायी तिब्बत से पलायन करने के समय जैसे महायान बौद्ध ग्रंथों की पांडुलिपियाँ अपने साथ ले आए उसी तरह हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी धरती छोड़कर चंद्रमा या मंगल ग्रह के उपनिवेशों में जाकर रहने के समय अपने साथ बीते हुए युग की याद दिलाने के लिए एकाध कागज पर छपी पुस्तकें ले जाया करेंगी, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि आने वाले कल की कल्पना करके आज के पुस्तकालयों की उपेक्षा शुरू हो जानी चाहिए। कम-से-कम निकट भविष्य में पुस्तकालय महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में ज्ञान के संचार में उतना ही महत्वपूर्ण किरदार अदा करते रहेंगे, जितना इन शिक्षा निकेतनों में छात्रों को कक्षा में पढ़ाने और सेमिनार में विचार-विमर्श पद्धति से ज्ञान देने वाले व्याख्याताओं का होगा। ऑनलाइन कक्षाएँ बहुसंख्या में सामान्य शिक्षा दे सकती हैं, लेकिन गहन ज्ञान के लिए आमने-सामने वाला गुरु-शिष्य संवाद जब तक आवश्यक माना जाता रहेगा, तब तक पुस्तकालय में बैठकर किताबों से नोट्स बनाने का और सहपाठियों से चर्चा करने का तरीका भी चलता रहेगा। फिर भी अब समय आ गया है कि वृहदाकार पुस्तकालयों की जगह हर छोटे कसबे और नगरों के मोहल्लों में छोटे-छोटे पुस्तकालय बनाये जाएँ। मोबाइल में सिर घुसाकर हर तरह का ज्ञान और मनोरंजन प्राप्त कर लेने वाली नई पीढ़ी आज बहुत तेजी से अंतर्मुखी होती जा रही है। उसे समवयस्कों के साथ अपनी रुचि की पुस्तकें और पत्रिकाओं को पढ़ने का अवसर देकर अधिक सामाजिक और बाह्यमुखी बनाने का महत्वपूर्ण किरदार छोटे-छोटे मोहल्ला पुस्तकालय और ग्राम सभाओं के लघु पुस्तकालय अदा कर पाएँगे। विटामिन और अन्य आवश्यक तत्वों की गोली खाकर शरीर की आवश्यकता शायद निकट भविष्य में पूरी की जाने लगे, लेकिन ऐसी पिल्स क्या चाट के चटपटेपन और मिष्ठान्न के मधुर स्वाद को कभी पूरी तरह विस्थापित कर पाएँगी? अभी तो यही लगता है कि पुस्तकालय में जाकर किताबें पढ़ने का सुख डिजिटल पाठन के युग में भी बना रहेगा। केवल पुस्तकालयों का वर्तमान स्वरूप थोड़ा बदल जाएगा। शोध कार्य के लिए दुर्लभ पुस्तकें उपलब्ध कराने वाले पुस्तकालय डिजिटल पुस्तकों के बावजूद बने रहेंगे। इसका स्पष्ट प्रमाण विश्व के सबसे आधुनिक और वृहद् पुस्तकालयों से आज भी किताबें ले जाने वालों की संख्या से मिलता है। अतः अभी पुस्तकालयों की समाधि पर लिखे जाने वाले संदेश की रचना करने का समय नहीं आया है। आइए, अंत में इसी सदाशा के साथ मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास में उल्लेखनीय योगदान देने वाली संस्था, पुस्तकालय को नमन करें।

पठन प्रवृत्ति के प्रोत्साहन में पुस्तकालयों की भूमिका

पुस्तकालय पुस्तकों का संसार है, जहाँ हर भाषा में पुस्तकों का संग्रह किया जाता है और व्यवस्थित रखरखाव के द्वारा पाठ्यकर्ताओं को ज्ञान ग्रहण करने और कार्य अनुसार पुस्तकें प्रदान की जाती हैं। पुस्तकालय, पठन क्रिया की प्रवृत्ति को बढ़ाने में बहुत सहायक है। पुस्तकालय किसी भी देश के कार्य क्षेत्र, आधुनिकीकरण, शिक्षा, विज्ञान, सरकारी क्षेत्र, सार्वजनिक क्षेत्र, कृषि, औद्योगीकरण, सुरक्षा, राजनीतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, नवीनीकरण, उपचार, खेल-कूद, साहित्यिक, कानूनी, प्रजातंत्र व अन्य सेवाओं के ज्ञान को इतिहास रूप में सँजोकर रखता है। पिछले 20 वर्षों में पुस्तकालयों की भूमिका बड़ी तेजी से बढ़ी है। पाठकों की लगातार माँग पर पुस्तकालयों में पाठ्य सामग्रियों में तेजी आई है। विद्यार्थी, अध्यापक, प्रोफेसर, साहित्यकार, वैज्ञानिक, वकील, डॉक्टर, नवयुवक, बुजुर्ग, महिलाएँ, बच्चे आदि, पाठक किसी भी वर्ग का हो सकता है।

डॉ. राजन

शिक्षा : इग्नू से लाइब्रेरी एवं सूचना विज्ञान में स्नातक व परास्नातक, लाइब्रेरी एवं सूचना विज्ञान में पी-एच.डी.।

प्रकाशन : विभिन्न राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में कई शोध आलेख प्रकाशित।

संप्रति : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत में पुस्तकालय-सह-लेखन अधिकारी के रूप में कार्यरत।

संपर्क : मोबाइल– 9868251498
ईमेल– rajan.ranjan71@gmail.com

भारत में 12 अगस्त 'राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस' के रूप में मनाया जाता है। डॉ. एस.आर. रंगनाथन, जिन्हें भारत में 'पुस्तकालय विज्ञान के जनक' के रूप में जाना जाता है, उनके जन्मदिन के उपलक्ष्य में यह दिवस देश के हर पुस्तकालय में मनाया जाता है।

इस अवसर पर पूरे एक सप्ताह तक पुस्तकालयों में कई कार्यक्रम किए जाते हैं, जिसमें लेखकों और पाठकों को रू-ब-रू कराया जाता है। सेमिनार, कार्यशालाएँ और किताबों की प्रदर्शनियाँ भी आयोजित की जाती हैं।

पुस्तकों के प्रति रुचि जागृत करने तथा पुस्तक प्रेमियों का पुस्तकों के प्रति अनुराग बनाए रखने के लिए समय-समय पर पुस्तकालयों में साहित्य और अन्य विषयों की पुस्तकों पर आधारित कार्यक्रम होते रहने चाहिए। ये कार्यक्रम कुछ इस प्रकार हो सकते हैं–

(1) पुस्तक प्रश्नोत्तरी जैसे कार्यक्रम पुस्तकालयों में रखे जा सकते हैं, जिससे पाठकों को पुस्तकों के ज्ञान को एक-दूसरे से साझा करने और पुस्तकालयों की अच्छी पुस्तकों की जानकारी प्राप्त होती है।

(2) पुस्तक लोकार्पण द्वारा पाठकों को नई पुस्तकों की जानकारी मिले, जिससे वे यह समझने में सक्षम हो पाते हैं कि अमुक पुस्तक किस विषय और किस भाषा की है और उसके लिए कितनी उपयोगी है।

(3) लेखकों को पाठकों से मिलवाया जा सकता है। कार्यक्रम एवं वर्कशॉप द्वारा पाठक, लेखकों के समक्ष विषयों पर चर्चा कर सकते हैं। ऐसे में लेखकों को पाठकों की रुचि के बारे में एवं उनके अमूल्य सुझाव को जानने का मौका मिलता है और नई रचनाओं एवं सभी पाठकों की मनपसंद विषयों के संदर्भ प्राप्त होते हैं।

(4) लेखक द्वारा लिखी गई पुस्तकों पर पाठकों की राय ली जा सकती है। कई लेखक पुस्तकालय में कार्यक्रम करते हैं, जिससे उनको पता चलता है कि उनके विषय में क्या कमी है और क्या अच्छाई है और उन्हें नए संस्करण में क्या लिखना चाहिए। सभी लेखकों द्वारा पाठकों की राय ली जा सकती है कि किताब में लिखे गए अध्यायों से उनका ज्ञानवर्धन हो रहा है या नहीं।

(5) कहानी और व्याख्यान सत्र पुस्तकालयों द्वारा करवाए जा सकते हैं, जिसमें कहानीकार अपनी लिखी गई कहानी को अपनी पुस्तक के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाते हैं और संक्षिप्त जानकारी द्वारा पाठकों को कहानी का प्रारूप बताते हैं। इसके साथ-साथ दूसरे लेखकों द्वारा कहानी सत्र में एक-दूसरे की कहानियों की चर्चा करके पाठकों को हर लेखकों की कहानियों की जानकारी और उनकी पुस्तकों से अवगत करवाया जाता है।

(6) साहित्यकारों और कवियों को लेकर काव्य गोष्ठी की जा सकती है, जिसमें कवि अपनी पुस्तकों की कविताओं और अपने सभी विषयों की जानकारी श्रोताओं से साझा करते हैं।

(7) प्रायः नई किताबों का संग्रह पुस्तकालयों में शीघ्र नहीं हो पाता है, अतः पुस्तकालयों द्वारा पुस्तकों की प्रदर्शनियाँ लगाई जाती हैं, ताकि ज्यादा-से-ज्यादा प्रकाशक अपनी पुस्तकों को पाठकों तक पहुँचा सकें और पुस्तकों के माध्यम से लेखकों से चर्चा कर सकें और अपनी मनपसंद किताबों का चयन कर सकें।

पुस्तकालय एकमात्र ऐसा स्रोत है, जो कि पाठकों और पुस्तकों के बीच समन्वय बनाकर रखता है, ताकि पाठक और पुस्तक के बीच पठन की प्रवृत्ति बनी रहे और ज्ञान का भंडार मिले और समय अनुसार पाठकों को उनकी मनपसंद पुस्तकें मिलती रहें।

पुस्तकालय विज्ञान के पाँच सूत्र

डॉ. एस.आर. रंगनाथन द्वारा सर्वप्रथम इन सूत्रों का प्रतिपादन सन् 1928 में मीनाक्षी कॉलेज, अन्नामलाई नगर में किया गया और सन् 1931 में इनका प्रकाशन 'Laws of Library Science' नाम से पुस्तक रूप में किया गया। इन पाँच सूत्रों में पुस्तकालय के संपूर्ण उद्देश्य को समाहित किया गया है, इनकी प्रत्येक व्यक्ति को जानकारी होनी चाहिए।

ये पाँच सूत्र या नियम इस प्रकार हैं–

- पुस्तकें उपयोगार्थ हैं (Books are for use);
- प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक (Every Reader his/her Book)
- प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक (Every book it's Reader);
- पाठक का समय बचाओ (Save the time of the Reader) एवं
- ग्रंथालय वर्धनशील संस्था है (Library is a Growing Organism)

मोहन सिंह चढ़ार

शिक्षा : बी.कॉम, बी.लिब., एम.लिब., यूजीसी नेट आदि।

संप्रति : ग्रंथपाल के रूप में शासकीय महाविद्यालय मानपुर, उमरिया (म.प्र.) में कार्यरत।

उन्हें सी.एस.आई.आर. निस्केयर, नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली में कार्य करने का भी अनुभव है।

संपर्क : मोबाइल– 7987552011

ईमेल– mohanchadar@gmail.com

डॉ. एस.आर. रंगनाथन द्वारा दिये गए इन पाँच सूत्रों को ग्रंथालय कार्य के प्रत्येक क्षेत्र में आधारभूत प्रमुख तथा आदर्श सिद्धांत माना जाता है। ये पंच सूत्र आज भी उतने प्रासंगिक हैं, जितना सन् 1931 में थे।

पहला सूत्र/नियम : ग्रंथालय विज्ञान का पहला सूत्र यह जोर देता है कि पुस्तकों का अधिक-से-अधिक उपयोग हो। डॉ. एस.आर. रंगनाथन ने अपने पहले सूत्र में साफ-साफ कहा है कि–'ग्रंथ उपयोगार्थ है'। मतलब कि पुस्तकें उपयोग के लिए होती हैं, न कि इसे लॉकर या अलमारी में रखकर सिर्फ संरक्षित किया जाए। साधारणतः उस समय, जब इस सूत्र की रचना की गई थी, पुस्तकों के उपयोग से ज्यादा उसके संरक्षण पर जोर दिया जाता था, परंतु यह सूत्र आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना उस समय था।

द्वितीय सूत्र/नियम : ग्रंथालय विज्ञान का द्वितीय सूत्र यह जोर देता है कि पाठक को उसकी पुस्तकें मिलें, यानी कि पुस्तकें सभी के लिए हैं, न कि किसी खास वर्ग विशेष के लिए। पुराने समय में सिर्फ अमीर लोग ही पुस्तकें पढ़ पाते थे, परंतु रंगनाथन ने इस सूत्र के माध्यम से सबको पुस्तकें पढ़ने के अधिकार पर जोर दिया, जिससे कोई भी व्यक्ति पुस्तकें पढ़ने से वंचित न हो सके।

तृतीय सूत्र/नियम : ग्रंथालय विज्ञान का तृतीय सूत्र पहले सूत्र की भाँति ग्रंथों से संबंधित है और द्वितीय सूत्र का पूरक है। इस सूत्र के अनुसार प्रत्येक पुस्तक को उसके अनुसार पाठक मिलने चाहिए।

चतुर्थ सूत्र/नियम : ग्रंथालय विज्ञान का चतुर्थ सूत्र भी द्वितीय सूत्र की भाँति पाठकों की ओर ही आगम करता है। पुस्तकालय को समय की बचत करनी चाहिए। इसके साथ ही पाठकों के समय की बचत के साथ कर्मचारियों के समय की भी बचत होनी चाहिए।

पंचम सूत्र/नियम : पुस्तकालय विज्ञान का पंचम सूत्र मुख्यतः ग्रंथालय योजना तथा संगठन से संबंधित है। वैसे, यह सभी जानते हैं कि एक विकासशील संस्था ही जीवित रह सकती है, अन्यथा उनका अंत हो जाता है। हालाँकि इस बात पर ज्यादा ध्यान देना आवश्यक है कि रंगनाथन साहब ने 'Organization' के स्थान पर 'Organism' (जैविक वस्तु) शब्द का प्रयोग किया है, अर्थात् यह सिर्फ वृद्धि ही नहीं करता, बल्कि पुरानी सामग्रियों का त्याग भी करता है।

रंगनाथन के शब्दों में, "एक विकासशील संगठन नई सामग्री ग्रहण करता है, पुरानी सामग्री का त्याग करता है, अपने आकार में परिवर्तन करता है और नई शक्ल तथा स्वरूप ग्रहण करता है। कोई भी जीव जब तक जीवित रहता है, तब तक न सिर्फ नई कोशिकाओं को पैदा करता है, बल्कि मृत कोशिकाओं का त्याग भी करता है।" पुस्तकालय के तीन प्रमुख तत्व होते हैं–पुस्तक, पाठक और कर्मचारी। इसे पुस्तकालय सेवा की 'त्रिमूर्ति' कहा जाता है, इनमें से किसी एक के बिना पुस्तकालय सेवा की कल्पना भी मुश्किल है और समय के साथ ही इन तीनों में वृद्धि भी स्वाभाविक है।

संदर्भ : Ranganathan, S.R. (2006). The Five Laws of Library Science. India: Ess Ess Publications.

अपने बाहर-भीतर के खालीपन से मुक्ति का अहसास दिलाता पुस्तकालय

पहली बार उत्तरकाशी जिले के रवांई क्षेत्र के महरगाँव (पुरोला) के राजकीय प्राथमिक विद्यालय में आरंभिक पढ़ाई के दिनों में जो भी पाठ्य-पुस्तकें मिलीं, उसमें सम्मिलित सभी कविताएँ कंठस्थ कर ली थीं। वहाँ से पाँचवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आगे की पढ़ाई यानी छठी में दाखिला लेने के लिए मुझे बहुत दूर अपने पैतृक गाँव जाना पड़ा था। महरगाँव से विकट चढ़ाई-उतराई का जंगली रास्ता। रास्ते में केदार गंगा यानी 'बडियार गढ़' को भी पार करना पड़ा था। दूरी 25 कि.मी. से कम नहीं थी। हमारे उस गाँव का नाम था—सरनौल। रवांई की ठकराल पट्टी का सुदूरवर्ती बड़ा-सा गाँव। गाँव में उस समय छह बीसी यानी एक सौ बीस परिवार रहते थे। राजपूत, ब्राह्मण, बढ़ई, बाजगी। राजपूतों में तीन जातियाँ—राणा, चौहान, रावत। ब्राह्मण सेमवाल। बढ़ई मकान बनाते, लकड़ी-पत्थर का काम करते। बाजगी यानी जुमरिया ढोल बजाते, दाढ़ी बाल बनाते, गाँव के लोगों के कपड़े भी वही सिलते। गाँव के मध्य में छत्र शैली में बना माँ रेणुका का प्राचीन मंदिर था। उसके सामने बड़ा-सा प्रांगण। रेणुका ही यहाँ के वासियों की इष्ट देवी थीं। गाँव में प्रमुखता से इन्हीं की पूजा-अर्चना होती। इन्हीं के नाम पर वर्ष में दो बार मेले लगाए जाते।

मंदिर के प्रांगण में सरदी-गरमी, हर मौसम में गाँव के लोगों का जमावड़ा लगा रहता। बच्चे गुल्ली-डंडा, खो-खो, मुर्गा झपट तो बड़े कौड़ी, बाघ-बकरी जैसे खेल खेलते। सर्दियों में मंदिर के एक छोर पर गाँव के लोग आग जलाते, सभी आग तापते। हँसी-मजाक करते। आग जलाने के लिए हर घर से 'उजेड़ू' (बारीक लकड़ी का गट्ठर) लाना जरूरी होता। अपने साहस को दिखाने के लिए लड़के छलाँग लगाकर आग की लपटों को पार करते। रात को इसी प्रांगण में गाँव के स्त्री-पुरुष एकत्रित होकर गीत गाते। आपस में हँसी-ठिठोली करते। जुमरिया मंदिर में 'नौंती' (नौबत) बजाकर देवी के विश्राम का संकेत देता, तब कहीं नाचने-गाने का सिलसिला थमता और सभी अपने-अपने घर की राह पकड़ते। यहीं गाँव के कुछ घरों के आँगन में राजकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय चलता था। इसी में मुझे दाखिला मिला। उन दिनों छठी कक्षा में ही पहली बार अंग्रेजी

महावीर रवांल्टा

जन्म : 10 मई, 1966; ग्राम सरनौल, उत्तरकाशी।

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी साहित्य), डी. फार्मा.।

सृजन : साहित्य की विभिन्न विधाओं में अब तक 38 पुस्तकें प्रकाशित।

सम्मान : 'उतराखण्ड साहित्य गौरव सम्मान-2022' सहित अनेक सम्मान।

संपर्क : मोबाइल— 8894215441

ई-मेल— ranwaltamahabeer@gmail.com

और संस्कृत से सामना होता था। यहीं से अंग्रेजी के ए, बी, सी, डी रटते हुए आगे बढ़ा था। आगे पढ़ते हुए हिंदी और अंग्रेजी पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाने वाली अधिकांश कविताएँ मैंने कंठस्थ कर ली थीं। जहाँ अवसर मिलता, सुना देता था। इस विद्यालय से सातवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आगे की पढ़ाई के लिए मुझे जनपद मुख्यालय, उत्तरकाशी जाना पड़ा था। वहाँ पिता जी सरकारी सेवा में थे।

“तांबाखानी से आगे बढ़कर उत्तरकाशी में प्रवेश करते ही रामवीर का पान का एक खोखा था, जिसमें पान के साथ ही बीड़ी, सिगरेट, माचिस, गुटके के साथ ही पुस्तकें और पत्रिकाएँ मिल जाती थीं। उनसे पुस्तकें और पत्रिकाएँ खरीदते हुए परिचय हुआ तो उधारी का सिलसिला भी चल पड़ा। यहाँ से मैंने देश-विदेश के प्रसिद्ध साहित्यकारों की अनेक कृतियाँ खरीदीं। ‘साप्ताहिक हिंदुस्तान’ के साथ ही बच्चों की पत्रिका ‘पराग’ ने मुझे बहुत प्रभावित किया। उसे पढ़ते हुए लगने लगा था कि मुझे भी लिखना चाहिए और मैं कविताओं के साथ बाल कहानियाँ भी लिखने लगा।”

उत्तरकाशी जाने पर आठवीं में मुश्किल से राजकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय, जोशियाड़ा में दाखिला मिल पाया था। इसी विद्यालय में जाने-माने कवि लीलाधर जगूड़ी जी ने मुझे संस्कृत और गढ़वाली कवि जग्गू नौडियाल ने कृषि विज्ञान पढ़ाई थी। वहाँ पढ़ते

हुए मुझे पता नहीं था कि लीलाधर जगूड़ी हिंदी के जाने-माने कवि भी हैं, जबकि वे तब हिंदी कविता में स्थापित हो चुके थे। हाँ, विद्यालय से बाहर किसी सहपाठी ने उत्तरकाशी शहर के धवन बुक डिपो में शीशे के ‘शो केस’ में रखे गढ़वाली कविता संग्रह ‘समलौण’ की ओर इशारा करते हुए मुझे बताया था कि यह हमारे नौडियाल गुरु जी की किताब है। उसे देखकर मैं बहुत ही रोमांचित हुआ था। गुरु जी की किताब होना मेरे लिए किसी सपने से कम नहीं थी। जीवन में मैंने आज तक किसी की किताब को इस तरह नहीं देखा था। फिर किसी दिन उस दुकान पर जाकर मैंने उस किताब की कीमत पूछी थी, लेकिन वह मेरे सामर्थ्य से बाहर की बात थी। विक्रेता ने उसे मुझे एक तरह से छूने भी नहीं दिया था। इसी तरह मुख्य बाजार की एक न्यूज एजेंसी से लीलाधर जगूड़ी जी के कविता संग्रह ‘घबराए हुए शब्द’ को पहली बार मैं नहीं खरीद सका था।

नौवीं कक्षा में राजकीय कीर्ति इंटर कॉलेज में विज्ञान वर्ग में दाखिला लेने के बाद से जनवरी में लगने वाले माघ मेले में देर रात्रि तक चलने वाले कवि सम्मेलन को सुनने का अवसर मिला, तो कविताओं में मुझे रुचि होने लगी। उसी दौरान कॉलेज की पत्रिका ‘सीमा’ के लिए कुछ सामग्री लिखने के लिए हमें कहा गया, तो मैंने सारी रात जागकर एक छोटी-सी बाल कविता लिखी थी—‘सफलता

का शिखर’। पत्रिका में वह नहीं छपी थी, बल्कि उसकी जगह एक बोधकथा दी गई थी। जानकर बहुत दुख हुआ था। उसी दुखी मन के साथ कविताएँ लिखनी शुरू कर दीं। उसी दौरान अपने पड़ोस में आने वाली ‘मुक्ता’ पत्रिका को देखकर पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने की ऐसी धुन सवार हुई कि मैं नकद और उधार लेकर पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने लगा। तांबाखानी से आगे बढ़कर उत्तरकाशी में प्रवेश करते ही रामवीर का पान का एक खोखा था, जिसमें पान के साथ ही बीड़ी, सिगरेट, माचिस, गुटके के साथ ही पुस्तकें और पत्रिकाएँ मिल जाती थीं। उनसे पुस्तकें और पत्रिकाएँ खरीदते हुए परिचय हुआ तो उधारी का सिलसिला भी चल पड़ा। यहाँ से मैंने देश-विदेश के प्रसिद्ध साहित्यकारों की अनेक कृतियाँ खरीदीं। ‘साप्ताहिक हिंदुस्तान’ के साथ ही, बच्चों की पत्रिका ‘पराग’ ने मुझे बहुत प्रभावित किया। उसे पढ़ते हुए लगने लगा था कि मुझे भी लिखना चाहिए और मैं कविताओं के साथ बाल कहानियाँ भी लिखने लगा। बाल कहानियाँ ‘पराग’ में प्रकाशन हेतु भेजीं। उन्हें स्थान नहीं मिला, लेकिन मेरा लिखना-पढ़ना फिर भी चलता रहा। हाँ, माघ मेले के कवि सम्मेलन में मुझे कविता पाठ के लिए जाने-माने लोक कवि घनश्याम रतूड़ी

'सैलानी' जी के हाथों काव्यपाठ का आमंत्रण ही नहीं मिला, अपितु पहले वर्ष 20 और दूसरे वर्ष 50 रुपये की सम्मान राशि भी मिली थी। साहित्य के नाम पर जीवन में पहली बार कुछ पाने पर मैं बेहद खुश व रोमांचित था।

पढ़ने की सनक सवार हुई तो उत्तरकाशी के रामलीला मैदान से सटे गांधी वाचनालय में भी नियमित रूप से जाने लगा। वहाँ की व्यवस्था दुबली-पतली काया और गोरे रंग वाले सत्य प्रसाद पंत जी देखते थे। भवन के एक कमरे में बैठकर वे पुस्तकें बेचते थे। यही उनका कार्यालय भी था, तो दूसरे कमरे में पुस्तकों से भरी अलमारियाँ रखी थीं। बीच की जगह में मेज और इधर-उधर बैठने के लिए

कुर्सियाँ लगी हुई थीं। वह सबसे सुगम स्थान था, तो बड़ी संख्या में लोगों का आना-जाना बना रहता। आते-जाते हुए वाचनालय में अपनी प्रविष्टि अनिवार्य होती, पंत जी इसका पूरा ध्यान रखते थे। बड़ी संख्या में पुस्तकों के साथ ही यहाँ अनेक दैनिक, साप्ताहिक पत्र व पत्रिकाएँ उपलब्ध रहती थीं। यहीं पर मुझे 'हिमालय और हम', 'तरुण हिंद', 'गढ़ गौरव', 'हिमाचल टाइम्स', 'पर्वतीय टाइम्स', 'उत्तरांचल', 'हिलांस' जैसे पत्र-पत्रिकाओं से पहली बार जुड़ने का अवसर मिला था। टिहरी गढ़वाल से पूर्व विधायक गोविंद प्रसाद गैरोला के संपादन में निकलने वाले साप्ताहिक 'हिमालय और हम' का वह अंक भी मुझे यहीं से मिला था, जिसमें पहली बार संपादक को लिखा मेरा पत्र छपा था। आज स्वीकारने में मुझे कोई संकोच नहीं है कि इसे पढ़ने के बाद मैंने चुपचाप अपनी जेब में रख लिया था। पढ़ने के नाम पर जीवन में मैंने पहली बार कोई चोरी की थी। घर जाकर उसे कई बार स्वयं पढ़ा, फिर जो मिला, उसे दिखाया। जीवन में पहली बार कहीं अपना नाम छपा हुआ देखकर मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था।

इसके बाद पढ़ने और लिखने का सिलसिला चल पड़ा। पहली कविता देहरादून से सोमवारी लाल उनियाल 'प्रदीप' के संपादन में निकलने वाले 'उत्तरांचल' साप्ताहिक के 'संस्कृति, कला, साहित्य' स्तंभ में 'बेरोजगार' शीर्षक से छपी। फिर तो छपने का सिलसिला भी आगे बढ़ने लगा। 'तरुण हिंद', 'गढ़ गौरव', 'गढ़ रैबार', 'उत्तरीय आवाज', 'हिमाचल टाइम्स', 'पर्वतीय टाइम्स' में रचनाएँ आने लगीं। पहले 'हिमालय और हम' और फिर सी.एम. लखेड़ा जी के संपादन में देहरादून से निकलने वाले 'जनलहर' ने मुझे अपना संवाददाता बनाया। 'जनलहर' प्रत्येक माह के अंतिम सप्ताह का अंक कविताओं पर केंद्रित रखता था, जिसमें अनेक कवियों की कविताओं को प्रमुखता से स्थान दिया जाता था।

उत्तरकाशी से गाँव की ओर जाना होता, तो बच्चों से मिलने की इच्छावश राजकीय प्राथमिक विद्यालय की ओर भी चला जाता था। वहाँ उन दिनों, उसी गाँव के केशवानंद भट्ट जी अध्यापक के रूप में तैनात थे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उनकी गहरी रुचि थी, इसलिए जब भी विद्यालय में कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम होता, मुझे भी अवश्य बुलाने की कोशिश करते थे, क्योंकि मुझे भी नाटकों में गहरी दिलचस्पी थी। एक दिन, बात-ही-बात में उन्होंने जिक्र किया कि विद्यालय में कई पुरानी पुस्तकें पड़ी हैं, जिन्हें दीमक अपना शिकार बना रही हैं। मुझे उन्हें देखने की उत्सुकता थी। देखा तो उनमें मनोहर लाल उनियाल 'श्रीमन' के कविता संग्रह 'मुट्ठीभर धूल', 'मंदाकिनी' और 'विभा' भी शामिल थे। इनमें 'मुट्ठी भर धूल' के कुछ पन्नों को दीमक अपना शिकार बना चुकी थी। इन कविता-संग्रहों को पाकर मुझे लगा था कि जैसे बहुत बड़ा खजाना हाथ लगा है। माघ मेले के

कवि सम्मेलन में बुजुर्ग कवि श्रीमन जी की प्रसिद्ध कविता 'हम पथिक हैं आग वाले' को सुनने का सौभाग्य भी मुझे मिला और उसके कुछ दिनों बाद वे काल का ग्रास हो गए थे।

लिखने-पढ़ने का सिलसिला आगे बढ़ा, तो पुस्तकें भी जुटने लगीं। अपने लिए घर से महीनेभर के लिए आने वाले खर्च का एक बड़ा हिस्सा पुस्तकें व पत्रिकाएँ खरीदने में ही खर्च हो जाता था। लिखने-पढ़ने में मेरी रुचि देखकर डॉ. जग्गू नौडियाल जी ने अपना

गढ़वाली कविता-संग्रह 'समलौण' सस्नेह भेंट किया था, जिसे मैं कभी खरीद नहीं सकता था।

"डाक से पुस्तकें मँगाने, उन्हें पढ़ने और पुस्तकालय में तब्दील हो चुके कमरे में उन्हें सहेजकर रखने का मेरा प्रयास आज भी जारी है। इनके बीच में होकर मुझे अपने बाहर-भीतर के खालीपन से एक तरह मुक्ति का-सा अहसास होता है। मुझमें कुछ रचने के लिए ऊर्जा का संचार भी जैसे यहीं से मिलने लगता है। मेरा मानना है कि अच्छा पाठक हुए बिना हम अच्छा लेखक नहीं हो सकते, बल्कि यूँ कहूँ कि लेखक ही नहीं हो सकते। लेखन की पहली सीढ़ी पुस्तकों से जुड़ाव है और इस जुड़ाव के लिए पुस्तकालय ही हमारे लिए किसी मजबूत सेतु का काम करते हैं।"

मेरी पहली नियुक्ति स्पेशल पुलिस फोर्स में हुई तो उसके मुख्यालय मुरादाबाद आते-जाते हुए रेलवे स्टेशन के सामने सड़क पर लगी दुकानों से मैंने कई कालजयी कृतियाँ बहुत कम दाम पर खरीदीं। अपने सबसे करीबी कस्बे पुरोला में उस समय 'अमर उजाला' के पत्रकार राजेंद्र असवाल जी 'किसान न्यूज एजेंसी' के नाम से पत्र-पत्रिकाओं की दुकान चलाते थे। वहाँ से भी अनेक पुस्तकें प्राप्त करने के बाद मेरा ज्ञान, अनुभव और पुस्तकालय, तीनों समृद्ध हुए। स्पेशल पुलिस फोर्स से स्थानांतरित होकर बुलंदशहर जनपद के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र धरपा जाना हुआ, तो वहाँ रहते हुए मेरे लेखन ने एक तरह से जोर पकड़ लिया था, तो देशभर से अनेक पत्र-पत्रिकाएँ मुझे डाक से मिलने लगी थीं। 'अमर उजाला' के साप्ताहिक रविवारीय में पुस्तक समीक्षा करने लगा तो अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें मुझे समीक्षा के लिए मिलने लगीं। मुझे उनकी समीक्षा लिखकर भेजनी होती थी और वह पुस्तक मेरी। इससे मेरे पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या में वृद्धि होने लगी। इसी दौरान अनेक लेखकों की कृतियाँ मुझे सीधे भी मिलने लगी थीं, जिनकी समीक्षा मुझे किसी-न-किसी पत्रिका के लिए करनी होती थी। इसी दौरान डॉ. गोपाल राय जी के संपादन में दिल्ली से निकलने वाली समीक्षा पर केंद्रित पत्रिका 'समीक्षा' के लिए भी मुझे समीक्षा करने का अवसर मिला, तो इस बहाने मुझे अनेक विधाओं की महत्वपूर्ण कृतियों से गुजरने का अवसर मिला और मेरा पुस्तकालय और समृद्ध होता रहा। पढ़ने की सनक इस हद तक रही कि देहरादून, दिल्ली और चंडीगढ़ से एक साथ प्रकाशित होने वाले दैनिक 'हिमालय दर्पण' की रविवारीय पत्रिका 'अवकाश' पाने के लिए मुझे धरपा से बुलंदशहर लगभग 18 कि.मी. का आना-जाना करना होता था। दरअसल, बुलंदशहर के कालेआम में सिर्फ सुप्रीम न्यूज एजेंसी में वह अखबार आता था और धरपा तक उसके पहुँचने का कोई जरिया नहीं था। दो रुपये मूल्य के इस अखबार के लिए मुझे 14 रुपये खर्च करने पड़ते थे। कुछ पैदल दूरी और समय का कुछ जरूरी हिस्सा। चार कि.मी. दूर खुर्जा से मुझे हॉकर सारे हिंदी अखबार दे जाता था। उन दिनों मैं 'हिमालय दर्पण' पढ़ने के साथ ही, उसमें बराबर लिख भी रहा था।

वर्ष 2010 में बुलंदशहर से उत्तरकाशी की ओर आना हुआ तो भी पढ़ने-लिखने का सिलसिला यूँ ही जारी रहा। देश के विभिन्न राज्यों और राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से प्रकाशित होने वाली अनेक पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता लेकर मैंने अपने पढ़ने की आदत को छूटने नहीं दिया है और लिखना भी जारी है। हर वर्ष मेरा प्रयास रहता है कि किसी-न-किसी पत्रिका की आजीवन सदस्यता ले लूँ। आज डाक से ही मेरे गाँव के पते पर ढेर सारी पत्रिकाएँ मुझे मिल जाती हैं। सुदूरवर्ती क्षेत्र में अपनी तैनाती से जब भी गाँव लौटना होता है तो पत्र-पत्रिकाएँ जैसे मेरी प्रतीक्षा कर रही होती हैं। पुस्तकें पाने की सुविधा को देखते हुए ही मैंने राजकमल, राधाकृष्ण प्रकाशन, साहित्य अकादेमी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के बुक क्लब की सदस्यता भी ले रखी है और समय-समय पर वहाँ से अपनी मन इच्छित पुस्तकें मँगा लेता हूँ। सुदूरवर्ती पर्वतीय क्षेत्र में रहने के बावजूद इन पत्रिकाओं के माध्यम से एक तरह से मैं अपडेट रहने की कोशिश करता रहा हूँ।

डाक से पुस्तकें मँगाने, उन्हें पढ़ने और पुस्तकालय में तब्दील हो चुके कमरे में उन्हें सहेजकर रखने का मेरा प्रयास आज भी जारी है। इनके बीच में होकर मुझे अपने बाहर-भीतर के खालीपन से एक तरह मुक्ति का-सा अहसास होता है। मुझमें कुछ रचने के लिए ऊर्जा का संचार भी जैसे यहीं से मिलने लगता है। मेरा मानना है कि अच्छा पाठक हुए बिना, हम अच्छा लेखक नहीं हो सकते, बल्कि यूँ कहूँ कि लेखक ही नहीं हो सकते। लेखन की पहली सीढ़ी पुस्तकों से जुड़ाव है और इस जुड़ाव के लिए पुस्तकालय ही हमारे लिए किसी मजबूत सेतु का काम करते हैं। हाँ, अपने जीवन में मैं माँगकर पुस्तकें नहीं पढ़ पाया, बल्कि सीधे खरीदकर ही पढ़ता रहा हूँ। यही पढ़ना मुझे सुकून देता रहा है। यह बेशक मेरा दुर्गुण रहा हो, लेकिन इस कारण मैं बहुत सारी किताबें जुटा सका, जिससे निश्चित रूप से मेरा पुस्तकालय समृद्ध हुआ है। पढ़कर पुस्तकें लौटाने की चिंता से भी मैं मुक्त रहा।

आज मेरा अध्ययन कक्ष, जो पूरी तरह पुस्तकालय में तब्दील हो चुका है, मुझे घर में सबसे अधिक सुकून देने वाली जगह लगती है। यहाँ पुस्तकों के साथ होकर मेरे भीतर कुछ रचनात्मक करने की सोच और चाह का जो अगला कदम उठता है, उसकी नींव यहाँ जुटी पुस्तकों के उस इशारे से होती है कि जैसे वे कह रही हों कि कुछ पढ़ लिया तो अब कुछ लिख भी लो। इसीलिए लेखन के क्षेत्र में आ रहे लोगों से मेरा कहना होता है कि बहुत ज्यादा पढ़ो, ज्यादा लिखो और इस पर मनन करते हुए मेरी सृजन यात्रा भी अनवरत चल ही रही है।

भारत में पारंपरिक पुस्तकालय एवं पुस्तकालयों की व्यवस्था का विजन-मिशन कार्यनीति के उद्भव व विकास का इतिहास

पुस्तकालयों के उद्भव और विकास में पुस्तकालय का विजन व मिशन का इतिहास

प्राचीन काल से ही भारत में ऋषियों-मुनियों, साधु-संतों, कवियों-विद्वानों आदि के द्वारा हस्तलिखित ग्रंथों-पुस्तकों, लेखन-प्रलेखन की धरोहर को सँजोकर रखने की सोच से ही पुस्तकालय का जन्म हुआ, जिससे आने वाली पीढ़ियाँ भी अपने सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक इतिहास को जान सकें तथा इन पुस्तकों को जहाँ भंडारण करके रखा जाने लगा, उसे 'पुस्तकालय' नाम दिया गया। पुस्तकालय अर्थात् पुस्तकों का घर। चूँकि, भारत में प्राचीन काल में जब तक कागज का आविष्कार नहीं हुआ था, तब तक हमारे पूर्वज अपने ज्ञान को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए विभिन्न प्रकार के पत्तों-पेड़ों की छाल, पेड़ों के तने, भोज-पत्र, ताम्र-पत्र पर लिखकर तथा चट्टानों और गुफाओं की दीवारों पर चित्र उकेरकर किसी भी गद्य-पद्य को प्रदर्शित किया करते थे। बाद में, जैसे-जैसे तकनीक व ज्ञान का विकास हुआ, वैसे-वैसे कागज और छपाई की तकनीक भी विकसित हुई और इसके बाद लेखन-प्रलेखन के ज्ञान को कागज पर लिखकर सुरक्षित रखा जाने लगा। कई जगह इस लेखन को जंजीरों में बाँधकर भी सुरक्षित रखा जाता था, ताकि यह ज्ञान नष्ट न हो जाए, परंतु कागज और छपाई के आविष्कार से तो इस क्षेत्र में मानो एक क्रांति ही हो गई। अब समग्र ज्ञान को कागज पर मुद्रित दस्तावेजों के रूप में रखा जाने लगा।

आरंभ में आम लोगों को इन दस्तावेजों के इस्तेमाल की इजाजत नहीं मिलती थी और वे केवल कुछ खास लोगों की ही मिलकियत होते थे। ये ही लोग उनका प्रयोग भी कर पाते थे। जिस स्थान पर ऐसी पुस्तकों को रखा जाता था, उसे 'पुस्तक संग्रहालय' कहा जाता था। दरअसल, ये पुस्तक संग्रहालय भी केवल राजाओं और जमींदारों के पास ही होते थे। आम लोगों को इन पुस्तक संग्रहालयों में झाँकने की भी मनाही थी। लेकिन धीरे-धीरे शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ

विजय सिंह रावत

जन्म : 05 जून, 1948

शिक्षा : स्नातक

संप्रति : एन.जी.ओ. पार्टिसिपेटरी रिसर्च इन एशिया, नई दिल्ली में पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर।

संपर्क :

ई-मेल– rawatvijay1946@gmail.com

और ज्ञान के विकास के साथ-साथ इन पुस्तक संग्रहालयों की पहुँच भी आम लोगों तक हुई और आधुनिक पुस्तकालय के रूप में प्रचलित और विकसित हुए तथा पुस्तकों के भंडारण में नए-नए आयाम प्रदान करते गए और साथ ही, समाज की इसी सोच से पुस्तकालय का विजन बना, जिससे समाज के सब वर्ग के लोग इसका प्रयोग-उपयोग कर सकते हैं, न कि राजा-महाराजा, जमींदार या विशेष व्यक्ति ही इसका उपयोग करें। पुस्तकालय का यही उद्देश्य पुस्तकालय विजन के साथ सबके हित में समान दृष्टि रखता है, किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं। सब शिक्षित हों, जागरूक हों, जानकारी प्राप्त करें और साथ ही पुस्तकालय के संग्रह से लाभ उठा सकें।

पुस्तकालय के आयाम और पुस्तकालयों के कर्मचारियों, पाठकों का पुस्तकालय की व्यवस्था व विजन मिशन में जुड़ने का योगदान

पुस्तकालय के आयाम

1. पुस्तकालय ज्ञान के भंडार हैं, जिसमें संपूर्ण ज्ञान दस्तावेजों के रूप में चिह्नित होता है तथा उसका सभी लोग प्रयोग कर सकते हैं।
2. पुस्तकालय एक सामाजिक संस्था है, जो समाज में ज्ञान के प्रचार-प्रसार का कार्य करती हैं।
3. पुस्तकालय पुस्तकों, पाठकों और कर्मचारियों का एक समुच्चय हैं, जो पुस्तकालय के विजन के साथ-साथ पुस्तकालय मिशन से जुड़ते हैं।

उपरोक्त आयामों के अनुसार पुस्तकालयों को सभी के लिए खोल दिया गया। इस बदलाव से एक नया पहलू सामने आया, जिससे समाज के सभी लोग पुस्तकालयों का प्रयोग करके ज्ञानार्जन कर सकें और समाज एवं समुदाय के विकास में योगदान दे सकें। शिक्षा के क्षेत्र में हुए क्रांतिकारी विकास के फलस्वरूप पुस्तकालयों का महत्व और भी बढ़ता ही गया, क्योंकि प्रौढ़ शिक्षा में भी सार्वजनिक पुस्तकालयों का एक महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

कर्मचारी, पुस्तकालय सेवा के एक महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य अंग हैं

केवल श्रेष्ठ ग्रंथों के संग्रह, आकर्षक भवन फर्नीचर तथा न्यू इलेक्ट्रॉनिक कंप्यूटर तकनीक के उपकरण रखने से ही अच्छे पुस्तकालय का निर्माण नहीं होता है। पुस्तक निर्जीव सत्ता है। वह स्वयं अपने में निहित ज्ञान की चर्चा नहीं कर सकती। इनमें प्राण संचार का कार्य पुस्तकालय कर्मचारी द्वारा ही संभव है। कर्मचारी (स्टाफ) ही पाठकों को पुस्तकों में उल्लिखित ज्ञान से उनके लेखक व व्याख्या से परिचित करवाता है। इस प्रकार कर्मचारी (स्टाफ) पुस्तक और पाठक के मध्य संपर्क स्थापित कर पुस्तकालय सेवा को सफल बनाता है। वह पाठकों की आवश्यकतानुसार पाठ्य-सामग्री का संकलन करता है तथा उन्हें इस प्रकार व्यवस्थित करता है कि पाठक अपनी वांछित सूचना (जो वह चाहता है) एवं पुस्तक सरलता से प्राप्त कर सके। पुस्तकों का संरक्षण एवं सुरक्षा का कार्य भी कर्मचारियों को ही करना पड़ता है, जिससे पुस्तक पाठक को सरलता से प्राप्त होती है तथा पुस्तकों को उपयुक्त ढंग से रखने पर उनका जीवन काल बढ़ता है।

यही पाठकगण, पुस्तकालय कर्मचारी पुस्तकालय के विजन की सोच के साथ उसके मिशन से जुड़ते हैं और पुस्तकालय के कार्य को पुस्तकालय के उद्देश्य के साथ-साथ सफल बनाते हैं और यही उन सबका योगदान होता है। इसी से पुस्तकालय की छवि बनती है और समाज में नाम बनता है। जिस प्रकार पुस्तकालय को खोलने वाले व्यक्ति/संस्था अपने विजन की सोच के साथ-साथ एक आदर्श रचनात्मक साहित्यिक समाज की कल्पना करता है, उसे पूरा करने के लिए लक्ष्य निर्धारित करता है, उस लक्ष्य को ही विजन की संज्ञा दी जाती है। इसमें पुस्तकालय के विकास में दान-दाताओं की भी मुख्य भूमिका होती है, जो पुस्तकालयों के विजन मिशन में अपना सहयोग देते हैं।

जाने-माने पुस्तकालय के ज्ञाता डॉ. रंगनाथन जी द्वारा प्रतिपादित पुस्तकालय विज्ञान के पाँच सूत्र, जो कि पुस्तकालय सेवा की आधारशिला माने जाते हैं, उसी में द्वितीय सूत्र में इस बात पर बल दिया जाता है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को धर्म, जाति, उम्र, लिंग, सामाजिक स्थिति के भेदभाव के बिना पुस्तक पढ़ने का अवसर देना चाहिए तथा प्रत्येक व्यक्ति को उसकी रुचि के अनुसार पुस्तकें पढ़ने का अधिकार है। पुस्तकालयों को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए, ताकि आज के इस डिजिटल युग में भी पुस्तकालय के संग्रह से समाज का प्रत्येक व्यक्ति लाभ उठा सके। इन्हीं उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालयों का विजन मिशन—कार्यनीति का उद्भव हुआ, जो आज भी पुस्तकालयों के विकास में मार्गदर्शन का काम कर रहे हैं। लाइब्रेरी साइंस, लाइब्रेरी में पुस्तकों को व्यवस्थित करने का ही विज्ञान है।

पुस्तकालय, पुस्तकालयों के उद्देश्य और उसके मुख्य तत्व

1. **पुस्तकालय का शाब्दिक अर्थ है**—पुस्तक रखने का स्थान या घर, अतः पुस्तकालय वह स्थान है, जहाँ पुस्तकें रखी जाती हैं, किंतु ये स्थान पुस्तक भंडार संग्रहालय या प्रकाशक व पुस्तक विक्रेता के प्रतिष्ठान भी हो सकते हैं। इन समानार्थी स्थानों से इससे भिन्न करने के लिए पुस्तकालय की उपयोगिता को इसके साथ जोड़ना आवश्यक है। इस प्रकार पुस्तकालय की परिभाषा होगी—'वह स्थान, जहाँ पाठकों के उपयोग हेतु पुस्तकें रखी जाती हैं।' यह परिभाषा पुस्तकालय की उपयोगिता को तो स्पष्ट करती ही है, साथ ही, पुस्तकालय को अन्य समानार्थी

स्थानों, यथा पुस्तक भंडारों आदि, जिनका उद्देश्य पुस्तकों का विक्रय कर लाभ अर्जित करना अथवा अन्य कोई प्रयोजन हो सकता है, से भी पृथक करती है। यह पुस्तकालय की सामान्य परिभाषा है। पुस्तकों का विक्रय कर लाभ अर्जित करना भी पुस्तकालय की सेवा के ही उद्देश्य हैं। उदाहरणतः—भारत में गीता प्रेस, गोरखपुर की स्थापना 3 मई, 1923 को हुई थी, जो एक धार्मिक पुस्तकालय के रूप में उभरा। इसके संस्थापक जयदयाल गोयनका व घनश्याम दास जालान थे।

2. **स्थान अथवा भवन**—जहाँ पुस्तकें रखी जाती हैं।
3. **पाठक**—जो पुस्तकों और संदर्भ सामग्री का उपयोग करते हैं।
4. **पुस्तकालय कर्मी**—जो पाठकों की आवश्यकतानुसार उनके लिए उपयोगी पुस्तकें और सामग्री संगृहीत करते हैं और पाठक सरलता एवं सुविधापूर्वक पुस्तकों का उपयोग कर सकें, इस हेतु इन पुस्तकों को व्यवस्थित रखते हैं।

डॉ. रंगनाथन जी ने इन तत्वों को पुस्तकालय की 'त्रिमूर्ति' कहा है। अतः पुस्तकालय के अंग इस प्रकार हैं—पाठक अथवा उपयोगकर्ता, उनकी आवश्यकता के अनुरूप उपयोगी पुस्तकें एवं अन्य अध्ययन सामग्री का संकलन एवं व्यवस्थापन तथा व्यवस्थापन की दृष्टि से उसके अनुरूप योग्यता वाले कर्मचारी।

पुस्तकालय का सामान्य उद्देश्य आम लोगों के बीच पठन-पाठन की आदतें विकसित करना और शिक्षा व साक्षरता का प्रचार-प्रसार करना है, किंतु किसी भी काल और देश में पुस्तकालय की स्थापना का विशेष उद्देश्य होता है—जानकारी का भंडारण (यानी उसे सँभालकर रखना), उसका संग्रहण (यानी उसे विभिन्न स्रोतों से एकत्र करना) तथा उसका संप्रेषण करना (यानी उसे लोगों तक पहुँचाना)। स्वैच्छिक संस्थाओं के संदर्भ में पुस्तकालय की स्थापना का उद्देश्य यह है कि जानकारी का न केवल भंडारण, संग्रहण और संप्रेषण किया जाए, बल्कि उसे उस उपयुक्त लक्ष्य समूह तक भी पहुँचाया जाए, जिसके लिए पुस्तकालय सामान्य पाठकों की जरूरतों की पूर्ति करता है। वह स्वैच्छिक संस्थाओं, विशेषतः सामाजिक विकास कर्मियों, स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं और विकास क्षेत्र में कार्यरत शोधकर्ताओं व शिक्षाविदों की जरूरतों को पूरा करता है।

5. **पुस्तकालय के प्रकार :** यदि पुस्तकालय शैक्षणिक संस्था से संबंधित है, तो उक्त पुस्तकालय 'शैक्षणिक पुस्तकालय' कहलाएगा। यदि पुस्तकालय शोध अथवा विशिष्ट विभाग से संबद्ध है तो 'विशिष्ट पुस्तकालय' कहलाएगा। यदि पुस्तकालय राष्ट्रीय स्तर का है, तो वह 'राष्ट्रीय पुस्तकालय' कहलाएगा। इसी प्रकार, पुस्तकालय किसी क्षेत्र में समस्त नागरिकों के लिए सार्वजनिक रूप से खुला है, तो वह 'सार्वजनिक पुस्तकालय' कहलाएगा। अतः शैक्षणिक पुस्तकालय, विशिष्ट पुस्तकालय, राष्ट्रीय पुस्तकालय और सार्वजनिक पुस्तकालय—पुस्तकालय के चार प्रमुख प्रकार माने जाते हैं।

किंतु यह पुस्तकालयों का बड़ा ही सामान्य वर्गीकरण है। इनके अलावा, विषय के अनुसार भी पुस्तकालय हो सकते हैं, जैसे—विज्ञान पुस्तकालय, जिसमें केवल विज्ञान संबंधी पुस्तकें होती हैं; सामाजिक विज्ञान पुस्तकालय, अंग्रेजी पुस्तकालय आदि। एक अन्य वर्गीकरण यह हो सकता है—निजी पुस्तकालय, सरकारी या सार्वजनिक पुस्तकालय। इसी प्रकार, संस्थाओं के भी अपने पुस्तकालय होते हैं, जो सार्वजनिक भी हो सकते हैं। साथ ही, धार्मिक पुस्तकालय, ग्रामीण पुस्तकालय, स्वैच्छिक संस्थाओं के पुस्तकालय आदि।

विभिन्न ऐतिहासिक कालों में पुस्तकालयों के उद्देश्य एवं उनके स्वरूप में आए परिवर्तन

जैसा कि पीछे बताया गया है कि पुराने समय में किताबों को जंजीरों से बाँधकर रखा जाता था, ताकि उन्हें कोई चुरा न सके। ग्रंथपाल इन पुस्तकों के संरक्षक होते थे। इच्छुक व्यक्ति अनुमति लेकर वहाँ आते थे और पुस्तकें पढ़कर चले जाते थे। इसके बाद उन किताबों को दोबारा ताले में बंद कर रख दिया जाता था। पाठकों को पुस्तकें ले जाने की अनुमति नहीं थी। उस समय की मान्यता यह थी कि पुस्तकें

भविष्य की धरोहर हैं। वैदिक काल में जब महाभारत लिखा गया था, तो उस समय उन प्रतियों को सुरक्षित रखा गया, क्योंकि तब उनकी बहुत सारी प्रतिलिपियाँ तैयार करना एक कठिन कार्य था, परंतु आज ऐसा नहीं हैं। अब हमारे पास छपाई की तकनीक उपलब्ध हैं, इसलिए हम एक ही पुस्तक की अनगिनत प्रतिलिपियाँ आसानी से तैयार कर लेते हैं।

समय बदल चुका है। पुराने जमाने में जब लोगों ने इस नियम का डटकर विरोध किया, तो धीरे-धीरे आम लोगों को भी पुस्तकें और दस्तावेज पढ़ने की इजाजत दी जाने लगी। अब किसी भी पुस्तकालय

का एक आधारभूत नियम यह है कि पुस्तकों को बंद अलमारियों में न रखकर खुली अलमारियों में रखा जाए और कुछ नियमों का पालन करते हुए लोगों को उन्हें घर ले जाकर पढ़ने की अनुमति दे दी जाए।

1. प्राचीन काल—पुस्तक केवल सुरक्षित रखने हेतु हैं।
2. मध्य काल—पुस्तकें आर्थिक रूप से उपयोग हेतु हैं। (16वीं तथा 17वीं शताब्दी)
3. आधुनिक काल—पुस्तकें उपयोग हेतु हैं।

"भारत में तत्कालीन विदेशी यात्रियों ने इस बात का उल्लेख किया है कि नालंदा जैसे विश्वविद्यालय के केंद्रों में पुस्तकालय भी होते थे। बौद्धों के मुख्य शिक्षा केंद्र तक्षशिला, (अब पाकिस्तान में) नालंदा, वल्लभी तथा विक्रमशिला थे। ये सभी विश्वविद्यालय पुस्तकालयों से सुसज्जित थे। चीन के विद्वान वर्षों नालंदा में रहकर अध्ययन करते थे। उन्होंने बौद्ध धर्म के ग्रंथों का भी अध्ययन किया। 300 ई. में चीनी यात्री ह्वेनसांग भी प्राचीन भारतीय साहित्य का अध्ययन करने के लिए कुछ समय तक यहाँ रहा था। यहाँ का पुस्तकालय 'धर्मगज' के नाम से प्रसिद्ध था।"

जैसा कि पीछे भी उल्लेख किया गया है कि आधुनिक काल में पुस्तकालय केवल कुछ गिने-चुने व्यक्तियों के लिए नहीं हैं। आधुनिक पुस्तकालयों को जाति, धर्म, लिंग आधारित भेदभाव के बिना कोई भी व्यक्ति प्रयोग कर सकता है। आज पुस्तकालय एक गतिशील सामाजिक संस्था की हैसियत रखते हैं, जिनसे अपने व्यक्तिगत विकास करने में हर किसी को मदद मिलती है।

प्राचीन और मध्य भारत के काल का इतिहास

प्राचीन और मध्य काल में भारत में जो भी पुस्तकालय होते थे, उनमें केवल हस्तलिखित पुस्तकें ही मिलती थीं। ऐसे सभी पुस्तकालय व्यक्तियों के होते थे या उन्हें सामाजिक व धार्मिक संस्थाएँ संचालित करती थीं। बहुत सारे पुस्तकालय मठों, मंदिरों, बौद्ध विहारों, जैनों के उपसायों और राजप्रासादों में होते थे।

भारत में तत्कालीन विदेशी यात्रियों ने इस बात का उल्लेख किया है कि नालंदा जैसे विश्वविद्यालय के केंद्रों में पुस्तकालय भी होते थे। बौद्धों के मुख्य शिक्षा केंद्र तक्षशिला (अब पाकिस्तान में) नालंदा, वल्लभी तथा विक्रमशिला थे। ये सभी विश्वविद्यालय पुस्तकालयों से सुसज्जित थे। चीन के विद्वान वर्षों नालंदा में रहकर अध्ययन करते थे। उन्होंने बौद्ध धर्म के ग्रंथों का भी अध्ययन किया। 300 ई. में चीनी यात्री ह्वेनसांग भी प्राचीन भारतीय साहित्य का अध्ययन करने के लिए कुछ समय तक यहाँ रहा था। यहाँ का पुस्तकालय 'धर्मगज' के नाम से प्रसिद्ध था। धर्मपाल का विश्व शीलभद्र इसका पुस्तकालयाध्यक्ष था। भारत के उत्तर-पश्चिम में तक्षशिला विश्वविद्यालय में एक बड़ा पुस्तकालय था। व्याकरण के पंडित पाणिनि और चंद्रगुप्त के कूटराजनीतिक मंत्री चाणक्य, दोनों ने ही यहीं अध्ययन किया था। नालंदा तथा तक्षशिला विश्वविद्यालय ज्ञान का विश्वविख्यात केंद्र रहे हैं। नालंदा विश्वविद्यालय के इस विश्वप्रसिद्ध पुस्तकालय को सबसे पहले हूणों ने और बाद में बख्तियार खिलजी नामक आक्रमणकारी ने 1200 ई. में नष्ट कर दिया।

स्वतंत्रता के बाद के काल का इतिहास

स्वतंत्रता के समय हमारा देश भारी आर्थिक कठिनाइयों से घिरा हुआ था। इस कारण देश का ध्यान केवल आर्थिक एवं सामाजिक स्थितियों से निपटने पर ही केंद्रित रहा तथा शिक्षा के क्षेत्र में बहुत प्रगति नहीं की जा सकी। इसका प्रभाव हमारे पुस्तकालय के विकास पर भी पड़ा। पुस्तकालय विकास कार्यक्रम को पहली पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत सन् 1951 में ही योजना आयोग ने अपनी विषय-सूची में सम्मिलित कर लिया।

पुस्तकालय विकास की दृष्टि से इस काल में पुस्तकालय आंदोलन को और भी गति मिली। पुस्तकालय के क्षेत्र में इनका योगदान बढ़ता गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में पुस्तकालयों का विकास इस प्रकार हुआ—

1. इंपीरियल लाइब्रेरी, कोलकाता को देश का राष्ट्रीय पुस्तकालय घोषित किया गया।
2. तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, केरल राज्यों में पुस्तकालय अधिनियम पारित किये गए।
3. अधिक-से-अधिक विश्वविद्यालयों की स्थापना के साथ-साथ वैज्ञानिक एवं तकनीकी तथा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में शोध संस्थानों एवं पुस्तकालयों का भी विकास हुआ।
4. 27 अक्तूबर, 1951 को भारत सरकार तथा यूनेस्को के सहयोग द्वारा दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना हुई। यह भारत के विशाल सार्वजनिक पुस्तकालयों में से एक है। इस पुस्तकालय में वे सभी गुण विद्यमान हैं, जो किसी भी आदर्श सार्वजनिक पुस्तकालय में होने चाहिए।
5. राजा राममोहन राय फाउंडेशन को पुस्तकालय विकास व सहायता हेतु राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकालय संबद्धता एजेंसी के रूप में अधिकृत किया गया।
6. पुस्तकों के प्रचार-प्रसार और पुस्तक पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने के लिए सन् 1957 में प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 'नेशनल बुक ट्रस्ट' का शुभारंभ किया। यह संस्था कम मूल्य में उपयोगी पुस्तकें उपलब्ध कराती है, जो हमें आज भी प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में पढ़ने व देखने को मिलती है।

शोधार्थियों का तीर्थ है साहित्य सम्मेलन का 'हिंदी संग्रहालय'

देश-विदेश के हिंदी भाषा व साहित्य के अध्येता यहाँ डेढ़ लाख से भी अधिक संगृहीत पुस्तकों, ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं और साहित्यकारों के पत्रों के अवलोकन हेतु पहुँचते हैं। यहाँ कई महत्वपूर्ण हस्तलिखित पांडुलिपियाँ और साहित्यकारों व अनेक महत्वपूर्ण साहित्यिक गतिविधियों के छायाचित्रों का भी अनूठा संग्रह है।

हिंदी सहित लगभग सभी भाषाओं के विद्वानों, साहित्यकारों और शोधार्थियों के लिए प्रयागराज स्थित हिंदी साहित्य सम्मेलन के 'हिंदी संग्रहालय' में आना किसी भाषायी तीर्थयात्रा के पूरा होने से कम नहीं माना जाता है। सच तो यह है कि इस संग्रहालय में पहुँचते ही एक अलग तरह की अनुभूति होती है, जो अपनी भाषा की समृद्धता और व्यापकता से परिचित होने का सुख व संतोष देती है। कक्ष की ऊँची-ऊँची दीवारों पर चारों तरफ जाने-माने हिंदी भाषा के

डॉ. धनंजय चोपड़ा

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में सेंटर ऑफ मीडिया स्टडीज के पाठ्यक्रम समन्वयक हैं। लेखक, पत्रकार व अनुवादक के रूप में 40 वर्षों से भी अधिक का अनुभव। अब तक 15 पुस्तकें व 1000 से अधिक आलेख, फीचर, साक्षात्कार व शोधपत्र प्रकाशित हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार तथा उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के विष्णुराव पराड़कर एवं धर्मवीर भारती पुरस्कार सहित कई पुरस्कार व सम्मान मिल चुके हैं।

संपर्क : मोबाइल– 9415235113
ईमेल– c.dhananjai@gmail.com

उन्नायकों और साहित्यकारों के बड़े-बड़े छायाचित्रों के बीच पुस्तकों और ग्रंथों को पृष्ठ-दर-पृष्ठ पलटना एक अलग ही तरह की सृजनात्मक संतुष्टि का अहसास देता है। अब यह इस संग्रहालय का आकर्षण ही तो है कि देश-विदेश के हिंदी भाषा व साहित्य के ढेर सारे अध्येता प्रतिवर्ष यहाँ डेढ़ लाख से भी अधिक संगृहीत पुस्तकों, ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं और साहित्यकारों के पत्रों के अवलोकन हेतु पहुँचते हैं। रोमांच से भर देने वाला तथ्य यह है कि यहाँ कई महत्वपूर्ण हस्तलिखित पांडुलिपियों और साहित्यकारों व अनेक महत्वपूर्ण साहित्यिक गतिविधियों के छायाचित्रों का भी अनूठा संग्रह है।

यहाँ यह बताना जरूरी है कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी भाषा के रास्ते बड़ी लड़ाई लड़ने की शुरुआत आज से 113 वर्ष पहले सन् 1910 में हिंदी साहित्य सम्मेलन के रूप में हुई थी। तब नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की पहल पर हुई इस शुरुआत का उद्देश्य रखा गया था कि हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाया जाए और हिंदी भाषा व देवनागरी लिपि का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए, ताकि हिंदी भाषा-भाषी क्षेत्र ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लोग निज भाषा गौरव का अनुभव कर सकें और आत्मविश्वास प्राप्त कर सकें। 10 अक्तूबर, 1910 को महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में काशी में ही हिंदी साहित्य सम्मेलन का प्रथम

अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन की सफलता पर यह तय हुआ कि इस तरह का अधिवेशन पूरे देश में आयोजित किया जाएगा तथा अगला अधिवेशन प्रयाग में होगा। साथ ही, 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' नाम की एक समिति बना दी गई, जिसके प्रथम प्रधानमंत्री राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन को बनाया गया। टंडन जी की ही प्रेरणा से बाद में इस समिति का स्थायी कार्यालय प्रयाग में ही स्थापित कर दिया गया। तब से लेकर आज तक 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' अपनी पूर्ण आभा के साथ सभी को आकर्षित करता आ रहा है। राष्ट्रीय महत्व

की इस संस्था को इसके चार विभागों, यथा—प्रबंधन विभाग, प्रचार विभाग, परीक्षा विभाग, अर्थ विभाग और साहित्य विभाग द्वारा संचालित किया जा रहा है। सम्मेलन का अपना मुद्रणालय और बिक्री विभाग भी है। सम्मेलन का सबसे महत्वपूर्ण अंग है, यहाँ पर स्थित 'हिंदी संग्रहालय'।

'हिंदी संग्रहालय' की स्थापना का प्रस्ताव सन् 1922 में हिंदी साहित्य सम्मेलन के तत्कालीन सभापति राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने रखा था। इसी प्रस्ताव के अनुपालन में 16 मई, 1932 में इस संग्रहालय की नींव रखी गई। राष्ट्रीय और सांस्कृतिक महत्व के इस संग्रहालय का उद्घाटन 5 अप्रैल, 1936 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किया था। उद्घाटन के इस समारोह में पंडित जवाहरलाल नेहरू, काका कालेलकर और राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन जैसी विभूतियाँ उपस्थित थीं। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना के समय ही हिंदी संग्रहालय की ऐसे साहित्यिक एवं सांस्कृतिक भंडार के रूप में कल्पना की थी, जिसमें उच्च स्तरीय शोध के लिए बहुत ही सहजता से सामग्री उपलब्ध होती रहे। उन्हीं की कल्पना अनुसार, सन् 1936 से अब तक लगातार नए-पुराने हिंदी ग्रंथों, प्राचीन हस्तलेखों, साहित्यकारों के पत्र, दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक एवं त्रैमासिक पत्र-पत्रिकाओं के विशाल और महत्वपूर्ण संग्रह के कारण यह संग्रहालय हिंदी के उच्च स्तरीय शोध में अपनी उपयोगिता बनाए हुए है।

इस संग्रहालय में प्रवेश करते ही इसकी विशालता का अहसास होने लगता है। इस संग्रहालय में 90 फीट लंबा और 40 फीट चौड़ा विशाल मुख्य कक्ष है। इस विशाल कक्ष में 20 स्तंभों पर चारों तरफ प्रकोष्ठ (बालकनी) बनाए गए हैं। भूतल पर विशाल कक्ष से जुड़े हुए चार छोटे-बड़े कमरे और ऊपरी तल पर प्रकोष्ठों से जुड़े हुए पाँच कमरे भी हैं। कक्ष के साथ जुड़े इन सभी कमरों को विशेष नाम दिया गया है, जैसे—राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन कक्ष, सूरज-सुभद्रा कक्ष, रणवीर कक्ष, वसु कक्ष, हस्तलिखित ग्रंथ कक्ष, पत्र-पत्रिका कक्ष, बाल साहित्य कक्ष, गांधी वांग्मय कक्ष आदि। महत्वपूर्ण बात यह है कि संग्रहालय को उपयोगकर्ताओं की सुविधा के लिए एक सुव्यवस्थित पुस्तकालय के रूप में संचालित किया जाता है। मसलन ग्रंथों के नाम पर आधारित पेटिकाएँ और लेखकों के नाम के आधार पर पेटिकाएँ अलग-अलग रखी गई हैं। इन पेटिकाओं में वर्णमाला के क्रम में ग्रंथ और पुस्तकों तक पहुँचने की जानकारी देते हुए बहुत ही व्यवस्थित ढंग से कार्ड रखे गए हैं, ताकि शोधकर्ता को किसी भी ग्रंथ या पुस्तक तक पहुँचने में कोई कठिनाई न हो। मुद्रित और हस्तलिखित सामग्री को अलग-अलग कक्षों और अलमारियों में व्यवस्थित करने से शोधार्थियों और पाठकों को उन तक पहुँचने और उन्हें प्राप्त करने में सहजता होती है।

भाषा व साहित्य की अमूल्य संपदा के संवाहक इस संग्रहालय में हिंदी की पुस्तकों और ग्रंथों के संग्रहालय में 76,000 मुद्रित पुस्तकें, 3,600 दैनिक पत्रों, 2,800 साप्ताहिक पत्रों, 15,200 मासिक पत्रिकाओं और गजट की 1,750 जिल्दबंद फाइल व्यवस्थित और सुरक्षित करके रखी गई हैं। हिंदी भाषा और साहित्य के शोधार्थियों के लिए डेढ़ लाख से भी अधिक पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, हस्तलिखित ग्रंथों, पत्रों और चित्रों का यह बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण संग्रह है। इस संग्रह में हिंदी एवं संस्कृत भाषा के कुछ दुर्लभ हस्तलिखित ग्रंथ भी हैं, जिनकी संख्या लगभग 7,000 से भी अधिक है। इन्हें हिंदी संग्रहालय के हस्तलिखित कक्ष में रखा गया है। इनमें से अधिकांश दुर्लभ और

अप्राप्य हैं, जिनका ऐतिहासिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्व है। उदाहरण के लिए, इन ग्रंथों में 17वीं शताब्दी का हस्तलिखित कुंडलीनुमा सचित्र भागवत है। इसमें अत्यंत कलात्मक ढंग से बनाए गए 38 चित्र शामिल हैं, जिसकी लंबाई 69 फीट है, काष्ठमंजूषा में सुरक्षित रखा गया है। इसी तरह संपूर्ण श्रीमद्भागवत गीता का अत्यंत कलात्मक और मूल्यवान गोलाकृत हस्तलिखित पांडुलिपि को शीशे के बने बॉक्स में रखकर प्रदर्शित किया गया है। अन्य ढेर सारे महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रंथों को लाल कपड़ों में लपेट कर बॉक्स में रखा गया है। इन सभी ग्रंथों की कीटों तथा उपयोग के दौरान होने वाली संभावित क्षतियों से सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा जाता है। सम्मेलन के इसी हिंदी संग्रहालय के अंतर्गत एक सामान्य हिंदी पुस्तकालय भी शामिल है। इस नियमित पुस्तकालय में 16,300 पुस्तकें हैं, जिनका उपयोग सामान्यजन, छात्र और अध्येता निरंतर करते रहते हैं।

“संग्रहालय में साहित्यकारों और हिंदी भाषा के उन्नायकों के चित्र प्रदर्शित किए गए हैं। इनमें से कई चित्र अब अप्राप्य हैं। साहित्यकारों और साहित्यिक गतिविधियों के दुर्लभ चित्रों का एल्बम भी यहाँ पर उपलब्ध है। इसी क्रम में विशिष्ट साहित्यकारों का चित्रात्मक परिचय गार्ड-फाइलों में सुरक्षित किया गया है। हिंदी के महत्वपूर्ण साहित्यकारों के 4,197 पत्र संगृहीत हैं, जो अपने समय के साहित्यिक इतिहास की गवाही देते हुए मिलते हैं। इन पत्रों के पढ़ने से ही उन साहित्यकारों के बीच होने वाली बातचीत से उस समय के साहित्यिक-सामाजिक परिदृश्य और उनके समक्ष प्रस्तुत होने वाली चुनौतियों को सहजता से समझा जा सकता है।”

संग्रहालय में साहित्यकारों और हिंदी भाषा के उन्नायकों के चित्र प्रदर्शित किए गए हैं। इनमें से कई चित्र अब अप्राप्य हैं। साहित्यकारों और साहित्यिक गतिविधियों के दुर्लभ चित्रों का एल्बम भी यहाँ पर उपलब्ध है। इसी क्रम में विशिष्ट साहित्यकारों का चित्रात्मक परिचय गार्ड-फाइलों में सुरक्षित किया गया है। हिंदी के महत्वपूर्ण साहित्यकारों के 4,197 पत्र संगृहीत हैं, जो अपने समय के साहित्यिक इतिहास की गवाही देते हुए मिलते हैं। इन पत्रों के पढ़ने से ही उन साहित्यकारों के बीच होने वाली बातचीत से उस समय के साहित्यिक-सामाजिक परिदृश्य और उनके समक्ष प्रस्तुत होने वाली चुनौतियों को सहजता से समझा जा सकता है।

संग्रहालय में देश के भाषाविद्, साहित्यकार और शोधार्थी तो आते ही हैं, विदेशों से भी विद्वान पहुँचते हैं। हिंदी भाषा के विदेशी विद्वानों को यहाँ प्रायः अध्ययन करते देखा जा सकता है। जिन देशों से यहाँ लोग प्रायः आते रहे हैं, उनमें यू.एस.ए., मास्को, जापान, ब्रिटेन, पोलैंड, मॉरिशस, मैक्सिको, ऑस्ट्रेलिया, तुर्की आदि देश शामिल हैं। दुनिया के प्रमुख विश्वविद्यालयों, जैसे—ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, कैलिफोर्निया, ओसाका, वाशिंगटन आदि विश्वविद्यालय के शोधार्थी यहाँ पर आते रहे हैं। यह क्रम अभी तक निरंतर जारी भी है। देश के कुछ विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागों ने अपने शोधार्थियों को यहाँ जाना अनिवार्य भी कर रखा है। बड़ी बात यह है कि भाषा और साहित्य के अध्येताओं के साथ यह हर पीढ़ी के साहित्यकारों और पत्रकारों के लिए भी अध्ययन व खोज का प्रमुख केंद्र बना हुआ है।

हिंदी साहित्य सम्मेलन के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री विभूति मिश्र कहते हैं कि पठन-पाठन और अध्ययन-अध्यापन में टेक्नोलॉजी के विकास के कारण आ रहे बदलाव को देखते हुए इस संग्रहालय को नया रूप देने की योजना भी बन रही है, ताकि इसकी सहज उपलब्धता अधिक-से-अधिक अध्येताओं और सामान्य-जन तक बनाई जा सके। आने वाले दिनों में यहाँ के प्रमुख ग्रंथों और हस्तलिखित पांडुलिपियों को डिजिटलाइज्ड भी किया जाना प्रस्तावित है। यह बहुत विस्तृत, गंभीर और जटिल काम है, इसलिए इसे बहुत सोच-विचार और सावधानीपूर्वक योजना बनाकर किया जाएगा।

यह तो तय है कि आने वाले दिनों में यह हिंदी-संग्रहालय निरंतर विस्तार लेता चला जाएगा। इसके कोष में लगातार पुस्तकें, ग्रंथ और पत्र-पत्रिकाएँ शामिल हो रही हैं, जो आने वाले समय के शोधार्थियों के लिए उपयोगी होंगी। जाहिर है कि राष्ट्रीय महत्व की इस संस्था को बचाने और लगातार सक्रिय बनाए रखने की जरूरत है। यही वजह है कि हिंदी के भाषाविदों, अध्यापकों, साहित्यकारों और सामान्य पाठकों को इसके प्रचार-प्रसार एवं विस्तार में अपनी-अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहना होगा।

पुस्तकालय संस्कृति का सिमटता दायरा कारण एवं सुझाव

भारत में पुस्तक संस्कृति का महत्व बहुत पुराना है। वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण और पुराणों जैसे ग्रंथों की यहाँ पूजा तो होती ही है, साथ ही उनके मर्म को जीवन में उतारकर उसे आत्मसात् करने की सलाह हमें दी जाती है। जब लिखने के साधन नहीं थे, तो इस ज्ञान को कंठस्थ कर सदियों से गुरु-चेला परंपरा अथवा पारिवारिक धरोहर मानकर सहेज कर रखा जाता था। जब लेखन की परंपरा आरंभ हुई तो इस ज्ञान को लिखित रूप में भी सहेजने की परंपरा शुरू हो गई। वैदिक काल में समय-समय पर धर्म व दर्शन संबंधी साहित्य ताड़ और भोज-पत्र, वस्त्र विशेष और हस्तनिर्मित कागज पर लिखने की परंपरा विकसित होती रही। इस काल में वेद, इतिहास, पुराण और व्याकरण संबंधी कई ग्रंथों की रचना तत्कालीन ऋषि-मुनियों ने की।

प्रवीण कुमार सहगल

शिक्षा : एम.ए., पी.जी.डी.आई.सी.एस.।

सम्मान : युवा लेखन सृजना पुरस्कार, आर्यस्मृति साहित्य सम्मान के साथ-साथ देश-प्रदेश की विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित।

संप्रति : स्वतंत्र लेखन। साहित्य-सृजन के साथ-साथ शैक्षिक-सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय।

संपर्क : मोबाइल : 9871346063

ई-मेल : praveensehgal217@gmail.com

यह कहना भी सत्य नहीं है कि प्राचीन समय में पुस्तकों का उपयोग नहीं होता था। उस समय भी विद्वानों को उनके उपयोग की इजाजत थी। प्राचीनकाल में पुस्तकें हस्तलिखित होती थीं, उनकी सीमित प्रतियाँ उपलब्ध होती थीं, क्योंकि प्रतियाँ तैयार करना काफी कठिन तथा खर्चीला काम था। उन्हें राजा-महाराजा ही तैयार करवा सकते थे तथा उनकी सुरक्षा की व्यवस्था भी वे ही कर सकते थे। इस प्रकार प्रारंभिक काल में पुस्तकों तथा पुस्तकालयों की सुरक्षा करने का यह लाभ हुआ कि अपने शैशव काल में ये नष्ट नहीं हुए। इन हस्तलिखित ग्रंथों की पांडुलिपियाँ स्थान-विशेष यथा मठ-मंदिरों और गुरुकुलों में सुरक्षित रखी जाती थीं। बौद्ध काल में तक्षशिला व नालंदा जैसे महत्वपूर्ण शैक्षिक केंद्रों में भी आयुर्वेद, ज्योतिष कला, राजव्यवस्था, विज्ञान आदि के ग्रंथ संगृहीत रहते थे। मुगलकाल में कई बादशाह अपने दरबार में विद्वानों द्वारा रचित संस्कृत और फारसी के विविध ग्रंथों का संकलन किया करते थे। सम्राट अकबर के पुस्तकालय में भी विविध विषयों के तकरीबन 25 हजार ग्रंथ थे। अगर हस्तलिखित ग्रंथों को बिना किसी व्यवस्था और सुरक्षा के रखने की इजाजत दे दी जाती तो आज हमारी सभ्यता के लिखित आलेख नष्ट हो गए होते। आज ये अभिलेख समाज के उपयोग के लिए उपलब्ध हैं, क्योंकि उनको सुरक्षित रूप से रखा गया था। पुस्तकालय के पुराने इतिहास पर अगर नजर डालें तो माना जा सकता है कि भारतीय पुस्तकालयों का प्रारंभिक स्वरूप पुरातन काल में भी रहा था। वस्तुतः प्रागैतिहासिक काल की शिलाओं, गुफाओं और अन्य माध्यमों में उत्कीर्ण चित्र-लिपि व लेखों में हम एक तरह से पुस्तकालय की आरंभिक छवि पा सकते हैं। तत्कालीन मानव समुदाय के मध्य विचारों को पहुँचाने में इन शिलालेखों की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

मुद्रण प्रणाली के विकास के साथ ही पुस्तकालयों के इस स्वरूप में परिवर्तन हुआ।

पुस्तकों को मनचाही संख्या में मुद्रित किया जाने लगा और तब पुस्तकालयों को समाज के उपयोग के लिए खोल दिया गया। मुद्रण प्रणाली के साथ धर्म, जो एक सामाजिक विचारधारा है, ने भी पुस्तकालयों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। विभिन्न धर्मों ने अपने मत के प्रचार के लिए मुद्रित सामग्री बाँटी तथा समाज का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए पुस्तकालयों की स्थापना की या उनकी स्थापना में सहयोग दिया। लोगों का ध्यान पुस्तक दान की ओर गया। मनु ने पुस्तक-दान माना है। साधन-संपन्न लोगों ने पुस्तकालयों को अपनी पुस्तकें दान देकर उन्हें धनी बनाया। औद्योगिक क्रांति, सार्वजनिक शिक्षा, पुस्तकालयोन्मुखी शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा तथा बौद्धिक मनोरंजन की विचारधारा ने पुस्तकालयों की स्थापना, विकास और उपयोगिता पर बल दिया।

“देश के हजारों छोटे-बड़े पुस्तकालय अविकसित दिखते हैं, जबकि देश का सबसे बड़ा पाठक वर्ग इन पुस्तकालयों से है। इन पुस्तकालयों में पाठकों के लिए अत्याधुनिक संसाधन देखना तो दूर आधारभूत पुस्तकालय सेवाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं। कई पुस्तकालयों में साहित्य के नाम पर कुछ अखबार ही दिखाई देते हैं। सरकार ने हर क्षेत्र, विभाग, स्कूल, कॉलेज, संस्थान, समाज के लिए पुस्तकालय के महत्व को माना है, लेकिन पुस्तकालय के विकास में हम अब भी बहुत पिछड़े हैं।”

शिक्षा के किसी भी युग में पुस्तकालय के बिना शिक्षा का अस्तित्व असंभव है, क्योंकि पुस्तकालय शिक्षा का मुख्य केंद्र है, जहाँ दुनियाभर का ज्ञान निहित है। समय के साथ इसका महत्व सर्वोपरि हो गया है। पुस्तकालयों में देश का सुनहरा भविष्य तैयार होता है। विश्व में तीसरे नंबर पर सबसे ज्यादा शिक्षा संस्थान वाला देश भारत है। पुस्तकालय जिंदगी का एक अनिवार्य हिस्सा है और यह विद्वानों के जीवन का एक अभिन्न अंग है। अध्ययन, अनुसंधान, किसी प्रश्न का हल ढूँढ़ना या विश्व के किसी भी प्रकार के विषयों पर नवीन ज्ञान प्राप्ति के लिए पुस्तकालय हमेशा हमारे साथ होते हैं। पुस्तकालय सूचना विज्ञान क्षेत्र में नित नए आविष्कार हो रहे हैं, जो पाठकों के ज्ञान की तृष्णा को शांत करने के लिए तत्पर हैं। आज पुस्तकालय अनुसंधान केंद्र के रूप में कार्य कर रहे हैं।

पारंपरिक पुस्तकालय से लेकर आज के वर्चुअल पुस्तकालय तक इस क्षेत्र के हर पहलू में बहुत सारे प्रगतिशील बदलाव हुए हैं। क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग पुस्तकालय होते हैं, जैसे—राष्ट्रीय पुस्तकालय, सार्वजनिक पुस्तकालय, व्यावसायिक पुस्तकालय, शैक्षिक पुस्तकालय और सरकारी पुस्तकालय। इनके अलावा विषय विभाग के अनुसार विशेष पुस्तकालय हैं, जैसे—चिकित्सा पुस्तकालय, रेलवे पुस्तकालय, बैंक पुस्तकालय, जेल पुस्तकालय, विभागीय पुस्तकालय, विभिन्न मंत्रालयों के पुस्तकालय, प्रांतीय पुस्तकालय, जिला पुस्तकालय, कानून पुस्तकालय, समाचार-पत्र पुस्तकालय, अंध पाठक हेतु पुस्तकालय, संगीत पुस्तकालय, बाल पुस्तकालय, सेना पुस्तकालय एवं मोबाइल (सचल) पुस्तकालय आदि ऐसे प्रत्येक क्षेत्र और विभाग का अपना पुस्तकालय होता है। दुनिया में किसी भी देश के अत्यंत दुर्लभ ग्रंथों, ताम्र-पत्र लेखन, फिल्मों, पत्रिकाओं, मानचित्रों, हस्तलिखित पत्रों व ग्रंथों, ग्रामोफोन अभिलेख, दृश्य-श्रव्य अभिलेख, ऐतिहासिक दस्तावेज, विश्व की मशहूर हस्तियों के दस्तावेज, जैसे—डायरी, पत्र, वार्तालाप रिकॉर्ड, मुहर आदेश-पत्र जैसे पुराने और दुर्लभ साहित्य भी पुस्तकालय से हमें इंटरनेट द्वारा एक क्लिक पर तुरंत उपलब्ध हैं। इसके साथ ही, दुनियाभर में सभी क्षेत्रों में विकसित साहित्य, घटनाओं, अनुसंधान, पेटेंट जैसी वर्तमान गतिविधियों का पूरा लेखा-जोखा पुस्तकालय उपलब्ध होता है। पाठकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नए संसाधन उपलब्ध हो रहे हैं, जो गुणवत्तापूर्ण ज्ञान के साथ ही पाठकों के समय की भी बचत करते हैं।

आज आधुनिक युग में पुस्तकालयों ने तेजी से प्रगति की है। हमारे देश के केंद्रीय संस्थानों के पुस्तकालय या कुछ बड़े निजी संस्थानों के पुस्तकालय विकसित नजर आते हैं, लेकिन जब हम अपने आस-पास के पुस्तकालयों को देखते हैं, तो ऐसा लगता है कि पुस्तकालयों का विकास कहाँ है? देश के हजारों छोटे-बड़े पुस्तकालय अविकसित दिखते हैं, जबकि देश का सबसे बड़ा पाठक वर्ग इन पुस्तकालयों से है। इन पुस्तकालयों में पाठकों के लिए अत्याधुनिक संसाधन देखना तो दूर आधारभूत पुस्तकालय सेवाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं। कई पुस्तकालयों में साहित्य के नाम पर कुछ अखबार ही दिखाई देते हैं। सरकार ने हर क्षेत्र, विभाग, स्कूल, कॉलेज, संस्थान, समाज के लिए पुस्तकालय के महत्व को माना है, लेकिन पुस्तकालय के विकास में हम अब भी बहुत पिछड़े हैं।

पुस्तकालय में पाठकों को केवल इस क्षेत्र का विशेषज्ञ ही बेहतर सेवाएँ प्रदान कर सकता है, लेकिन देश के कई राज्यों के स्कूलों, विभागों में वर्षों से पुस्तकालय कर्मचारियों की भरती ही नहीं हुई है। कर्मचारी सेवानिवृत्त होते रहते हैं, लेकिन नए कर्मचारी नहीं आते। कई स्थानों पर चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के भरोसे पुस्तकालय चल रहे हैं। कुशल कर्मचारी वर्ग, अच्छी पाठ्य-साहित्य सामग्री, सुविधाओं एवं पर्याप्त निधि का अभाव है। पाठक बुनियादी सेवाओं से भी वंचित हैं। पुस्तकालयों के विकास की अनदेखी की जा रही है। देश के हजारों पुस्तकालय अपने अस्तित्व की अंतिम लड़ाई लड़ रहे हैं, अर्थात् कई पुस्तकालय पर्याप्त निधि और बेहतर प्रबंधन की कमी के कारण खत्म होने के कगार पर हैं। वहाँ की बहुमूल्य पाठ्य-साहित्य सामग्री खराब हो रही है। कई पुस्तकालयों में पाठकों के लिए पर्याप्त मेज, कुर्सियाँ, पंखे, रोशनी, पीने का पानी, शौचालय, बिजली भी नहीं है और पुस्तकालय भवन की खिड़कियाँ, दरवाजे एवं दीवारें कमजोर हो गई हैं।

बारिश में छत से पानी टपकता है। पुस्तकालय भवन जर्जर हालत में हैं। यह स्थिति छोटे गाँवों से लेकर बड़े शहरों तक हर जगह नजर आती है। इस तरह के पुस्तकालयों में न ही अप-टू-डेट संसाधन हैं और न ही पुस्तकालय नियम के हिसाब से काम किया जाता है। एक तरफ हम शिक्षा को बढ़ावा दे रहे हैं और दूसरी तरफ पुस्तकालयों के विकास की अनदेखी कर रहे हैं। पुस्तकालय, पाठकों को स्कूल से जीवन के अंत तक साथ देते हैं और आज ऐसे कई पुस्तकालय खुद ही अपने अंतिम दिनों में पहुँच गए हैं। पुस्तकें अलमारियों अथवा बंद बोरों में सिमटी पड़ी हैं। निस्संदेह इस तरह की परिस्थितियों ने पुस्तकालय और आम पाठक वर्ग के बीच की दूरी को बढ़ाने का ही काम किया है, जिससे पुस्तकालय संस्कृति का दायरा सिमटता जा रहा है।

यदि शिक्षा प्रणाली को उन्नत करना है, तो पुस्तकालयों के विकास पर ध्यान देना बहुत जरूरी है। केंद्रीय, राज्य, स्थानीय प्रशासन को शिक्षा के अलावा अपने बजट में पुस्तकालय के लिए बड़ी मात्रा में वित्तीय सहायता प्रदान करनी चाहिए। देश के सभी प्रकार के पुस्तकालयों में हर वर्ष आवश्यकता अनुरूप कर्मचारियों की भरती होनी ही चाहिए। जिस प्रकार नगर अब एक महानगर का रूप ले रहे हैं व जनसंख्या के अनुसार शहर बढ़ रहे हैं, उस हिसाब से पुस्तकालयों की संख्या नहीं बढ़ रही है। पुस्तकालय में पढ़ने के लिए छात्र दूर-दूर से आते हैं, देश में पुस्तकालयों की बहुत कमी है। अतः पुस्तकालयों का विस्तार किया जाना अत्यावश्यक है।

प्रत्येक जिले में एक अंतरराष्ट्रीय स्तर का पुस्तकालय होना चाहिए, जिससे उसके सभी कस्बों और गाँवों के सभी पुस्तकालय इससे पूर्णतया जुड़े हों, ताकि हर गाँव के पाठकों को गाँव में ही अंतरराष्ट्रीय पुस्तकालय की सुविधा मिल सके। हर गाँव में, शहर के हर वार्ड में पुस्तकालयों की स्थापना होनी चाहिए। बच्चों को स्कूली शिक्षा के शुरुआती दिनों से ही पुस्तकालय के महत्व को बतलाया जाना चाहिए। प्रत्येक विश्वविद्यालय के पुस्तकालय को अंतरराष्ट्रीय मानक का पुस्तकालय बनाकर, विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले प्रत्येक कॉलेज के पुस्तकालय से ऑनलाइन जोड़ा जाना चाहिए। प्रत्येक स्कूल, महाविद्यालय और अन्य शैक्षिक विभागों को ऐसा पुस्तकालय बनाना होगा, जो अपने संस्था के साहित्य को ऑनलाइन अपलोड कर इसे डिजिटल पुस्तकालय का स्वरूप दे। हमारे देश के स्कूल पुस्तकालयों और सार्वजनिक पुस्तकालयों की हालत गंभीर है, इसे सुधारने के लिए राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय स्तर पर पुस्तकालय सूचना विज्ञान के क्षेत्र में अनुभवी विशेषज्ञों की समितियों का गठन किया जाना चाहिए। यह समिति विभिन्न स्तरों के पुस्तकालयों का मूल्यांकन कर सरकार को इसके विकासात्मक पहलुओं पर सुझाव देगी और अंतरराष्ट्रीय स्तर के पुस्तकालय के निर्माण के लिए कार्यपद्धति पर नजर रखेगी।

सार्वजनिक पुस्तकालयों का एक दूसरा स्वरूप यह भी है कि वे ज्ञान, शिक्षा और सूचना के भंडार होने के साथ ही स्थानीय समाज, इतिहास और संस्कृति के प्रबल संवाहक भी होते हैं। इस दृष्टि से इन्हें निकटवर्ती गाँव क्षेत्र से लेकर जनपद और राज्य स्तर तक सांस्कृतिक व बौद्धिक गतिविधियों का मुख्य केंद्र बनाने की पहल की जानी चाहिए। इसके तहत सार्वजनिक पुस्तकालयों को आमजन से जोड़ते हुए संस्कृति, कला, साहित्य, समाज, इतिहास, पर्यावरण और समसामयिक विषयों से जुड़े कार्यक्रमों के आयोजन कारगर साबित हो सकते हैं। समय-समय पर व्याख्यान, वार्ताएँ, साहित्यिक गोष्ठियाँ, प्रदर्शनी और फिल्म प्रदर्शन जैसे आयोजन किए जा सकते हैं। सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक तौर पर कमजोर लोगों के लिए भी इस तरह के आयोजनों को उपयोगी बनाया जा सकता है। स्थानीय समाज व संस्कृति पर केंद्रित शोधपरक आलेखों को पुस्तिकाओं अथवा मोनोग्राफ के रूप में प्रकाशित कर पाठकों के सामने लाने की पहल भी सार्वजनिक पुस्तकालयों के माध्यम से की जा सकती है।

वर्तमान दौर संचार और सूचना तकनीक का है। ऐसे में सार्वजनिक पुस्तकालयों को कंप्यूटर, इंटरनेट सुविधा, लाइब्रेरी नेटवर्किंग, डिजिटल लाइब्रेरी सर्विस, ऑनलाइन सेवा जैसी अन्य महत्वपूर्ण सुविधाओं से जोड़ने की भी जरूरत है। हालाँकि भारी-भरकम आर्थिक बजट के चलते ई-लाइब्रेरी और डिजिटलीकरण की योजना महँगी तो है, फिर भी राज्य स्तरीय सार्वजनिक पुस्तकालयों को इस तरह की आधुनिक सुविधाओं से जोड़ने के प्रयास जरूरी हैं।

समाज में सार्वजनिक पुस्तकालयों को प्रभावी बनाने के लिए अंतःपुस्तकालय आदान-प्रदान सेवाएँ, संदर्भ सेवाएँ व परामर्शी सेवाएँ जैसी सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए। पुस्तकालय को समृद्ध करने के लिए बाल-खंड की स्थापना और वरिष्ठ नागरिकों तथा शारीरिक तौर पर अक्षम पाठकों के लिए सचल पुस्तकालय जैसी व्यवस्थाओं पर भी सोचा जाना जरूरी है। इस दिशा में पेशेवर पुस्तकालय कर्मचारियों की पर्याप्त उपलब्धता, पाठकों के प्रति सहज व तत्पर सेवाएँ भी पुस्तकालयों को संपन्न बनाने में मददगार साबित होंगी। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय से उम्मीद की जानी चाहिए कि निश्चित रूप से वह सार्वजनिक पुस्तकालयों की बदहाल व्यवस्था को दुरुस्त करने और उन्हें समाजोन्मुख बनाने की दिशा में और आगे आएगा। पुस्तकालयों की आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिए गैर-सरकारी और कॉर्पोरेट जगत की संस्थाओं से भी सहयोग लिया जा सकता है। इसके लिए समाज के हर प्रबुद्ध व्यक्ति से उम्मीद की जानी चाहिए कि वह पुस्तकालयों को सँवारने में अपना योगदान सुनिश्चित करे, ताकि देश के वीरान पड़े सार्वजनिक पुस्तकालय पाठकों से गुलजार बने रहें। जिस समाज में पुस्तकालय संस्कृति संपन्न होगी, उसमें प्रजातांत्रिक मूल्य अधिक प्रखर होंगे। किसी ने सच ही कहा है कि अधिक संख्या में पुस्तकालय खोल कर पुलिस स्टेशनों की संख्या में कमी की जा सकती है।

पुस्तकालय, पाठक और पठन संस्कृति

डॉ. राजेश कुमार व्यास

संप्रति : संयुक्त निदेशक, राज्यपाल, राजस्थान। केंद्रीय साहित्य अकादेमी के सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित देश के चर्चित संस्कृतिकर्मी, कवि, कला आलोचक एवं यात्रा वृत्तांतकार। केंद्रीय ललित कला अकादमी की पत्रिका 'समकालीन कला' के एक अंक के अतिथि संपादक।

प्रकाशन : राजस्थान ललित कला अकादमी की पत्रिका 'आकृति' के 'लोक आलोक' और 'कलाओं के अंतःसंबंधों' पर प्रकाशित विशेष अंकों का संपादन। 'भारतीय कला', 'कलावाक्', 'रंगनाद', 'रस निरंजन' 'सुर जो सजे', (कला) 'नर्मदे हर', 'कश्मीर से कन्याकुमारी', (यात्रावृत्तांत), 'झरने लगते हैं शब्द', 'कविता देवै दीठ' (कविता संग्रह), 'सांस्कृतिक राजस्थान' आदि चर्चित पुस्तकें। दूरदर्शन द्वारा उनके लिखे एवं शोध पर आधारित 'डेजर्ट कॉलिंग' धारावाहिक का प्रसारण।

सम्मान : राजस्थान साहित्य अकादेमी, 'राहुल सांकृत्यायन', पत्रकारिता का 'माणक' अलंकरण सहित और भी अन्य सम्मान।

संपर्क : मोबाइल– 9829102862

'पुस्तक' अर्थगर्भित शब्द है। जन-मन के आलोक से जुड़ा। सभ्यताओं और संस्कृति के इतिहास को अपने में समाये हुए, इसने मनुष्य को भविष्य की उज्ज्वल राहों की ओर ही अग्रसर नहीं किया, उसने अपने आपको पहचानते हुए मानवीय संस्कारों के सूत्र भी प्रदान किए हैं। मूल रूप से 'पुस्तक' संस्कृत भाषा का शब्द है। हिंदी में हमने इसे ज्यों का

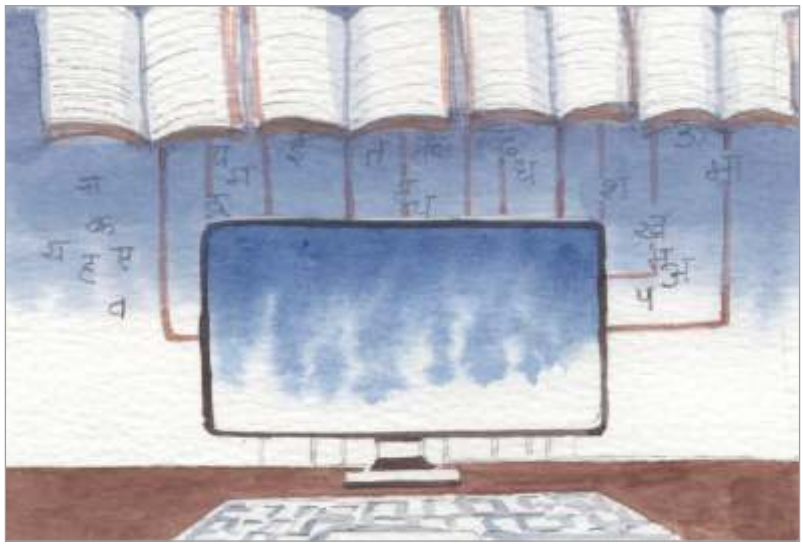

त्यों ग्रहण कर लिया गया है। कहीं यह पोथी है, तो कहीं किताब और अब इस सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के दौर में रूपांतरित होकर पुस्तक के अधुनातन रूप ई-बुक्स और ई-ऑडियोबुक्स हो गए हैं। पुस्तकालय में जो ढेर सारी किताबें जतन से सहेजी जाती हैं, वह ऑनलाइन अब आसानी से एक कंप्यूटर में सहेजी-पढ़ी जा सकती हैं। पुस्तकालयों के आधुनिक संस्करण हैं—ई-बुक्स के साथ किंडल पेपरव्हाइट या कोबो जैसे ई-रीडर। एक भरे-पूरे समृद्ध पुस्तकालय को अब आधुनिक एंड्रॉइड टैबलेट या आईपैड का उपयोग कर हर कोई अपने पास रख सकता है, पर पुस्तक का कागज पर जो छपा रूप होता है, उसकी अनुभूति का कहाँ कोई जोड़!

खैर, इन सबको पुस्तकों की विकास यात्रा के रूप में ही देखें, जिसको जैसा रूप पसंद आए, वह उसे वैसा ही ग्रहण करे। मूल बात है, पुस्तक से जुड़ी संस्कृति। मुझे लगता है, पुस्तकें सही अर्थों में लोक का आलोक हैं, जो कुछ लोक में समाया है, वह सब पुस्तकों के जरिये ही हम तक पहुँचा है। पहले जब मनुष्य प्रकृति पर निर्भर था, जो कुछ उसे पेड़-पौधों का कंद-मूल-फल मिलता, उसे और पक्षियों के बिखेरे, धरती पर स्वतः उगे धान से ही उसका गुजारा होता था। सूखा या अतिवृष्टि होती या फिर अन्य कोई प्राकृतिक आपदा होती तो मनुष्य को भूखों मरना पड़ता। तब किसी ने पहले-पहल सोचा होगा कि कैसे धरती अन्न उपजाती है और तब जंगल के किसी कोने की सफाई कर झूम खेती की शुरुआत हुई। आपातकाल के लिए मनुष्य ने अन्न सहेजकर रखना सीखा। मनुष्य की प्रकृति पर निर्भरता कम हुई और सभ्यता के बीजों का अंकुरण हुआ।

वैदिक संस्कृति के दौर में वेदों को ईश्वर प्रदत्त कहा गया, पर जब लिपि का

आविष्कार हुआ, तो कंठ-दर-कंठ सहेजे ईश्वर प्रदत्त इस ज्ञान को हमने सहेज लिया। ऋषियों के जरिये वेदों की व्याख्याएँ हुईं और इस तरह से श्रुति परंपरा का पुस्तकों में रूपांतरण हुआ। वेद ही क्यों, जो कुछ ज्ञान था, वह सब संहिताएँ बनीं। पहला पड़ाव है—वेद और फिर दूसरा उपनिषद। प्राचीन काल में गुरु अपने शिष्यों को अपने समीप बैठाकर जो ज्ञान देते, वह उपनिषद हुए। 'उपनिषद' शब्द का अर्थ है—'समीप उपवेशन' या समीप बैठना। तब विद्या प्राप्ति के लिए शिष्य को गुरु के पास बैठना होता था। ऋग्वेद को विश्व की पहली पुस्तक कहा गया है। क्यों? इसलिए कि श्रुति परंपरा का यह पहला लिपि में सहेजा रूप है। माने पुस्तक का पहला रूप-वेद। दूसरा है—उपनिषद। बहुत सारे उपनिषद हमारे यहाँ हैं। प्रायः सभी में जनक-याज्ञवल्क्य संवाद हैं। इसके बाद भारतीय परंपरा में मीमांसा

ग्रंथ आते हैं। माने जो कुछ ज्ञान है, उस पर गंभीर मनन और विचार। इसी से फिर संहिताओं का निर्माण होता है। संहिता माने एकत्र ज्ञान। चरक संहिता, सुश्रुत संहिता और आधुनिक रूप में कहें तो समान नागरिक संहिता। मुझे लगता है, पुस्तकों की यह जो संस्कृति हमारे यहाँ रही है, वही ज्ञान का मूल है। पुस्तकें हमारी सभ्यता के इतिहास की खिड़कियाँ ही नहीं हैं, यह वह प्रकाश-स्रोत हैं, जिनसे हम अपने अतीत को गुन और बुन सकते हैं। डॉ. राधाकृष्णन ने ठीक ही कहा है—'पुस्तकें संस्कृतियों के बीच पुल बनाने का कार्य करती हैं।'

पुस्तकें संस्कृति का एक तरह से आईना हैं, जो कुछ उनमें लिखा गया, उसे बाँचकर ही मनुष्य ने भविष्य की राहों का एक तरह से अन्वेषण किया है। इसलिए हर दौर में हुआ यह भी है कि पुस्तकों को नष्ट कर विचार-विरासत से लोगों को विलग करने की साजिशें भी रची जाती रही हैं। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान हिटलर ने जर्मनी में जो अत्याचार किए थे, उसका मूल था—लोगों के ज्ञान और विवेक को नष्ट-भ्रष्ट करना। ज्ञान और विवेक को नष्ट करने का सबसे बड़ा जरिया है, उस माध्यम पर हमला, जिससे व्यक्ति ज्ञानवान और विवेकवान होता है। हिटलर यह मानता था कि किताबें पढ़कर लोग शिक्षित हो जाते हैं और यह शिक्षा ही व्यक्ति को ज्ञान और विवेक प्रदान करती है। इसी से आम आदमी अपने अधिकारों के प्रति, लोकतंत्र के प्रति जागृत होता है। इसलिए उसने बर्लिन स्थित विश्वविद्यालय के विशाल पुस्तकालय की सारी किताबें एकत्रकर जलवा दीं।

जर्मनी में किताबें तो हिटलर ने जलवा दीं, परंतु लोग जल्दी ही सँभल भी गए। उन्होंने वहाँ किताब पढ़ने का एक बड़ा आंदोलन शुरू किया। जिस दिन हिटलर ने बर्लिन में किताबें जलाई थीं, उस दिन को लोग पुस्तक पर्व के रूप में मनाने लगे। आज भी उस दिन की अँधेरी स्मृति को उजास प्रदान करने के लिए पूरे बर्लिन शहर में जगह-जगह किताबों को पढ़कर सुनाया जाता है। रेस्तराओं में बैठकर, चौराहों पर बैठकर, पार्क में एकत्र होकर लोग उस एक दिन किताब पढ़ने के लिए अपने आपको समर्पित करते हैं।

असल में, किताबें शिक्षा और संस्कृति का मूल हैं। इस बात को तुर्की शासक बख्तियार खिलजी भी जानता था। इसीलिए उसने नालंदा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय मे आग लगवा दी। वह ज्ञान और विवेक की स्रोत पुस्तकों के जरिए भारत की संस्कृति को सदा-सदा के लिए मिटाना चाहता था। नालंदा विश्वविद्यालय में इतनी पुस्तकें थीं कि कहते हैं, पूरे तीन महीने तक पुस्तकालय में लगी आग धधकती रही। पर किताबों से ज्ञान व्यक्ति के मस्तिष्क में पहुँचकर सदा के लिए संगृहीत हो जाता है, इसलिए वह नहीं भी रहती हैं तो उनमें निहित आलोक बचा रहता है। भारतीय श्रुति परंपरा से बड़ा इसका उदाहरण और क्या होगा! हमने कंठ-दर-कंठ जो सुना, उसे आज भी सहेजते जा रहे हैं। पुस्तकालयों में संगृहीत महती पुस्तकें इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं।

मुझे यह भी लगता है कि व्यक्ति को ज्ञान संपन्न करने के साथ ही पुस्तकें उसे कल्पनाशील, विचारवान और संवेदनशीलता के साथ तर्कशक्ति में और विपरीत हालात में भी लड़ने के लिए भी निरंतर प्रेरित करती हैं। सृजनात्मक शिक्षा और सार्थक शिक्षा के लिए यह बहुत जरूरी है कि पाठ्य-पुस्तकों के साथ ही विद्यार्थियों को ऐसी पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाए, जिनसे उनके व्यक्तित्व का विकास हो।

स्वामी विवेकानंद जी ने युवाओं के लिए कभी उपनिषद के एक मंत्र को पुनर्नवा किया था। बहुत से स्तरों पर इसे स्वामी विवेकानंद जी का जोश भरा उद्‌बोधन ही माना जाता है। मूलतः यह कठोपनिषद का मंत्र है—'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।' यह मंत्र कहता है कि 'उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक कि अपने लक्ष्य तक न पहुँच जाओ।' पुस्तकों ने इतिहास बदला है, पुस्तकों से प्रेरणा पाकर ही बहुतों ने अपने लक्ष्य को सहज प्राप्त किया है।

इसलिए पुस्तकों का महत्व हर दौर में सदा बना रहेगा। प्राचीन भारत में नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला, वल्लभी, ओदांतपुरी जैसे प्रख्यात विश्वविद्यालय विश्व स्तरीय शिक्षा की परंपरा का ही प्रतिनिधित्व नहीं करते थे, इनके पुस्तकालय भी जग प्रसिद्ध थे। संसारभर की पुस्तकों के ज्ञान को, हस्तलिखित ग्रंथों को और वहाँ पढ़ने वाले आचार्यों ने अपने अनुभवों को इन पुस्तकालयों में भावी विद्यार्थियों की संपत्ति के रूप में सहेज कर रखा था, इसीलिए इन पुस्तकालयों का भी बहुत अधिक महत्व हर युग में रहा।

इधर, पुस्तकों को लेकर एक नई समस्या बताई जा रही है कि हिंदी में पुस्तकों के पाठक कम हो गए हैं कि पुस्तकें अब नहीं पढ़ी जा रहीं कि पुस्तकों का स्थान अब ई-पुस्तकों ने ले लिया है, पर इस सबके बावजूद हिंदी में पुस्तक बाजार तेजी से बढ़ रहा है। नित नए प्रकाशक इस बाजार में प्रवेश कर रहे हैं। एक ओर मुद्रित शब्द के अतीत होते चले जाने का बोलबाला है, तो दूसरी ओर पुस्तकें बहुतायत से छप रही हैं, बिक रही हैं और 'लिटरेचर फेस्टिवल्स', 'साहित्य आज तक', 'समानांतर साहित्य उत्सव', 'साहित्य पर्व' और कुछ स्थानों विशेष पर आधारित ऐसे ही बहुतेरे आयोजनों से पुस्तक-लेखक को प्रचारित करने, प्रकाशकों की अपनी स्थापनाओं का भी एक नया ट्रेंड बाजार में चल निकला है। पर विडंबना यह भी है कि कुछेक प्रकाशन समूहों, लेखकों की बिरादरी ही इनमें नजर आती है या फिर इस बिरादरी ने जिन्हें स्थापित करने की ठानी है। वहीं, हर तरफ प्रमुखता से प्रचारित किए जा रहे हैं। पुस्तकें भी ऐसे-ऐसे शीर्षकों और सज्जा से प्रकाशित कर प्रचारित करने की होड़ मच रही है, जिससे पाठक उसे खरीदे ही खरीदे। यह देखने के लिए कि आखिर उनमें है क्या? हिंदी, अंग्रेजी भाषा में भी जैसे कोई भेद नहीं रह गया है। साहित्य के नाम पर रहस्य, रोमांच के साथ ही भूत-प्रेत गाथाओं से संबद्ध प्रकाशनों की भी बाजार में जैसे बाढ़ आ गई है।

बहरहाल, पुस्तकों और पुस्तकालयों के संदर्भों में जाते इस बात को भी जान लें कि हिंदी में लाखों-करोड़ों के व्यवसाय के बावजूद हिंदी के बहुत कम ही ऐसे लेखक हैं, जिन्हें रॉयल्टी मिलती है। पुस्तक प्रकाशन की हमारे यहाँ की विडंबना यह है कि इसमें प्रकाशक तो फिर भी कमाई कर अपने व्यवसाय को बढ़ा सकता है, परंतु लेखक के लिए यह संभव नहीं है कि वह इसके भरोसे ही अपनी आजीविका चला सके। पुस्तकों के दाम लागत से 7-8 गुना अधिक रखे जाते हैं। स्वाभाविक ही है, दूसरी जरूरतों के सामने हिंदी पाठक की पुस्तक खरीदने की हिम्मत ही नहीं होती, फिर भी वह खरीद तो रहा ही है। इधर, प्रकाशन का एक बड़ा सच यह भी बनता जा रहा है कि बहुतेरे शौकिया अपने को बतौर लेखक स्थापित करने के लिए प्रकाशकों को मनमाँगे दाम देकर पुस्तकें प्रकाशित करवाने लगे हैं। सेवानिवृत्त नौकरशाह, राजनेता, बड़े अधिकारियों की जमात भी इधर लेखन में बड़े स्तर पर दिखने लगी है। कुछ ट्रस्ट, संस्थान बड़े प्रकाशकों संग साझा होकर कुछेक अच्छी पुस्तकें पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं, परंतु उनके भी अपने लेखकों के घेरे हैं। प्रकाशक को पुस्तक के पेटे अच्छी-खासी रकम देने के अलावा पुस्तकों को बिकवाने का कार्य भी ऐसे संस्थान करते हैं, परंतु उनके अपने एजेंडों में पाठक-संस्कृति का विकास प्रमुख है, कहा नहीं जा सकता। पुस्तक मेलों, साहित्य उत्सवों में भी प्रकाशकों, रसूखदार जमात के स्थापित लेखकों की उपस्थिति के साथ ही सेलिब्रिटी के जरिए भीड़ एकत्र करना ही बड़ा उद्देश्य हो रहा है। इधर, लेखकों की भी एक जमात इधर ऐसी हो चली है, जो प्रकाशकों के बतौर प्रचार अधिकारी कार्य करने लगी है। माने जिसे प्रकाशक चाहे, उस पुस्तक-लेखक को यह अपने सुनियोजित तरीके से इस कदर प्रचारित-प्रसारित करते हैं कि उनके फैलाए भ्रमजाल में बेचारा नया पाठक भ्रमित हो, पुस्तकें खरीदकर स्वयं भी कई बार लेखक होने का मुगालता पाल लेता है।

हिंदी पुस्तक प्रकाशन व्यवसाय बहुत से स्तरों पर सरकारी खरीद पर भी निर्भर है। इस खरीद की अपनी सीमाएँ और प्रक्रिया की खामियाँ हैं, तो प्रकाशक की इसमें अपनी मजबूरियाँ भी हैं। कागज, बाइंडिंग और अन्य खर्चों में हुई बढ़ोतरी भी पुस्तकों के दाम अधिक रखना बड़ा कारण है। यह कड़वा सच तो अभी भी है कि अच्छी पुस्तकें स्टॉल पर कम बिकती हैं। इस स्थिति में हिंदी में बेहतरीन कोई लिखता भी है, तो उसे कोई खास रॉयल्टी नहीं मिल पाती है। इसीलिए अधिकांश पढ़े जाने वाले, या कहें जिनके बूते पुस्तकों के प्रति अभी भी विश्वास कायम है। उनकी ओर नजर उठाकर देखेंगे तो यह भी पाएँगे कि लेखन के साथ-साथ वह या तो नौकरी करते हैं या फिर अन्य किसी व्यवसाय से उनकी आजीविका चलती है। हालाँकि हिंदी के बड़े प्रकाशक इस बात का दावा करते हैं कि वे अपने लेखकों को पूरी-पूरी रॉयल्टी देते हैं, पर सच सभी जानते हैं। हाँ, कुछ बड़े

प्रकाशक अभी भी अपवाद हैं और नेशनल बुक ट्रस्ट, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, ज्ञानपीठ, प्रकाशन विभाग जैसे संस्थान भी लेखक को पारदर्शिता से रॉयल्टी देते हैं। इन पंक्तियों के लेखक को पिछले वर्ष एक-एक लाख की रॉयल्टी ऐसे प्रकाशनों से उनकी लिखी पुस्तकों के लिए मिली है, परंतु जरूरत इस बात की भी है कि ऐसे प्रकाशक पाठकों तक अपनी पहुँच बढ़ाएँ, ताकि कम कीमत पर अच्छी पुस्तकें अधिकाधिक पहुँच सकें और लेखक भी लिखे और केवल लिखे पर और अधिक भरोसा कर सके।

> **"मुझे लगता है कि देश में अभी भी पुस्तक व्यवसाय के लिए किसी भी प्रकार की कोई ठोस नीति नहीं है। केंद्र से राज्य सरकारें हिंदी पुस्तकों की खरीद के लिए करोड़ों का बजट तो रखती हैं, परंतु उनमें पुस्तकों को क्रय करने के लिए किसी प्रकार की पारदर्शी नीति नहीं रखी गई है। पुस्तकों की प्रकाशकों से सीधे-सीधे की जाने वाली थोक खरीद का परिणाम यह हुआ है कि भ्रष्टाचार तो चरम पर पहुँचा ही है, अच्छी पुस्तकों के भी कोई मायने नहीं रहे हैं। केंद्र एवं राज्य सरकारें प्रतिवर्ष पुस्तकों के लिए रखे अपने बजट के लिए प्रकाशकों से पुस्तकों हेतु प्रस्ताव माँगती हैं। प्रकाशक को येन-केन-प्रकारेण अपने प्रकाशन संस्थान की पुस्तकें ही बेचनी होती हैं, ऐसे में वह कई नामों से प्रकाशन संस्थान बनाकर बहुतेरी बार वांछित विषय के अनुरूप ऐसी पुस्तकें भी प्रस्तुत कर देता है, जो दरअसल प्रकाशित होती नहीं हैं, बस बेचने के लिए ही उसे कंपोज कर आकर्षक कवर में प्रस्तुत कर देता है।"**

मुझे लगता है कि देश में अभी भी पुस्तक व्यवसाय के लिए किसी भी प्रकार की कोई ठोस नीति नहीं है। केंद्र से राज्य सरकारें हिंदी पुस्तकों की खरीद के लिए करोड़ों का बजट तो रखती हैं, परंतु उनमें पुस्तकों को क्रय करने के लिए किसी प्रकार की पारदर्शी नीति नहीं रखी गई है। पुस्तकों की प्रकाशकों से सीधे-सीधे की जाने वाली थोक खरीद का परिणाम यह हुआ है कि भ्रष्टाचार तो चरम पर पहुँचा ही है, अच्छी पुस्तकों के भी कोई मायने नहीं रहे हैं। केंद्र एवं राज्य सरकारें प्रतिवर्ष पुस्तकों के लिए रखे गए अपने बजट के लिए प्रकाशकों से पुस्तकों हेतु प्रस्ताव माँगती हैं। प्रकाशक को येन-केन-प्रकारेण अपने प्रकाशन संस्थान की पुस्तकें ही बेचनी होती हैं, ऐसे में वह कई नामों से प्रकाशन संस्थान बनाकर कई बार वांछित विषय के अनुरूप ऐसी पुस्तकें भी प्रस्तुत कर देता है, जो दरअसल प्रकाशित होती नहीं हैं, बस बेचने के लिए ही उसे कंपोज कर आकर्षक कवर में प्रस्तुत कर देता है। ये ऐसी पुस्तकें होती हैं, जिन्हें विशेष मकसद से लेखक से नहीं, बल्कि 'कटिंग-पेस्टिंग' विशेषज्ञों की मदद से संयोजित किया जाता है। बिक्री का ऑर्डर मिल जाता है, तो पूरी तरह से पुस्तक प्रकाशित कर उसकी आपूर्ति भी तत्काल कर दी जाती है। इस सारी प्रक्रिया में लेखक की पूछ का सवाल ही कहाँ पैदा होता है।

पुस्तकों के प्रकाशन का एक बड़ा सच साहित्य अकादमियों, केंद्रीय हिंदी संस्थान और अन्य सरकारी संस्थाओं के जरिए लेखकों को दिया जाने वाला पांडुलिपि सहयोग भी है। मुझे लगता है कि यह दरअसल लेखकों को दीन-हीन बनाने की ही एक प्रक्रिया है। बहुतेरे लेखकों को केंद्र एवं राज्य सरकार की अकादमियाँ, संस्थान विभिन्न योजनाओं के तहत पांडुलिपि सहयोग देती हैं। पांडुलिपि सहयोग से लेखक, प्रकाशक की मदद से पुस्तकें प्रकाशित करवाता है और जो सहयोग लेखक को मिलता है, वह प्रकाशक अपनी जेब में डालकर लेखक को उसकी खुद की पुस्तक की कुछेक प्रतियाँ देकर ही संतुष्ट कर देता है। पुस्तक में प्रकाशन सहयोग लेखक से लेने के अलावा बाद में इसी पुस्तक को सरकारी खरीद में खपाकर प्रकाशक तो फिर भी पुस्तक से मालामाल हो जाते हैं, परंतु लेखक की स्थिति जस की तस रहती है। यदि स्वयं उसे पुस्तक की आवश्यकता पड़े, तो वह प्रकाशक की कथित मोटी छूट पर उसे प्राप्त कर सकता है, पर ऐसी प्रकाशित पुस्तकों में भी स्तरीय पुस्तकों का दस प्रतिशत से अधिक नहीं मिलेगा।

बहरहाल, बड़ा सच यही है कि आज भी हिंदी पुस्तक, पाठकों के पारिवारिक बजट का हिस्सा नहीं है। इसलिए कि पुस्तकें जिस दाम में पाठकों को मिलनी चाहिए, उस दाम में मिलती नहीं है। पर छपी पुस्तकों को पढ़ने का चाव अभी भी पाठकों में है, इसे समझते हुए अच्छे साहित्य के प्रकाशन और उसको पाठकों तक पहुँचाने की सुनियोजित रणनीति पर काम करने की अभी भी जरूरत है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जब दर्शकों की रुचियाँ, उनकी ज्ञान की जिज्ञासा और प्रवृत्ति को दृष्टिगत रखते हुए कार्यक्रमों का निर्माण और दर्शकों तक येन-केन-प्रकारेण अपनी पहुँच सुनिश्चित कर लेता है तो क्यों नहीं प्रकाशन में भी यही किया जाए। बड़े प्रकाशकों को भी चाहिए कि वह व्यावसायिक हितों की पूर्ति के साथ पाठकों तक पुस्तक पहुँचाने के उद्देश्य से भी किसी विशेष योजना के तहत न्यूनतम या फिर बगैर लाभ के उद्देश्य से भी कुछ निरंतर करें।

आखिर, उद्देश्य अच्छी पुस्तकें पाठकों तक पहुँचाना भी तो हो। इसीलिए, पुस्तक संस्कृति के विकास के लिए वृहद स्तर पर कार्य किए जाने की जरूरत है। पुस्तक मेलों में पुस्तकें कितनी बिकती हैं, यह एक बात है, पर दूसरी बात यह भी है कि यह भी देखा जाए कि इन मेलों से पुस्तक-पाठक कितने बनते हैं। मूल बात है—पाठक संस्कृति का विकास। पुस्तकालयों की संस्कृति का प्रसार। यह बात सच है, पाठक पुस्तकें पढ़ना चाहते हैं, बशर्ते, उन्हें वे कम कीमत पर मिलें। क्या ही अच्छा हो, विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर हिंदी के बड़े प्रकाशक अपने व्यावसायिक हितों के साथ पाठकों के हित में लेखकों के सहयोग से ऐसी कोई मुहिम चलाने का आगाज करें।

नई दिल्ली के भारत मंडपम् में आयोजित

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2024 की झलकियाँ

ग्रामीण क्षेत्र के पुस्तकालय की कथा-व्यथा

मेरे एक शोध छात्र का पी-एच.डी. मौखिकी का साक्षात्कार था। उसने मेरे निर्देशन में पी-एच.डी. उपाधि पाने के लिए अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत किया था। विषय था 'द्विवेदी युगीन पत्रिकाओं का साहित्यिक अनुशीलन'। डॉ. विद्यानिवास मिश्र वायवा ले रहे थे। मैं भी शोध-छात्र के साथ था। 'शोध प्रबंध' में प्रस्तुत संदर्भ सूची में जिन पत्रिकाओं के विभिन्न अंकों का उल्लेख था, उनको पढ़कर डॉ. मिश्र ने शोध-छात्र से जानना चाहा कि क्या वह 'नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता' गए थे। शोध-छात्र ने उत्तर दिया था, "नहीं पंडितजी! मैंने 'रमा लाइब्रेरी' से यह शोध सामग्री जुटाई है।" डॉ. मिश्र शायद

श्यामसुंदर दुबे

संप्रति : पूर्व प्राचार्य, स्नातकोत्तर महाविद्यालय एवं पूर्व निदेशक, मुक्तिबोध सृजन पीठ, डॉ. हरीसिंह गौर, वि.वि. सागर (म.प्र.)।

प्रकाशन : लोक संस्कृति पर केंद्रित 12 पुस्तकों सहित अब तक 50 पुस्तकों से अधिक पुस्तकें प्रकाशित।

सम्मान : उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का 'साहित्य भूषण' केंद्रीय हिंदी संस्थान का सुब्रह्मण्य भारती सम्मान, म.प्र. साहित्य अकादमी के बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी एवं ईसुरी पुरस्कार आदि।

संपर्क : मोबाइल– 9977421629

ई-मेल : shantanudubey478@gmail.com

'रमा लाइब्रेरी' को जानते थे। उन्होंने कहा था कि रमाजी एक अच्छे पुस्तक संग्रही व्यक्ति थे, शोध-छात्र का यह सौभाग्य था कि उसको 'रमा लाइब्रेरी' का उपयोग करने का अवसर सुलभ हुआ।

जिस 'रमा लाइब्रेरी' की मैं यहाँ चर्चा कर रहा हूँ, वह मेरे हटा कस्बे में स्थित थी। हटा, मध्य प्रदेश के दमोह जिले का एक छोटा-सा तालुका है। यहाँ के निवासी थे—लक्ष्मी प्रसाद मिस्त्री 'रमा'! पेशे से राजमिस्त्री और स्वभाव से साहित्यकार 'रमाजी' द्विवेदी युगीन प्रसिद्ध कवि रहे हैं, उनका व्यसन पुस्तकों और पत्रिकाओं को संगृहीत करने का था। हाड़तोड़ परिश्रम के बाद जो अर्जित करते थे, उसका बड़ा हिस्सा पुस्तकों पर व्यय कर देते थे। इस क्रम में उनके पास दस हजार से ऊपर पुस्तकों और तत्कालीन पत्रिकाओं की अनेक कायलों से परिपूर्ण एक बड़ी लाइब्रेरी थी। इन पुस्तकों में संस्कृत, अंग्रेजी और हिंदी के अलावा उर्दू की पुस्तकें भी थीं। विज्ञान, ज्योतिष, आयुर्वेद, साहित्य, धर्म, कला और दर्शन आदि विषयों की पुस्तकों के साथ 'सुकवि', 'माधुरी', 'सरस्वती', 'चाँद', 'आर्यमित्र', 'रसिकमित्र' 'रसवंती', 'भारती', 'श्री शारदा' जैसी अनेक पत्रिकाओं के बारह-बारह महीनों की संकलित फाइलें उनकी लाइब्रेरी में थीं। इन फाइलों की जिल्दबंदी भी रमाजी स्वयं करते थे। इनके संग्रह के लिए उनके पास अलमारियाँ थीं। ये पुस्तकें विषयवार सहेजी गई थीं। इनकी कैटेलॉगिंग व्यवस्थित थी।

हटा जैसी छोटी बस्ती में यह लाइब्रेरी ज्ञान की लालटेन जैसी प्रकाशित थी। यहाँ के छात्र और पढ़े-लिखे लोग इस लाइब्रेरी का उपयोग करते थे। मैं स्वयं जब आठवीं में पढ़ता था, तब इस लाइब्रेरी का सदस्य बन

गया था। यहीं से मैंने साहित्य का 'ककहरा' सीखा। मैं ही नहीं, इस क्षेत्र के अनेक ज्ञान-पिपासु जन इस लाइब्रेरी से लाभान्वित हुए। उस समय उस संपूर्ण अँचल में जब किसी को कोई संदर्भ देखना पड़ता था, तब वह 'रमा लाइब्रेरी' में पहुँच जाता था।

"अपनी वृद्धावस्था और अपनी जर्जर आमदनी के कारण 'रमाजी' अपनी लाइब्रेरी की देखभाल करने में असमर्थ हो रहे थे। उन्हें लगने लगा था कि उनका परिवार भविष्य में इसको सुरक्षित न रख पाएगा, इसलिए उन्होंने अपनी प्रिय लाइब्रेरी के एक बड़े हिस्से को रामवन (सतना) म.प्र. में स्थानांतरित कर दिया था। रामवन में उस समय शारदा प्रसाद जी एक नई परिकल्पना के तहत 'तुलसी शोध पीठ' की स्थापना में जुटे थे। सतना से लगभग दस किलोमीटर दूरी पर एक वृहत लाइब्रेरी आकार ले रही थी। उसी में 'रमा लाइब्रेरी' का प्रभाग आ गया था।"

यह वह जमाना था, जब बड़े नगरों में ही लाइब्रेरी होती थी। देश में 'रमाजी' जैसे कुछ पुस्तक-प्रेमी गाँव-खेड़ों में इस तरह के अध्ययन केंद्रों की अलख जगाये हुए थे। यह 19वीं शती का अंतिम और 20वीं शती का प्रारंभिक दौर था। अनेक असुविधाओं के मध्य ये लोग अपने व्यक्तिगत प्रयासों से यह सब कर रहे थे, तो यह बड़ा काम था।

अपनी वृद्धावस्था और अपनी जर्जर आमदनी के कारण 'रमाजी' अपनी लाइब्रेरी की देखभाल करने में असमर्थ हो रहे थे। उन्हें लगने लगा था कि उनका परिवार भविष्य में इसको सुरक्षित न रख पाएगा, इसलिए उन्होंने अपनी प्रिय लाइब्रेरी के एक बड़े हिस्से को रामवन (सतना) म.प्र. में स्थानांतरित कर दिया था। रामवन में उस समय शारदा प्रसाद जी एक नई परिकल्पना के तहत 'तुलसी शोध पीठ' की स्थापना में जुटे थे। सतना से लगभग 10 किमी. दूरी पर एक वृहत लाइब्रेरी आकार ले रही थी। उसी में 'रमा लाइब्रेरी' का प्रभाग आ गया था। वहाँ से 'मानसमणि' नाम की पत्रिका भी प्रकाशित होती थी। रमाजी से मिलने दूर-दूर से साहित्यकार और विद्वज्जन आते थे, और रमाजी की सहजता का लाभ उठाकर कुछ किताबें ले जाते थे, जो वापस नहीं होती थीं।

इस सबके बाद भी 'रमा लाइब्रेरी' विपन्न नहीं हुई थी, वह बौद्धिक जिज्ञासुओं का मानसिक भरण-पोषण करने में समर्थ थी, लेकिन 'रमाजी' के निधन के बाद यह ज्ञान-केंद्र बिखरने की कगार तक आ गया। आर्थिक संकटों से जूझते 'रमाजी' के परिवार ने अपना वह मकान ही बेच दिया, जिसके एक कमरे में यह लाइब्रेरी थी। मकान खरीदने वाला खाली मकान चाहता था, अब उस लाइब्रेरी को स्थानांतरित करने की समस्या आ गई। तब तक पुस्तक-प्रेमी परिवारों का दायरा सिमट चुका था। किसी की रुचि नहीं थी कि वह इस सफेद हाथी को पाल सके। ध्यातव्य है कि मैं यह, कस्बाई स्थितियों के परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट कर रहा हूँ।

मैं और मेरे जैसे कुछ लोगों पर इस लाइब्रेरी का ऋण था, इसलिए मैंने अपने महाविद्यालय में इस लाइब्रेरी की संभावनाएँ तलाशीं और प्रशासनिक स्तर पर इस हेतु पहल प्रारंभ की। मैं अपने इस उद्यम में सफल हुआ। 'रमाजी' के परिवार ने भी इस हेतु स्वीकृति दे दी।

आज इस लाइब्रेरी का बड़ा, लेकिन बचा-खुचा हिस्सा महाविद्यालय की लाइब्रेरी में सुरक्षित है। इस हिस्से में एक बहुत लुप्तप्राय साहित्यिक इतिहास का परिदृश्य जीवित है। शोध-छात्र और रुचि रखने वाले 'रमा लाइब्रेरी' का उपयोग कर रहे हैं।

इस तरह से व्यक्तिगत प्रयासों से निर्मित लाइब्रेरियाँ अब बहुत सीमित हैं, किंतु अपने समय में इस तरह की लाइब्रेरियों ने पठन-पाठन के क्षेत्र में अपनी भूमिका का निर्वहन कस्बाई और ग्रामीण इलाकों में शिद्दत के साथ किया था। इस रूप में अब जब पुस्तक-परिवेश सिकुड़ रहा है, तब ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालय की अवधारणा को विकसित करने की जरूरत रहेगी।

पुस्तकालय योद्धा
लोगों में जगा रहे पढ़ने की अलख

मोबाइल ने लगभग पूरी दुनिया को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। सभी सबेरे जागने से लेकर रात में सोने तक मोबाइल पर आँखें गड़ाए रहते हैं। वास्तव में, मोबाइल जीवन का महत्वपूर्ण और अभिन्न हिस्सा बन चुका है। कई वर्षों से मोबाइल के दुष्प्रभाव भी बताए जा रहे हैं। इसके इस्तेमाल संबंधी जन-जागृति भी फैलाई जा रही है, लेकिन लोग इसकी लत छोड़ नहीं पा रहे हैं। वे देखने, पढ़ने और सुनने के लिए मोबाइल के जाल में फँस ही चुके हैं। वे किताबों की ओर नहीं मुड़ पा रहे हैं। इन सबके बावजूद, पुस्तकालयों से जुड़े कुछ योद्धा, जनमानस में पढ़ने की अलख जगाए जा रहे हैं।

शिव मोहन यादव

जन्म : 01 मई, 1990, ग्राम नेरा कृपालपुर, कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा : बुंदेलखंड विश्वविद्यालय से जनसंचार एवं पत्रकारिता में स्नातकोत्तर, डीएवी कानपुर से हिंदी साहित्य में परास्नातक। यूजीसी नेट।

संप्रति : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत में संपादकीय सहायक के रूप में कार्यरत।

प्रकाशन : 'लल्ला और बिट्टी', 'सिंहों के अवतार तुम्हीं हो', 'चुनिंदा बाल कविताएँ', 'गन्ना' समेत बच्चों और युवाओं के लिए छह पुस्तकें प्रकाशित, कई आलेख आदि प्रकाशित।

सम्मान : पं. प्रताप नरायण मिश्र युवा साहित्यकार सम्मान, अखिल भारतीय बाल कल्याण संस्थान का सम्मान, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से दो बार सम्मानित।

संपर्क : मोबाइल– 9616926050

ईमेल– shivmohanyadavkanpur@gmail.com

बच्चे किताबों के बेहद करीबी होते हैं, किताबें उन्हें आकर्षित भी करती हैं। 'बुक बाइक' नामक मोबाइल लाइब्रेरी की शुरुआत बकुल फाउंडेशन द्वारा भुवनेश्वर में की गई है। यह फाउंडेशन मलिन बस्ती के बच्चों के बीच काम करता है। इसके स्वयंसेवी आलोक कुमार स्वैन आईटी के युवा इंजीनियर हैं। आइसक्रीम गाड़ी को देखकर उनके दिमाग में 'मोबाइल बुक बाइक' का विचार आया। उन्होंने इसे अपनी माँ की स्मृति में दान महोत्सव के अवसर पर बच्चों के लिए उपहारस्वरूप बकुल फाउंडेशन को प्रदान किया। इसका उद्घाटन पुलिस कमिश्नर सौम्येंद्र प्रियदर्शी, जन शिक्षा आयुक्त अस्वथी एस. ने किया। यह मोबाइल लाइब्रेरी शांति नगर एवं समीपस्थ बच्चों के चेहरे पर चमक लाने का काम करती है। फाउंडेशन के संस्थापक सुजीत महापात्रा बताते हैं कि यह लाइब्रेरी नियमित मलिन बस्ती के बच्चों समेत सभी प्रकार के बच्चों के दरवाजों तक पहुँचती है। उनका मानना है कि इससे बच्चों में पढ़ने की भूख जागेगी और दरवाजे पर किताबें पाकर वे उसे शांत भी कर पाएँगे।

यह फाउंडेशन लोगों को शिक्षित और जागरूक करने के लिए पुस्तकालय के भिन्न-भिन्न स्वरूपों को सामने लाया है। बस लाइब्रेरी की शुरुआत भी इसी फाउंडेशन ने की थी। जब संस्थापक से पूछा गया कि मोबाइल के दौर में भी लोग किताबों की ओर कैसे आकर्षित होते हैं? उन्होंने बताया कि हम किताबों को विभिन्न माध्यमों से लेकर लोगों के बीच जाते हैं। इनमें 'पेड़ पुस्तकालय' शुरू किया। इसके लिए ऐसी जगह वाले पेड़ चुने, जहाँ लोगों का आवागमन अधिक हो, उस पेड़ के नीचे किताबें लगाते थे, तो लोग इन्हें पढ़ने में रुचि लेते थे। 'पार्क पुस्तकालय' शुरू किया, जिसके माध्यम से पार्क में फ्रिज नुमा सेल्फ में किताबें रखते थे, पार्क में आने वाले लोग किताबें जरूर देखते-पढ़ते थे। अब 'बस लाइब्रेरी' लोगों को आकर्षित करती है। बस में करीब 4000 पुस्तकें हैं। बस को नियमित भुवनेश्वर के 'कालाभूमि' नामक स्थान पर लाया जाता है, क्योंकि यह एक चर्चित और सुंदर स्थान है।

नासिक, महाराष्ट्र में 73 वर्ष की दादी भीमाबाई जोंधले ने भी वाचन-संस्कृति को

बढ़ावा देने, मोबाइल दूर करने के लिए किताबों का होटल खोला है। रिलैक्स कॉर्नर नामक होटल में उन्होंने युवा पीढ़ी के लिए किताबें सजाई हैं, ताकि समाज में पठन-वाचन संस्कृति बढ़े। इसीलिए उनके होटल में स्वादिष्ट भोजन के साथ बेहतरीन पुस्तकें भी उपलब्ध हैं, इसी वजह से उनका होटल पूरे महाराष्ट्र में चर्चित हो गया है। होटल में बैठकर पुस्तकालय जैसा अनुभव होता है। उन्होंने मेन्यू कार्ड कम और पुस्तकें ज्यादा रखी हैं। वे चाहती हैं कि ऑर्डर आने तक ग्राहक किताबें पढ़ें। यहाँ उन्होंने सलीके से किताबों को सजाया है। इस काम में उनका बेटा प्रवीण और बहू प्रीति भी सहयोग करते हैं। भीमाबाई का यह होटल नासिक के ओझर से 10 किमी. की दूरी पर है।

उत्तराखंड के नैनीताल जिले में कार्यरत 'हिमोत्थान' संस्था के शुभम बधानी ने कोटाबाग ब्लॉक के जलना, बाघनी आदि गाँवों में 'घोड़ा लाइब्रेरी' की शुरुआत की। इसके तहत उत्तराखंड की ऊँची-नीची दुर्गम पहाड़ियों पर भी घोड़े के माध्यम से बच्चों तक सुंदर किताबें पहुँचाई जा रही हैं।

'ऊँट पर किताबें' सुनकर अजीब ही लगेगा, लेकिन रेगिस्तान के जहाज का उपयोग भी जोधपुर में संयुक्त निदेशक प्रेमचंद खालसा ने किया है। वे दूरस्थ गाँवों में ऊँट पर किताबें ले जाकर छोटे बच्चों को पढ़ा रहे हैं। इस प्रकार बच्चे करीब दो हजार किताबों से रू-ब-रू हुए हैं।

उत्तराखंड का 'गाँव घर फाउंडेशन' भी लोगों को जागरूक कर रहा है। फाउंडेशन से जुड़े सुमन मिश्रा, उनकी पत्नी बीना नेगी, आलोक सोनी और राहुल रावत ने मणिगुह को 'पुस्तकालय गाँव' बना दिया।

इसी प्रकार, किताबों के प्रति रुचि जगाने के लिए सूरत के कुछ शिक्षक फुटपाथ पर लाइब्रेरी सजाकर 'पुस्तक परब' मना रहे हैं। इसके जरिए वे निःशुल्क किताबें मुहैया करवा रहे हैं। शिक्षक जितेंद्र मकवाणा, राघव डाभी और किशोर परमार ने यह अनोखी अलख जगाई है। उन्होंने कई जगह से किताबें लीं और मोटा वराछा, ऑक्सीजन पार्क गार्डन की फुटपाथ पर 'पुस्तक परब' शुरू कर दिया। यहाँ हर महीने के पहले रविवार को गार्डन के बाहर फुटपाथ पर सुबह नौ बजे से 12 बजे तक पुस्तकें लगाते हैं। यहाँ कोई भी व्यक्ति नाम, पता और मोबाइल नंबर लिखाकर निःशुल्क किताबें ले जा सकता है। पिछले चार महीने में करीब 1000 से अधिक लोगों ने इसका लाभ लिया है। ये शिक्षक समाज में परिवर्तन लाने के उद्देश्य से लोगों से किताबें दान करने की अपील भी करते हैं।

'झोला पुस्तकालय' कार्यक्रम 'उपक्रम फाउंडेशन' एवं बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश के सहयोग से चलाया जा रहा है। इसमें जिले के ग्रामीण एवं आदिवासी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने का उद्देश्य है। उपक्रम की संचालिका चंद्रा किरन तिवारी बताती हैं कि फाउंडेशन सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने की घंटी में बाल साहित्य से जुड़ी पुस्तकें बच्चों को पढ़ने को दी जाती हैं। विभिन्न प्रकाशकों की इन बाल पुस्तकों को पढ़कर वे संबंधित गतिविधियाँ करते हैं। इसके अलावा, बच्चे और फाउंडेशन के कार्यकर्ता समुदाय में विभिन्न झोलों के माध्यम से झोला पुस्तकालय की पुस्तकें ले जाकर किसी सदस्य के घर के समीप पुस्तकें प्रदर्शित करते हैं। इससे कई लोग और बच्चे आसानी से पुस्तकें पढ़ सकते हैं। संचालिका ने करीब 3000 बच्चों को पुस्तकालय से जोड़ा है। फाउंडेशन का करीकुलम कथा-कहानी वाचन की पैडागोजी पर आधारित है। उन्होंने बताया कि जो बच्चे सामान्य और कमजोर थे, वे भी बुक टॉक, अंत्याक्षरी, कथा-कहानी वाचन आदि गतिविधियों में सहभागिता करके प्रखर बन रहे हैं। झोला पुस्तकालय की पुस्तकों का इसमें महत्वपूर्ण योगदान है।

भले ही अधिकांश लोग मोबाइल की गिरफ्त में हों, लेकिन ऐसे पुस्तकालय योद्धा, जो बच्चों-बड़ों को पुस्तकों के माध्यम से शिक्षा, संस्कृति, संस्कार और धैर्य का पाठ पढ़ा रहे हैं, प्रशंसनीय हैं। उनकी प्रशंसा इसलिए भी होनी चाहिए, क्योंकि वे आने वाली पीढ़ी के भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

सेसून लाइब्रेरी : यहूदी धरोहर को यूनेस्को ने किया पुरस्कृत

पुरानी पुस्तकों और प्राचीन इमारतों को पसंद करने वाले हर व्यक्ति को यह खबर अच्छी लगेगी। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने इस वर्ष (2023) का मेरिट अवार्ड मुंबई के 155 वर्ष पूर्व निर्मित डेविड सेसून लाइब्रेरी को दिया है। महानगर के काला घोड़ा इलाके में स्थित इस ऐतिहासिक भवन की कहानी अद्भुत है।

डॉ. के. विक्रम राव

- गद्यकार, संपादक, मीडिया शिक्षक और टी.वी.-रेडियो समीक्षक डॉ. के. विक्रम राव श्रमजीवी पत्रकारों के मासिक 'द वर्किंग जर्नलिस्ट' के प्रधान संपादक हैं। वे वॉयस ऑफ अमेरिका (हिंदी समाचार प्रभाग, वाशिंगटन) के दक्षिण एशियाई ब्यूरो में 15 वर्षों तक संवाददाता रहे। वे 1962 से 1998 तक दैनिक टाइम्स ऑफ इंडिया (मुंबई) में कार्यरत थे।
- वे भारतीय प्रेस काउंसिल (PCI) के छह वर्षों (1991) तक सदस्य रहे। श्रमजीवी पत्रकारों के लिए भारत सरकार द्वारा 2008 में गठित जस्टिस जी.आर. मजीठिया और मणिसाणा वेतन बोर्ड (1996) के वे सदस्य थे। प्रेस सूचना ब्यूरो की केंद्रीय प्रेस मान्यता समिति के पाँच वर्षों तक सदस्य रहे। वर्तमान में वे तेलुगू, हिंदी, उर्दू तथा अंग्रेजी जैसी 85 भाषाओं की पत्रिकाओं में स्तंभकार हैं।

संपर्क : मोबाइल– 9415000909
ईमेल– k.vikramrao@gmail.com

ऐतिहासिक सेसून लाइब्रेरी.

काला घोड़ा, जिसके नाम यह इलाका है.

इजराइल गणराज्य के लोग इसे दोनों राष्ट्रों के संबंधों को प्रगाढ़ बनाने का कारण भी मानते हैं। गनीमत रही कि पाकिस्तानी आतंकवादियों (कसाब को मिलाकर) ने ताज होटल और यहूदी भवन 'छबाड़ हाउस' पर हिंसक हमला (26 नवंबर, 2008) किया था, मगर यह प्राचीन यहूदी स्थल बच गया था। पाकिस्तानी खासकर यहूदियों को निशाना बना रहे थे। यदि यह सेसून लाइब्रेरी उन जेहादियों का शिकार हो जाती तो अमूल्य किताबें और पांडुलिपियाँ नष्ट हो जातीं। मुंबई की धरोहर ही खत्म हो जाती। इस 19वीं सदी के भवन में 70 हजार बेशकीमती किताबें हैं। करीब तीन हजार पुस्तक-प्रेमी यहाँ पढ़ने आते हैं।

यह जर्जर भवन वास्तुकार श्रीमती आभा नारायण लांबा के प्रयासों से सँवारा गया है। इसी के फलस्वरूप इसे वैश्विक पारितोष प्राप्त हुआ। लांबा के अनुसार, इस प्राचीन इमारत का संरचनात्मक रूप ही एक चुनौती था। आर्थिक तंगी भी थी। मगर इसी वर्ष मई में साढ़े तीन करोड़ की राशि प्राप्त हुई और जीर्णोद्धार हो गया। दान देने वालों में आईसीआईसीआई फाउंडेशन, इजरायली वाणिज्य दूतावास और काला घोड़ा एसोसिएशन थे। जेएसडब्ल्यू फाउंडेशन की संगीता जिंदल जैसे लोगों ने मदद की। काला घोड़ा आराधनालय (नेसेट एलियाहू) परियोजना पर एक साथ काम किया गया था। डेविड सेसून लाइब्रेरी दूसरा यहूदी विरासत स्थल है, जिसे बहाल किया गया है। यूनेस्को ने इस प्रयास को मान्यता दी है।

एक वास्तुशिल्प और सांस्कृतिक मील का पत्थर होने के अलावा, यह पुस्तकालय ऐतिहासिक रूप से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि बाबा साहेब आंबेडकर ने वहाँ भारतीय संविधान का अंतिम मसौदा लिखा था।

पुस्तकालय के पिछवाड़े में एक बगीचा है, जहाँ सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रम होते हैं। यह शहर के बीच में एक शांत पढ़ने की जगह भी है। यह रियायती दरों पर छात्रों तक सुविधा प्रदान करता है। लाइब्रेरी के अध्यक्ष हेमंत भालेकर ने कहा, "पुरस्कार प्राप्त करना आनंददायी है। एस्प्लेनेड रोड (अब महात्मा गांधी रोड) की पुरानी तस्वीरों में एक ढलान वाली छत के साथ पुस्तकालय दिखाया गया है। इसे कंक्रीट की छत से बदल दिया गया था। अब इमारत पुरानी तस्वीरों की तरह दिखती है।"

पुस्तकालय का निर्माण बगदाद के एक यहूदी व्यापारी डेविड सेसून के दान से किया गया था। उनका परिवार मुंबई में बस गया था। पुणे में 1864 में मृत्यु के पूर्व उन्होंने कई सार्वजनिक परियोजनाओं हेतु अपनी विरासत छोड़ी है, जैसे—सेसून जनरल अस्पताल (पुणे), मुंबई का सेसून डाक। यह प्रसिद्ध पुस्तकालय एक विरासत संरचना है। इसे स्थापित करने का विचार सेसून के पुत्र अल्बर्ट का था।

यह सेसून लाइब्रेरी और रीडिंग रूम विक्टोरियन स्थापत्य शैली में निर्मित है। इसमें नुकीले मेहराब, जानवरों की आकृतियों से सजे स्तंभ और बर्मा सागौन की लकड़ी से बने जटिल रूप से डिजाइन किए गए ट्रस और छत हैं। इस इमारत को शिल्पी जे. कैंपबेल और जी.ई. गोस्लिंग ने स्कॉट मैक्लेलैंड एंड कंपनी के जरिए डिजाइन किया था। डेविड सेसून ने सवा लाख रुपये का दान दिया, जबकि बाकी लागत बॉम्बे प्रेसीडेंसी सरकार द्वारा प्रदत्त थी। पुस्तकालय काला घोड़ा रैम्पर्ट रो पर स्थित है। निकटवर्ती एलफिंस्टन कॉलेज, सेना और नौसेना भवनों और वॉटसन होटल की तरह का इसका आकार है। प्रवेश द्वार 'पोर्टिको' के ऊपर डेविड सेसून की एक सफेद पत्थर की मूर्ति है।

इमारत के वास्तुशिल्प महत्व को देखते हुए, श्रीमती लांबा की टीम ने बड़े पैमाने पर अभिलेखीय अनुसंधान और दस्तावेजीकरण पर भरोसा किया। प्रत्येक नए तत्व, जैसे कि धातु के झूमर, को इमारत की शैली के साथ एकीकृत करने के लिए 19वीं शताब्दी के समान तैयार किया गया था। डेविड सेसून की पहल से बगदादी यहूदियों को 1864 में भायखला क्षेत्र में अपना पहला मंदिर भी मिला। इसे 'मैगन डेविड सिनेगॉग' के नाम से जाना जाता था। यह यूरोपीय शैली में बनाया गया था।

डेविड सेसून 1832 में बंबई आ गए थे और खुद को कपास उद्योग के मजिस्ट्रेट के रूप में स्थापित किया। उन्होंने भायखला में सिनेगॉग का निर्माण कराया। उनके बेटे, अल्बर्ट सेसून ने बॉम्बे में बुनाई उद्योग को ही बदल दिया।

इसी पुस्तकालय की मुंबई में सांस्कृतिक विरासत के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में पहचान है। पड़ोस का काला घोड़ा महोत्सव मुंबई की सांस्कृतिक धरोहर है। इसके माध्यम से स्थानीय कलाकारों को पहचान मिलती है। समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने का संदेश दिया जाता है। 'काला घोड़ा' नाम घोड़े पर सवार राजा एडवर्ड सप्तम की एक काले पत्थर की मूर्ति के नाम पर है, जिसे डेविड सेसून ने बनाया था। हालाँकि, इस मूर्ति को हटा दिया गया है।

'काला घोड़ा कला महोत्सव' कला, संस्कृति और रचनात्मकता का उत्सव है, जिसने लाखों लोगों के दिलों को मंत्रमुग्ध किया है। यह कला महोत्सव नौ दिनों एक बहु-दिवसीय उत्सव है, जो विविध कला रूपों और सांस्कृतिक गतिविधियों को दिखाता है। यह फरवरी में होता है, जो दुनियाभर से हजारों कला-प्रेमियों को आकर्षित करता है। उत्सव के दौरान, काला घोड़ा परिसर कला प्रदर्शनियों, नृत्य प्रदर्शनों, संगीत समारोहों, थिएटर शो, हेरिटेज वॉक, कार्यशालाओं आदि सहित कई कार्यक्रमों से जीवंत हो उठता है। भारत में धरोहर के संरक्षण के इतिहास में सेसून पुस्तकालय एक यादगार घटना है। अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार पाकर तो इसका इतिहास महत्वपूर्ण हो गया है।

टैगोर लाइब्रेरी : पहले जलाई गई, अब विकास जारी

अमूमन छात्रों द्वारा हंगामा बरपाना तथा तोड़फोड़ करना उनके विरोध-चिंतन को व्यक्त करने का माध्यम रहा है। ऐसे अग्निपथ पर विश्वविद्यालय छात्र यूनियन में रहकर मैं भी गुजर चुका हूँ, मगर लखनऊ विश्वविद्यालय में स्थिति अब सुधर रही है। मसलन, कुछ दिन पूर्व ही (11 मई, 2023) इस 82 वर्ष पुराने टैगोर लाइब्रेरी के सामने ऑल-इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन (वामपंथी संगठन) ने ढपली

बजाकर प्रदर्शन किया था। उनकी माँग थी कि पुस्तकालय का समय बढ़ाया जाए। छात्र नेता हर्ष (और उनके साथी सुकीर्ति, ज्योति, अमन, समर, क्रांति आदि) की माँग थी कि इसका समय 24 घंटे हो। उनका कहना था कि सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे तक कक्षाएँ चलती हैं और पुस्तकालय 5.30 बजे तक बंद होने लगता है। इसके कारण छात्रों को पूर्णतः लाभ नहीं मिल पाता। पढ़ने के लिए उन्हें अलग से निजी पुस्ताकलयों में जाना पड़ता है। उनकी अन्य माँगें थीं कि लाइब्रेरी को 24 घंटे खोला जाए, इंटरनेट की कनेक्टिविटी को दुरुस्त कराया जाए, वाशरूम की रेगुलर साफ-सफाई की जाए, लाइब्रेरी में

फोटोकॉपी का शुल्क एक रुपये से घटाकर 50 पैसे किया जाए तथा लाइब्रेरी में पीने के पानी के लिए आरओ और वॉटर कूलर की व्यवस्था की जाए। भला हो प्रो. दीप्ति रंजन साहूजी का, जिनके जिम्मे लाइब्रेरी की व्यवस्था तथा प्रबंधन है। उन्होंने तत्काल लाइब्रेरी का समय बढ़ा दिया। एक अत्यंत महत्वपूर्ण निर्णय भी लिया कि कोई भी शोधार्थी और शिक्षाप्रेमी केवल आधार कार्ड लेकर लाइब्रेरी में प्रवेश पा सकता है। प्रो. साहू ने बताया कि अब टैगोर लाइब्रेरी भी एक मान्य सार्वजनिक पुस्तकालय हो गई है। यह एक बहुत उम्दा और विवेकपूर्ण कदम है। अधुना प्रो. साहू विश्वविद्यालय के जे.के. इंस्टीट्यूट में समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष भी हैं। टैगोर लाइब्रेरी में एक सदी से चली आ रही रीति को खत्म कर अब उसकी जगह बारकोड स्कैन कर किताबें दी जाएँगी। इस पाइलट प्रोजेक्ट की शुरुआत इस सत्र से कर दी गई है। विश्वविद्यालय में कुल पाँच लाख किताबें हैं, जिसमें लगभग साढ़े तीन लाख टैगोर लाइब्रेरी में हैं, बाकी डिपार्टमेंटल लाइब्रेरियों में हैं। छात्रों की सहूलियत के लिए किताबें डिजिटल करने की व्यवस्था भी शुरू की गई है। इससे लाइब्रेरी की किताबों का भी डेटाबेस एक क्लिक पर उपलब्ध रहेगा।

टैगोर लाइब्रेरी की विकास यात्रा में 1974 में एक महत्वपूर्ण सोपान आया, जब पुस्तकालय विज्ञान भी अध्ययन कोर्स के सिलेबस में सम्मिलित किया गया। इस विभाग के संस्थापक-अध्यक्ष थे स्व. प्रो. सी.जी. विश्वनाथन, जिन्होंने 18 पुस्तकें लिखीं। उसमें प्रमुख है कैटलॉगिंग पर। इसे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया था। प्रो. विश्वनाथन आंध्र विश्वविद्यालय (विशाखापट्टनम) में भी आचार्य रहे। वहीं डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन तब कुलपति थे। दोनों परस्पर संबंधी भी थे। जब राधाकृष्णन काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति बने तो प्रो. विश्वनाथन भी वहीं के लाइब्रेरी विभाग में आ गए थे। फिर अवकाश प्राप्त कर वे नवसृजित पंतनगर के कृषि विश्वविद्यालय (ऊधम सिंह नगर, जिला, उत्तराखंड) में आ गए। वहाँ भी पुस्तकालय विभाग की स्थापना की। उसके पूर्व लखनऊ के मशहूर अमीनद्दौला लाइब्रेरी में 1939 में रहे थे। प्रो. विश्वनाथन के नाम से लखनऊ विश्वविद्यालय में लाइब्रेरी विज्ञान की परीक्षा में श्रेष्ठ छात्र के लिए वार्षिक स्वर्ण पदक भी रखा गया है। उनकी पुत्री डॉ. के. सुधा राव (रिटायर्ड रेल चिकित्सा मुख्य निदेशक) मेरी पत्नी हैं।

टैगोर लाइब्रेरी के इतिहास में एक अत्यंत कालिमापूर्ण दिन भी आया, जब 1973 में उग्र भीड़ ने इसे जला दिया था। उन दिनों उत्तर प्रदेश में पीएसी के क्रुद्ध सिपाहियों ने अपने वेतनमान को लेकर भी हड़ताल कर दी थी। मुख्यमंत्री पं. कमलापति त्रिपाठी को त्यागपत्र देना पड़ा था। इंदिरा गांधी ने तब पं. हेमवती नंदन बहुगुणा को मुख्यमंत्री नामित किया था। पीएसी के कुछ सिपाही विश्वविद्यालय परिसर में तैनात थे। उन लोगों ने छात्र संघर्ष के समय इन अराजक तत्वों को रोका नहीं, जो पुस्तकालय को आग लगा रहे थे। दोनों के संघर्ष में विश्वविद्यालय परिसर में भारतीय सेना की (22 मई, 1973) कंपनी ने प्रवेश किया था। इसमें 31 सिपाही मरे थे।

इस सशस्त्र मुकाबले का मूलभूत कारण विश्वविद्यालय परीक्षा में सुव्यवस्था हेतु टीचर्स एसोसिएशन द्वारा परिसर में उचित पुलिस बल के मदद की माँग करना था। छात्रों ने विरोध किया था। मतभेद ने हिंसक आकार ले लिया। तभी वहाँ तैनात हड़ताली पीएसी जवान छात्रों से मिल गए। नारे भी लगे थे : 'छात्र पीएसी एकता जिंदाबाद।' फलस्वरूप दमन चक्र चला। शिकार हुआ बौद्धिक केंद्र टैगोर लाइब्रेरी!

उन दिनों इस लाइब्रेरी के जलने की खबर मैंने 'टाइम्स ऑफ इंडिया' में पढ़ी थी, जिसका मैं बड़ौदा में दक्षिण गुजरात का ब्यूरो प्रमुख था। अत्यंत क्षोभ और ग्लानि हुई। तभी याद आया, किस प्रकार मध्य युग में विश्व के प्रमुख पुस्तकालयों को इस्लामी हमलावरों ने भी जला दिया था। याद आया बिहार की पाँचवीं सदी का नालंदा बौद्ध विश्वविद्यालय, जिसे बख्तियार खिलजी के हमलावरों ने 1193 में 11 दिन तक जलाया। सारे ग्रंथ राख हो गए। इससे पूर्व मिस्र में एलेक्जेंड्रिया के विख्यात पुस्तकालय को इस्लाम के दूसरे खलीफा उमर इब्न अला-खताब (634-6441) के आदेश पर जला दिया गया। कारण बताया गया कि वे अमूल्य और महान ग्रंथ यदि कुरान से सहमत हैं तो अनावश्यक हैं और यदि विपरीत हैं तो नापाक हैं। अतः मुस्लिम सेनापति को खलीफा का फरमान था कि लाइब्रेरी ही जला दो। ठीक ऐसा ही चंगेज खान के पोते हलागू खान ने बगदाद में किया। वहाँ के 'हाउस ऑफ विज्डम' (ज्ञान का घर) पुस्तकालय को (फरवरी 1258) 13 दिन तक जलाकर खत्म कर दिया गया।

अतः इन्हीं दानवी घटनाओं के संदर्भ में टैगोर लाइब्रेरी पर हुए मई 1973 के हमले में उसे जला देना एक अत्यंत दुखद प्रकरण है, मगर अब नागरिक चेतना इतनी तो जागृत है कि टैगोर लाइब्रेरी के अमूल्यवान धरोहर, उसकी किताबें सुरक्षित रहेंगी।

शहीद हरदयाल लाइब्रेरी, दिल्ली : कब तक रहेगी उपेक्षा

हर बुद्धिकर्मी को क्लेश और पीड़ा होगी दिल्ली के पुरातनतम पुस्तकालय (हरदयाल म्यूनिसिपल पब्लिक लाइब्रेरी) की दुर्दशा के बाबत जानकर। राजधानी के इतिहास का मूक गवाह यह संस्थान दिल्ली महानगरपालिका की अक्षमता और संवेदनशीलता का शिकार है। यह हेरिटेज संस्था है। कर्मचारी बिना वेतन के काम कर रहे हैं। बिजली कट गई है। रोशनदान के नीचे खड़े होकर लोग पढ़ते हैं। वाशरूम दो माह से साफ नहीं किया गया। पीने का पानी नहीं मिलता। लाइब्रेरी के फोन नं. 011-23963172 पर जवाब मिला, 'उपयोग में नहीं है।' सर्वाधिक खेदजनक बात यह है कि यहाँ सुरक्षा का अभाव है। हालाँकि मेयर इसके अध्यक्ष हैं। यहाँ की पौने दो लाख

पुस्तकों में आठ हजार तो दुर्लभ पांडुलिपियाँ हैं। अकबर के नवरत्न अबुल फजल (इब्न मुबारक) द्वारा लिखित 'आईने अकबरी' और 'अकबरनामा' हैं। इनमें मुगलकालीन समाज तथा सभ्यता का बेहतरीन वर्णन मिलता है। अबुल फजल का ही फारसी में महाभारत भी है, जिसमें आकृतियाँ सुनहरी हैं। सूफी संत ख्वाजा हसन निजामी का फारसी लिपि में लिखा कुरान है। महान ज्योतिष-ग्रंथ भृगु संहिता है, जिसमें कुंडली तैयार होती है। यहाँ ब्रिटिश लेखक सर वाल्टर रेले द्वारा 1607 में लिखी 'हिस्ट्री ऑफ द वर्ल्ड' (1607) की मूल प्रतियाँ हैं। इसमें मेसोपोटामिया पर रोम की फतह से क्रमबद्ध इतिहास लिखा गया है। वाल्टर रेले का ब्रिटेन ट्यूडर वंश की अविवाहिता महारानी एलिजाबेथ प्रथम का आशिक बताया जाता है। अन्य महत्वपूर्ण

पुस्तकों में हैं : 1705 की 'वोयेज अराउंड द वर्ल्ड' (जॉन फ्रैंकिस जेनेली कोरिरि), 1828 की 'तजकीरा अल वकयात' (चार्ल्स स्टेवर्ड), 1794 की 'ट्रेवल्स इन इंडिया' (विलियम होजेज), 1854 में लिखी गई 'ऋग्वेद संहिता' (एचएच विल्सन), 1881 में 'सत्यार्थ प्रकाश' (स्वामी दयानंद सरस्वती), 1928 में लिखी गई 'कुरान-ए-मजिद' और औरंगजेब की मूल रचना की अनुवादित रचना 'आयते ऑफ कुरान' प्रमुख हैं। सवाल है कि ये सब अनमोल कृतियाँ कब तक बची रहेंगी? सभी बेशकीमती धरोहर हैं।

आधुनिक भारत का एक ताजा-तरीन किस्सा इस लाइब्रेरी से जुड़ा है। बात है देश के विभाजन के दौर की। मोहम्मद अली जिन्ना अपनी मातृभूमि कहकर सागरतटीय काठियावाड़ (पश्चिमी गुजरात) को अपने इस्लामी राष्ट्र में शामिल करने पर अड़े थे। जूनागढ़ के नवाब की हरकतों से उन्हें बल मिला था। तब इसी हरदयाल लाइब्रेरी में उपलब्ध नक्शे, दस्तावेज और किताबों के आधार पर पाकिस्तान को मानना पड़ा कि बापू की जन्मस्थली काठियावाड़, गुजरात का भूभाग, भारत है।

पिछले दशक का किस्सा है। दिल्ली मेट्रो के लिए पुराने इलाके में खुदाई हो रही थी। तब (06 जुलाई, 2012) चंद मध्यकालीन ढाँचे दिखे। मंदिर था या मस्जिद? इस पर अलग-अलग दावे होने लगे। इस हरदयाल लाइब्रेरी में रखे मुगलकालीन किताबों से पता चला कि बादशाह शाहजहाँ ने उस स्थान पर 1650 में अकबराबादी मस्जिद बनवाई थी। उसी के अवशेष मिले थे। समाधान तुरंत हुआ, वरना इसमें भी बाबरी मस्जिद जैसा बवाल उठ खड़ा होता। शाहजहाँ की कई बेगमों में खास थीं अकबराबादी, जिसके नाम पर यह महल था। इसे 1857 में अंग्रेजों ने ध्वस्त कर दिया था। ध्वस्त मस्जिद के मलबे को बिक्री के लिए रखा गया था। किसी तरह सैयद अहमद खान ने मलबे को खरीदा और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के निर्माण में इसका इस्तेमाल किया। यह नेताजी सुभाष पार्क के समीप है।

इससे जुड़ी घटना भी है। यूँ तो भारतीय इतिहास में तक्षशिला, नालंदा और विश्व में बगदाद, इस्तांबुल, एलेक्जेंड्रिया आदि आक्रामकों द्वारा ध्वस्त किए जाते रहे, पर दिल्ली का यह डेढ़ सौ वर्ष पुराना पुस्तकालय प्रशासनिक कोताही का खामियाजा भुगत रहा है, जब से इसकी नींव (1864 में) पड़ी है।

अंग्रेजों के पढ़ने के शौक के चलते टाउन हॉल में छोटा-सा लाइब्रेरी इंस्टीट्यूट शुरू हुआ, जो 1911 में यह मौजूदा भवन में स्थानांतरित हो गया, जिसे 'दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी' (1919) के नाम से पहचाना जाने लगा। इसे पहले 'हार्डिंग लाइब्रेरी' के नाम से भी पुकारते थे, फिर 'हरदयाल लाइब्रेरी' के नाम से जाना जाता है। इस पुस्तकालय का नाम महान राष्ट्रभक्त और क्रांतिकारी 'लाला हरदयाल' के नाम पर रखने का महत्व है। लाला हरदयाल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उन अग्रणी क्रांतिकारियों में थे, जिन्होंने विदेश में रहने वाले भारतीयों को देश की आजादी की लड़ाई में योगदान के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित किया।

इस उपेक्षित लाइब्रेरी भवन का रुचिकर इतिहास जानकर वेदना और ज्यादा होती है। दो सदी बीते चाँदनी चौक के इस भवन को 1866 में सवा लाख में निर्मित कर यूरोपियन क्लब बनाया गया था। मलका विक्टोरिया की प्रतिमा भी लगाई गई थी। यहीं पर दिल्ली कॉलेज और लाइब्रेरी भी बनी थी। फिर मलका विक्टोरिया की मूर्ति हटाकर स्वामी श्रद्धानंद की मूर्ति लगाई थी। इसका नाम मूलतः 'लॉरेंस इंस्टीट्यूट' था। पुस्तकालय 1902 में बना। इसी स्थल पर दिसंबर 1912 में हाथी पर सवार वायसराय हार्डिंग पर बम फेंका गया था। वे बच गए थे। बम कांड में स्वतंत्रता सेनानी मास्टर अमीरचंद, भाई बालमुकुंद, मास्टर अवध बिहारी और बसंत कुमार विश्वास को फाँसी दे दी गई। ये स्वतंत्रता सेनानी हरदयाल के साथी थे। अंग्रेजों के भारत से जाने के बाद 1970 में हार्डिंग लाइब्रेरी का फिर नामकरण हुआ और स्वतंत्रता सेनानी हरदयाल का नाम दिया गया।

राष्ट्रीय धरोहर बचाने और विरासत के संरक्षण में हर समय सरकारें जुटी रहती हैं, मगर दिल्ली में नहीं। वरना यह लाला हरदयाल पब्लिक लाइब्रेरी पर प्रशासनिक अनुकंपा कब की हो चुकी होती। अब क्या महापौर, दिल्ली के उपराज्यपाल और केंद्रीय गृहमंत्री को राष्ट्र के प्रति उनके कर्तव्य का बोध भी कराना पड़ेगा?

पुस्तकालय सूचना उत्पाद

पुस्तकालय सूचना विज्ञान के क्षेत्र में सूचना उत्पादों का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है, कारण यह है कि आज पाठक संपूर्ण प्रलेख न चाहकर सटीक सूचना चाहता है, परिणामस्वरूप परंपरागत प्रलेखों के साथ-साथ सूचना उत्पादों का प्रकाशन भी गतिशील है। सूचना उत्पादों को विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी, मूल्यांकन, विश्लेषण इत्यादि के द्वारा तैयार किया जाता है। सूचना उत्पाद सार्वजनिक, औद्योगिक, वाणिज्यिक इत्यादि संगठनों के द्वारा जारी किए जाते हैं। पुस्तकालय, जो कि सामाजिक संस्था के रूप में जाने जाते हैं; के लिए पाठक की संतुष्टि सर्वोपरि है, अतः पुस्तकालयों द्वारा पाठकों को अधिक से अधिक सहयोग एवं संतुष्टि हेतु सूचना उत्पाद तैयार किए जाते हैं।

सूचना उत्पाद के अंतर्गत समाचार पत्रिकाएँ, व्यापार एवं उत्पाद बुलेटिन, तकनीकी चयनिकाएँ, समीक्षाएँ तथा प्रवृत्ति-प्रतिवेदन आदि शामिल किए जाते हैं।

डॉ. इंदु भारती घिल्डियाल

शिक्षा : पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में पी-एच.डी.।

संप्रति : सहायक प्राध्यापक, (विभागाध्यक्ष) पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, हिमालयीय विश्वविद्यालय, देहरादून।

संपर्क : मोबाइल– 7088585559
ईमेल– indubnawani@gmail.com

मुख्यतः इन उत्पादों में एक संगठन के प्रदर्शन, नवीनतम गतिविधियाँ अथवा अमुक संगठन/संस्था के उत्पाद एवं सेवाओं के प्रदर्शन के बारे में सूचना देते हैं। इस तरह के सूचना उत्पादों का मुख्य उद्देश्य संस्था/संगठन की छवि को प्रोत्साहित करना तथा उत्पाद एवं सेवाओं को बढ़ावा देना होता है।

वर्तमान में सूचना उत्पादों के विभिन्न स्वरूप हैं, जिनमें से हम कुछ निम्नांकित सूचना उत्पादों के बारे में जानेंगे।

समाचार पत्रिकाएँ

समाचार पत्रिकाएँ ऐसे प्रकाशन हैं, जिसमें सीमित पृष्ठ, चित्रादि एवं छायाचित्रण के साथ संबंधित संस्थान की नियमित गतिविधियाँ अथवा कार्यक्रम के बारे में उपयोगी जानकारी समाहित होती है। कुछ निश्चित पाठकों या जिज्ञासुओं के लिए नवीन एवं अद्यतन सूचना उपलब्ध कराने में सहायक होती है। इनका प्रकाशन शैक्षणिक, सार्वजनिक, शासकीय, अशासकीय गैर-लाभकारी संस्थाओं आदि के द्वारा किया जाता है।

इन समाचार पत्रिकाओं में किसी विशेष अंतराल में संपादित हुई विशेष गतिविधियों या क्रियाकलापों का विस्तृत वर्णन होता है; सुरक्षा, व्यापार, पुस्तक मेला और जागरूकता कार्यक्रम इत्यादि को शामिल किया जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के फलस्वरूप ई-समाचार पत्रिकाओं का प्रचलन बढ़ गया है। 1990 के दशक में ई-समाचार पत्रिकाएँ पाठकों को वेब पेज में हाइपर लिंक के माध्यम से प्राप्त होती थीं। कुछ समय पश्चात उपयोगकर्ताओं को यह सुविधा ई-मेल के माध्यम से मिलने लगी तथा यह स्थिति अभी भी प्रभावशाली है।

समाचार पत्रिकाओं के कुछ उदाहरण–

1. INFLIBNET Newsletter, Information and Library Network Centre, Gujarat.
2. ILA Newsletter, Indian Library Association, New Delhi.
3. NBT Newsletter, National Book Trust, New Delhi.
4. IASLIC Newsletter, Indian Association for Special Libraries and Information Centres, Kolkata.

व्यापार एवं उत्पाद बुलेटिन

सोलहवीं शताब्दी के आसपास पुस्तक विक्रेताओं द्वारा पुस्तक सूचियाँ और कैटलॉग व्यापार एवं उत्पाद बुलेटिन के रूप में प्रयोग में लाये गए। इसी क्रम में 18वीं शताब्दी में व्यापार, वाणिज्य और उपभोग में उन्नति के फलस्वरूप व्यापार एवं उत्पाद दिखाई देने लगे। इन सूचना उत्पादों में प्रकाशकों, उत्पादकों तथा वितरकों द्वारा विभिन्न उत्पादित सामग्री सेवाओं की अद्यतन जानकारी के साथ उत्पाद की विशेषताओं के

बारे में, बिक्री उत्पादों का विस्तृत वर्णन, उपयोग करने के निर्देश, वापसी निर्देश, वारंटी इत्यादि शामिल किया जाता है। व्यापार एवं उत्पाद बुलेटिन प्रायः साहित्य, व्यापार एवं विभिन्न सरकारी व अर्ध-सरकारी उपक्रमों द्वारा निर्मित किया जाता है। व्यापार एवं साहित्य में बिक्री बढ़ाने के उपक्रम में मुद्रित की जाती है तथा आकार छोटे पैम्फलेट से लेकर बड़े-बड़े फोलियो तक होता है तथा यह निःशुल्क वितरित की जाती हैं।

व्यापार एवं उत्पाद बुलेटिन के स्रोत–

1. उत्पाद निर्देशिका (Directory of Products)
2. निर्माता सूची (Manufacturer's Catalogue)
3. व्यापार मेला व पुस्तक प्रदर्शनियाँ (Trade Fair and Exhibitions)
4. वेबसाइट व व्यापार पोर्टल (Websites and Trade Portals)

व्यापार एवं उत्पाद बुलेटिन के कुछ उदाहरण–

1. रीडर्स क्लब बुलेटिन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
2. इंफोरमेशन बुलेटिन, लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, वॉशिंगटन, अमेरिका
3. लाइब्रेरी बुलेटिन, नेशनल इंजीनियरिंग कॉलेज, तमिलनाडु
4. आई.सी.एम.आर. बुलेटिन, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

तकनीकी चयनिकाएँ/ डाइजेस्ट

तकनीकी चयनिकाओं का निर्माण प्रबंधकीय कर्मियों के उत्पाद से संबंधित जानकारी जैसे तकनीकी उपकरण, विपणन, वाणिज्यिक जानकारी प्रदान करने हेतु किया जाता है। तकनीकी चयनिकाएँ, विशेषकर प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधकीय क्षेत्रों के विशेषज्ञों की सूचना आवश्यकता को पूर्ण करने हेतु निर्मित किया जाता है।

तकनीकी चयनिकाओं के उदाहरण–

1. लेबोरेट्री मैनेजमेंट डाइजेस्ट, सेनडॉक,
2. एलोए डाइजेस्ट, ए.एस.एम. डिजिटल लाइब्रेरी
3. टेक्निकल डाइजेस्ट, जॉन हॉपकिंस, एप्लाइड फिजिक्स
4. टेरी इंफोरमेशन डाइजेस्ट ऑन एनर्जी एंड इंवायरमेंट, टेरी

समीक्षाएँ

समीक्षाओं के द्वारा मुख्यतः प्राथमिक स्रोतों से संबंधित जानकारी एकत्र करके किसी विषय विशेष की वर्तमान प्रगति या स्थिति का अवलोकन प्रस्तुत किया जाता है। प्रायः समीक्षाएँ मूल लेख/ प्रलेख से संबंधित अवधारणा का आकलन करती हैं और अमुक लेख का संक्षिप्त स्वरूप प्रदान करती हैं। हालाँकि, ये समीक्षाएँ 'पुस्तक समीक्षा' से अलग हैं, जो एक दस्तावेज या प्रकाशन का आकलन हैं। यह एक प्रकार सामयिक अभिज्ञता सेवा है, जो साहित्य के बारे में सूचित करती है।

समीक्षाओं से संबंधित महत्वपूर्ण उदाहरण–

1. Booklist Online: American Library Association
2. Sources for General Book Review, Library of Congress

प्रवृत्ति प्रतिवेदन

प्रवृत्ति प्रतिवेदन को प्रलेखन सेवा का उपयोगी स्वरूप माना जाता है। प्रवृत्ति प्रतिवेदन विषय विशेषज्ञों के लिए सूचना एकत्रीकरण, विश्लेषण, पुनरावृत्ति का उपयोगी सूचना उत्पाद है, जो उनके अनुसंधान कार्यों एवं संबंधित क्रियाकलापों में महत्वपूर्ण सहायता करता है। प्रवृत्ति प्रतिवेदन का निर्माण विशेष रूप से शोध एवं विकास संगठनों द्वारा किया जाता है। इसमें मुख्य रूप से यूनेस्को, खाद्य एवं कृषि संगठन, इफला तथा अन्य व्यावसायिक प्रकाशनों द्वारा किया जाता है।

प्रवृत्ति प्रतिवेदन के महत्वपूर्ण उदाहरण–

1. Trend Report : IFLA
2. World Trends in Freedom of Expression and Media Development : Global Report, 2021

सूचना प्रौद्योगिकी के युग में पुस्तकालयों के पारंपरिक स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है, समय की माँग और पाठक की अभिरुचियों में बदलाव ने भी पुस्तकालयों के विकास की नई परिभाषा निर्मित कर दी है। सामान्यतः सूचना उत्पादों का उत्पादन एवं प्रकाशन किया जा रहा है और उपयोगकर्ताओं का इसका लाभ भी मिल रहा है। इसके साथ ही पुस्तकालयकर्मियों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि पाठकों की अभिरुचि और सूचना उत्पाद दोनों ही पुस्तकालयों के संग्रह को प्रभावित करते हैं।

टिप्पणी : *यह लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातक के पाठ्यक्रम से संबंधित है।*

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. रंगनाथन (एस.आर.), संदर्भ सेवाएँ, द्वितीय संस्करण, मुंबई, एशिया, 1961
2. शर्मा (हेमंत) और श्रद्धा (शहाणे) : ग्रंथालय एवं आधुनिक प्रौद्योगिकी, नई दिल्ली, एस.एस. पब्लिकेशंस, 2009, पृष्ठ संख्या 129-135
3. इग्नू, एम.एल.आई. एस-101 (इकाई 10), सूचना उत्पाद एवं सेवाएँ, नई दिल्ली, इग्नू
4. शर्मा (बी.के.) और सिंह (डी.वी.) : सूचना स्रोत, उपयोक्ता, प्रणाली, सेवाएँ एवं प्रौद्योगिकी, आगरा, वाई.के. पब्लिशर्स, 2015, पृष्ठ संख्या 214-229

साक्षरता कार्यक्रमों में प्रौढ़ पुस्तकालयों की भूमिका

इस डिजिटल युग में भले ही शिक्षा, अध्ययन और पठन-पाठन के अनेक माध्यम उपलब्ध हैं, परंतु पुस्तकालयों के महत्व को कोई नकार नहीं सकता। साक्षरता कार्यक्रमों को सफल बनाने में भी नवसाक्षर प्रौढ़ों के लिए स्थापित पुस्तकालयों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत सरकार द्वारा सर्वप्रथम 02 अक्तूबर, 1978 को राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के दौरान यह पाया गया कि नवसाक्षर जो कुछ पढ़ना-लिखना सीखते हैं, वह सब कुछ महीनों बाद ही भूल जाते हैं

लायक राम मानव

जन्म : 02 फरवरी, 1956; ग्राम छंदरौली, बाराबंकी, उत्तर प्रदेश।

लेखन : बच्चों तथा बड़ों की कुल 42 पुस्तकें एवं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में 500 से अधिक रचनाएँ प्रकाशित। साक्षरता निकेतन से प्रकाशित मासिक पत्रिका उजाला का 34 वर्षों तक संपादन। आकाशवाणी, लखनऊ से कविताओं, कहानियों और वार्ताओं का नियमित प्रसारण।

संप्रति : स्वतंत्र रूप से लेखन एवं संपादन ।

सम्मान : उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान सहित अनेक संस्थाओं द्वारा राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर के पुरस्कारों व सम्मानों से सम्मानित।

संपर्क : मोबाइल– 8687034261

ईमेल– contactlrmanav@gmail.com

और फिर से निरक्षर बन जाते हैं। साक्षरता कार्यक्रम की सफलता में यह बहुत बड़ी बाधा थी। इस समस्या के निवारण के लिए पुस्तकालय का विकल्प सामने आया, जिसे सबसे अधिक उपयुक्त पाया गया। उसके बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के साथ पुस्तकालयों की विधिवत व्यवस्था की गई।

समय के साथ-साथ शोध परिणामों, अनुभवों, आने वाली बाधाओं और क्षेत्र परीक्षणों के आधार पर साक्षरता कार्यक्रमों को नए-नए नामों से नए-नए रूपों में संचालित किया गया। सरकार द्वारा 05 मई, 1988 को राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की स्थापना की गई। इसके अंतर्गत 'राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम' का नाम बदलकर 'संपूर्ण साक्षरता अभियान' रख दिया गया। इस अभियान के अंतर्गत प्रौढ़ पुस्तकालयों को 'जन शिक्षण निलयम' नाम दिया गया। इन जन शिक्षण निलयमों में पुस्तकों की सुविधा के साथ-साथ वाचनालय, चर्चा मंडल और सांस्कृतिक गतिविधियों की भी सुविधा का प्रावधान रखा गया। इसके बाद साक्षर भारत कार्यक्रम, पढ़ना-लिखना अभियान और नव भारत साक्षरता कार्यक्रम आदि संचालित किये गए। इन सभी कार्यक्रमों में पुस्तकालयों की व्यवस्था रखी गई।

प्रौढ़ पुस्तकालयों के उद्देश्य

यूँ तो पूरे देश में सरकारी, गैर-सरकारी पुस्तकालयों की सघन शृंखला है, परंतु इन पुस्तकालयों का लाभ प्रौढ़ नवसाक्षर या गाँव समाज के साधारण पढ़े-लिखे लोग बिलकुल नहीं उठा पाते। उनकी पहुँच बड़े

पुस्तकालयों तक बिलकुल नहीं हो पाती। ऐसे में उन्हें पुस्तकें उपलब्ध कराने के लिए विशेष पुस्तकालयों की व्यवस्था किया जाना जरूरी हो जाता है। ये पुस्तकालय कई मामलों में सामान्य पुस्तकालयों से अलग होते हैं। इनके प्रमुख उद्देश्य थे–

- प्रौढ़ नवसाक्षरों को निरंतर आगे भी पढ़ने के लिए पुस्तकें मिलती रहें, ताकि उन्होंने जो कुछ पढ़ना-लिखना सीखा है, वह फिर से न भूल जाएँ।
- प्रौढ़ों के ज्ञान में बराबर वृद्धि होती रहे।
- उनकी पठन अभिरुचि में वृद्धि हो।
- एक शिक्षोन्मुख और अध्ययनशील समाज की स्थापना की जा सके।
- प्रौढ़ नवसाक्षरों, बच्चों तथा समाज के अल्पशिक्षित लोगों को उनकी जरूरत और रुचि की पुस्तकें उपलब्ध हो सकें।
- नवसाक्षरों को सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों, शोषण तथा अशिक्षा से होने वाले नुकसानों से बचाया जा सके।
- स्वास्थ्य, पर्यावरण, पोषण, नैतिक कर्तव्यों तथा सांस्कृतिक व राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति जागरूक किया जा सके।

प्रौढ़ पुस्तकालयों की विशेषताएँ

इन पुस्तकालयों को प्रौढ़ पुस्तकालयों के रूप में इसलिए जाना जाता है, क्योंकि ये अन्य पुस्तकालयों से अलग हैं। इनकी अपनी अलग विशेषताएँ हैं। इन पुस्तकालयों में ऐसी पुस्तकों को प्राथमिकता दी जाती है–

- जो पढ़ने-समझने में सरल, सहज, रोचक, मनोरंजक और ज्ञानवर्धक हों।
- अपेक्षाकृत मोटे और बड़े फॉन्ट में मुद्रित हों।
- पुस्तकें कम पृष्ठों और कम मूल्य की हों। उनमें वाक्य और पैराग्राफ छोटे-छोटे हों।
- पुस्तकों में पर्याप्त चित्र हों।
- भाषा और शब्दों का चयन तथा प्रस्तुतीकरण ऐसा हो, जिससे नवसाक्षर उन्हें आसानी से समझ सकें। सामग्री को समझने के लिए किसी शिक्षक अथवा शब्दकोश की आवश्यकता न पड़े।
- वे नवसाक्षरों की जरूरतों से जुड़ी हों और उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाने में मददगार हों।
- विभिन्न धर्मों की ऐसी पुस्तकें भी हों, जिन्हें पढ़ने में नवसाक्षरों की रुचि हो।
- जो नवसाक्षरों को एक जिम्मेदार नागरिक बनाने में मददगार साबित हों।
- जो लोक संस्कृति और लोक जीवन से जुड़ी हों।
- लोक हितकारी सरकारी योजनाओं की जानकारी देने वाली हों।
- जो व्यावसायिक कौशल बढ़ाकर नवसाक्षरों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में मददगार हों।

साक्षरता निकेतन के प्रौढ़ पुस्तकालय

भारत सरकार द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम प्रारंभ करने से काफी पहले कुछ गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा देश में प्रौढ़ शिक्षा के कार्य किए जा रहे थे। इनमें लखनऊ की अंतरराष्ट्रीय स्तर की ख्यातिप्राप्त संस्था साक्षरता निकेतन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस संस्था को एक अमेरिकन विदुषी डॉक्टर वेल्दी फिशर द्वारा सन् 1953 में नैनी, इलाहाबाद में स्थापित किया गया था। उसके बाद सन् 1956 में इसे लखनऊ स्थानांतरित कर दिया गया। साक्षरता निकेतन द्वारा बिना किसी सरकारी सहायता के बड़े पैमाने पर गाँवों में साक्षरता का कार्य प्रारंभ किया गया। साथ ही नवसाक्षरों के लिए पुस्तकालयों की स्थापना भी की गई।

साक्षरता निकेतन द्वारा प्रौढ़ पुस्तकालयों में नवसाक्षरों के पढ़ने और समझने लायक विशेष पुस्तकों का निर्माण कराया गया। इसके लिए श्रीमती फिशर ने निकेतन में सरल लेखन प्रशिक्षण शिविरों की शृंखला प्रारंभ की और इन शिविरों में तैयार लेखकों द्वारा नवसाक्षरों के लिए उपयुक्त पुस्तकें तैयार कराने की पहल की। श्रीमती वेल्दी फिशर का मानना था कि प्रौढ़ बड़ी मुश्किल से साक्षरता केंद्रों पर पढ़ने आने के लिए तैयार होते हैं। नवसाक्षर बनने के बाद इसकी संभावना बहुत कम है कि वे पुस्तकें पढ़ने के लिए चलकर पुस्तकालय तक आएँगे। इसका एक ही विकल्प है कि पुस्तकें स्वयं चलकर नवसाक्षरों के हाथों तक पहुँचें। इसके लिए उन्होंने पुस्तकालयों के साथ नए-नए प्रयोग शुरू किए। इनमें से कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

साइकिल पुस्तकालय : जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, यह पुस्तकालय साइकिल के माध्यम से सचल हुआ करता था। पुस्तकालय कार्यकर्ता साइकिल पर पुस्तकें लेकर एक दिन में चार

गाँवों का भ्रमण करता था। गाँवों में निर्धारित स्थलों पर जाकर घंटी बजाता था। घंटी की आवाज सुनकर नवसाक्षर तथा अन्य पढ़ने के इच्छुक लोग वहाँ इकट्ठा हो जाते थे। कार्यकर्ता उन्हें उनकी पसंद और रुचि की पुस्तकें दे देता था। उसके बाद अगले हफ्ते पुनः उसी दिन, उसी समय वहाँ आकर घंटी बजाता था। पिछले हफ्ते दी गई पुस्तकें वापस लेकर नई पुस्तकें उन्हें दे देता था। सिर्फ इतना ही नहीं, कार्यकर्ता नवसाक्षरों से पढ़ी गई पुस्तकों पर चर्चा भी करता था।

बाजार पुस्तकालय : इस योजना के अंतर्गत कार्यकर्ता सेवा क्षेत्र के साप्ताहिक बाजार में एक निर्धारित स्थान पर पुस्तकों का बॉक्स ले जाकर रखता था। आसपास के गाँवों से बाजार आने वाले नवसाक्षर

और अन्य पढ़ने के इच्छुक लोग उस जगह पर आते थे। कार्यकर्ता उनका नाम-पता एक रजिस्टर में नोट करके उन्हें पुस्तकें उपलब्ध कराता था और उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करता था। उसके बाद अगले हफ्ते उनसे पढ़ी हुई पुस्तकें वापस लेकर नई पुस्तकें उपलब्ध करा देता था।

हाल्टिंग पुस्तकालय : इस योजना में कार्यकर्ता हफ्ते में एक दिन किसी निश्चित गाँव में जाकर रात बिताता था। वहाँ नवसाक्षरों को पुस्तकें उपलब्ध कराता था और पिछली बार की पढ़ी गई पुस्तकों पर विस्तार से चर्चा भी करता था।

युवा मंडलों के माध्यम से पुस्तकालय संचालन : उन दिनों गाँवों में पंजीकृत युवक मंगल दल और महिला मंडल हुआ करते थे। इनके माध्यम से नवसाक्षरों को पुस्तकें उपलब्ध कराई जाती थीं और उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता था।

विद्यार्थियों के माध्यम से पुस्तक सेवा : इस योजना के अंतर्गत हाई स्कूल, इंटर तथा डिग्री कॉलेजों के समाजसेवी विद्यार्थियों के माध्यम से उनके गाँव के नवसाक्षरों तक पुस्तकें पहुँचाई जाती थीं और वापस ली जाती थीं।

इस प्रकार साक्षरता निकेतन द्वारा हरसंभव विभिन्न तरीकों द्वारा नवसाक्षरों के हाथों तक पुस्तकें पहुँचाने का कार्य किया जाता था। ये पुस्तकें केवल नवसाक्षरों को ही नहीं, बल्कि गाँव के अन्य पढ़ने के इच्छुक लोगों, बच्चों, छात्र-छात्राओं तथा महिलाओं को भी उपलब्ध कराई जाती थीं।

प्रौढ़ पुस्तकालयों का प्रभाव

प्रौढ़ पुस्तकालयों की साक्षरता कार्यक्रमों को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सच पूछो तो दूर-दराज के गाँवों तक पुस्तकें पहुँचाने का कठिन कार्य इन्हीं पुस्तकालयों द्वारा संभव हो सका है। इसके बहुत अच्छे परिणाम भी सामने आए हैं। गाँव-समाज के लोग

काफी हद तक सामाजिक कुरीतियों, बुराइयों, अंधविश्वासों, अशिक्षा, शोषण और दकियानूसी विचारों से मुक्त हुए हैं। शिक्षोन्मुख और अध्ययनशील समाज निर्मित करने में मदद मिली है। जातिवाद, संप्रदायवाद, छुआछूत, ऊँच-नीच की भावना वाले संकीर्ण विचारों में कमी आई है। लोग अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक हुए हैं। लैंगिक भेदभाव भी कम हुआ है, जिसके फलस्वरूप बालिकाओं की शिक्षा और विकास के अवसरों में वृद्धि हुई है। इस प्रकार ग्रामीण समाज की तस्वीर बदलने में प्रौढ़ पुस्तकालयों का बहुत बड़ा योगदान है। इस सेवा को और अधिक बेहतर बनाया जाना चाहिए।

असम में पुस्तकालयों की व्यवस्था

भारतीय संस्कृति में पुस्तकालयों की व्यवस्था बहुत ही पुरातन है। अगर हम अपने इतिहास को देखें तो पाएँगे कि पुस्तक संस्कृति का अभ्युदय वेद-उपनिषद के सृजन से पहले ही शुरू हुआ था। हिंदू धर्म में ज्ञान की आराध्या देवी सरस्वती के काल्पनिक चित्र में हाथ में पुस्तक होना इस बात को दर्शाता है। तब से लेकर अब तक ज्ञान को पुस्तक में समाकर संरक्षण करके आगे लेकर जाने की व्यवस्था को हम 'पुस्तकालय' कहते हैं।

ज्ञान के भंडार, इन पुस्तकों के प्रयोजन कितने हैं, एक अध्ययनशील व्यक्ति ही अनुभव कर सकता है। सदियों से लोगों ने इस बात का अनुभव करके ही पुस्तकालयों की स्थापना की।

देखा जाए तो पुस्तकालय दो प्रकार के होते हैं, एक व्यक्तिगत और दूसरे सामूहिक।

कविता शइकीया राजखोआ

जन्म : 02 अक्तूबर, 1977

शिक्षा : बी.एड., एम.एससी.

संप्रति : विज्ञान शिक्षिका।

प्रकाशन : अदम्य संग्रामी कनकलता बरुआ, एकाजित एकुकि कविता (काव्य संकलन)। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित।

संपर्क : मोबाइल– 9101773655

ई-मेल : kabitasaikia1977@gmail.com

व्यक्तिगत पुस्तकालय में व्यक्ति अपनी रुचि के अनुसार पुस्तकें रखते हैं। किसी विशेष विषय के पंडित, विद्यार्थी या अध्ययनप्रिय व्यक्ति अपने प्रयोजन के हिसाब से पुस्तकें संग्रह करते हैं। इसलिए किसी विशेष विषय के अध्ययन के लिए पुस्तक की कमी हो जाती है। तब हम सामूहिक पुस्तकालयों कि इच्छा करते हैं, जो सभी लोगों की विभिन्न पुस्तकों के प्रयोजन पूरा कर सकते हैं। इसी प्रकार विश्व में विख्यात पुस्तकालयों की स्थापना हुई।

असम में पुस्तक संरक्षण तथा संग्रह की धारा सदियों पुरानी है। अहोम राजवंश (1228-1826) के शासन काल के पहले से ही असम भूमि तथा प्राग्ज्योतिषपुर में साहित्य, दर्शन तथा कला के चर्चे पूर्णतया विकसित हुए थे। इसका उल्लेख इतिहास के पन्नों पर, ताम्रपत्र और शिलालेख में पाये गए हैं।

सातवीं शताब्दी में कुमार भास्कर वर्मन (600-650) कामरूप के वर्मन वंश के अन्यतम राजा थे। उत्तर भारत के राजा हर्षवर्धन (या शीलादित्य) कुमार भास्कर वर्मन के समकालीन थे। हर्षवर्धन के साथ उनकी मित्रता थी।

उस समय चीनी परिवार्यक युवान् च्वांग भारत भ्रमण के लिए आए थे। उन्होंने कामरूप का भी भ्रमण किया था। अपनी यात्रा के वर्णन में कामरूप राज्य के बारे में लिखा था और तब असम की राजधानी प्राग्ज्योतिषपुर थी। भास्कर वर्मन के निधानपुर के शिलालेख इन सब बातों की पुष्टि करते हैं। वाणभट्ट की 'हर्षचरित' उस समय की उल्लेखनीय रचना है।

पुस्तक संरक्षण करने की व्यवस्था अहोम राजत्वकाल में सुंदर रूप से प्रचलित थी।

जब पहले अहोम राजा चाउलुं चु-का-फा (1228-1268) ने असम भूमि में प्रवेश किया था तब वह अनेक परंपराएँ साथ में लेकर आए थे। उसमें से इतिहास लेखन की परंपरा भी अन्यतम थी। असमिया भाषा में इतिहास को 'बुरंजी' कहते हैं। बुरंजी का मतलब है ज्ञान के भंडार।

"डिजिटल मीडिया, टेक्नोलॉजी के इस समय पर भले ही पुस्तकालयों की प्रयोजन न के बराबर है, पर पुस्तक हमेशा से ज्ञान की भंडार हैं और हाथ में लेकर पुस्तक पढ़ना और संरक्षण करना जरूरी है। पुस्तकों को डिजिटलाइजेशन करना भी चाहिए, पर साथ-ही-साथ परंपरागत पुस्तकालयों के प्रति नई पीढ़ी को आकर्षित करना जरूरी है। संस्कारी भविष्य के लिए और भारतीय इतिहास को जानने के लिए ऐतिहासिक पुस्तकालय नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों के बारे में भी चर्चा करना जरूरी है।"

इस बुरंजी को दो भागों में बाँट सकते हैं। पहला, राजपरिवार में लिखी गई बुरंजी और दूसरे, अन्य परिवारों में लिखी गई बुरंजी। इन बुरंजियों को एक विशेष पौधे के बल्कल से तैयार किये गए पत्ते पर लिखा जाता था, जिसे 'साँचि पौधा' कहते हैं। इन पुस्तकों को बहुत ही सँभालकर पुरुषानुक्रम से संरक्षण कर रहे थे। हम इन पुस्तकों के संरक्षण को 'व्यक्तिगत पुस्तकालय' भी कह सकते हैं। इन बुरंजियों के पुस्तकों से हमें अहोम राजत्वकाल के साहित्य, संस्कृति तथा स्थापत्य कला के बारे में ज्ञान हुआ।

असमिया भाषा साहित्य के पुरोधा तथा भारतीय नव वैष्णव आंदोलन के पूर्वी भारत के गुरु श्रीमंत शंकरदेव (1449-1569) और उनके शिष्यों ने कीर्तन, नामघोषा, भक्ति रत्नाकर, नाटक, बरगीत, आदि दर्शन तत्वों की पुस्तक रचना की थी। इन सभी पुस्तकों को वैष्णव सत्रों में संरक्षित करके रखा गया था। वहीं पर चर्चा करते थे और वहीं से दीक्षा लेकर आम लोगों के बीच तत्व ज्ञान और शरण देने की व्यवस्था चली आ रही थी। समाज तथा युवाओं को संस्कारित करने के लिए गुरुमुखी या शरण लेने की परंपरा अब भी है।

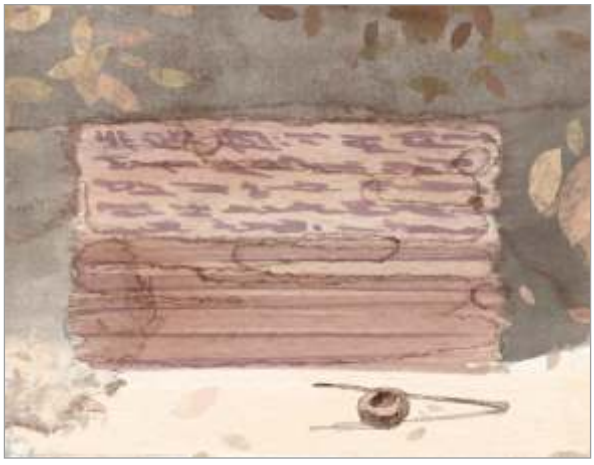

अहोम राजा शिव सिंह और रानी अंबिका देवी (1734) के शासन काल में सुकुमार बरकाथ द्वारा रचित हस्ती के जीवन पर आधारित ग्रंथ 'हस्तिविद्यार्णव' एक सचित्र उल्लेखनीय पुस्तक है।

साँचि पत्र में लिखी गई बुरंजी या पुस्तक लंबे समय तक सुरक्षित नहीं रह सकती, इसलिए समय-समय पर फिर से लिखते रहते थे।

यंदाबू संधि (1826) के बाद जब असम ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन क्षेत्र में शामिल हो गया तब क्रिस्टीन मिशनरी धर्म प्रचार के लिए, असमिया भाषा में पुस्तक प्रकाशित करने हेतु स्थानीय लोगों को पढ़ा-लिखा कर बाइबिल का असमिया भाषा में अनुवाद करवाया। सन् 1827 में असम में जन्मे निधिराम केउत नामक युवक ने मिशनरियों की अनुवाद करने में सहायता की।

सन् 1860 में जन्मे व्यवसायी हरिविलास अग्रवाल जी ने गुरु श्रीमंत शंकरदेव और माधवदेव जी के पुस्तकों को प्रिंट करके असमिया भाषा साहित्य के बुनियाद को संरक्षित तथा मजबूत किया और तेजपुर शहर में पुस्तकालय बनाकर संग्रह किया। ये पुस्तकालय असमिया भाषा साहित्य और संस्कृति के एक मील का पत्थर बने।

आज असम में अनेक पुस्तकालय हैं। डिजिटल मीडिया, टेक्नोलॉजी के इस समय में भले ही पुस्तकालयों का प्रयोजन न के बराबर है, पर पुस्तक हमेशा से ज्ञान की भंडार हैं और हाथ में लेकर पुस्तक पढ़ना और संरक्षण करना जरूरी है। पुस्तकों को डिजिटलाइजेशन करना भी चाहिए, पर साथ-ही-साथ परंपरागत पुस्तकालयों के प्रति नई पीढ़ी को आकर्षित करना जरूरी है। संस्कारी भविष्य के लिए और भारतीय इतिहास को जानने के लिए ऐतिहासिक पुस्तकालय नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों के बारे में भी चर्चा करना जरूरी है। प्राचीन विश्व प्रसिद्ध पुस्तकालय भारत में अवस्थित थे, कभी-कभी हम भूल जाते हैं। हमें खुद को पहचानना है।

शेष कथन

समीक्षक : **डॉ. योगेंद्र नाथ शर्मा 'अरुण'**

लेखक : **गोपबंधु मिश्र**

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली-110070

पृष्ठ : 142

मूल्य : रु. 225/-

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा प्रकाशित कृति 'शेष कथन' वस्तुतः कविकुल गुरु महाकवि कालिदास द्वारा प्रणीत प्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' के कई पात्रों और कथाक्रम में छूट गए घटनाक्रमों का पुनराख्यान है, जो दुष्यंत एवं शकुंतला की लोकप्रिय प्रणय-कथा का प्राण रहे हैं, किंतु महाकवि कालिदास ने उन्हें छुआ नहीं।

संस्कृतज्ञ प्रो. गोपबंधु मिश्र ने महाकवि कालिदास के प्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' के ऐसे पात्रों की अंतर्व्यथा को इस कृति में वाणी दी है। नाटक के कथानक के अनुसार, महर्षि दुर्वासा के शाप के कारण जब राजा दुष्यंत अपनी अँगूठी शकुंतला से न पाकर, उसे पहचानने से ही इनकार कर देते हैं, तब गर्भवती शकुंतला के साथ वहाँ गए ऋषि कण्व के शिष्य शारंगरव, माता मेनका आदि की मानसिक दशा कैसी रही होगी? क्या इन सबको राजा दुष्यंत के अप्रत्याशित व्यवहार से घोर वेदना नहीं हुई होगी? ऐसे ही सहज और स्वाभाविक प्रश्नों को प्रो. गोपबंधु मिश्र ने सहृदय पाठकों के लिए अपनी कृति 'शेष कथन' में वाणी दी है। संस्कृत की इस कृति का अनुवाद किया है डॉ. शैलेष कुमार मिश्र ने।

इस अत्यंत विलक्षण कृति का 'समर्पण' सचमुच कृतिकार के लक्ष्य को हमारे समक्ष उजागर कर देता है, देखिए—'समर्पण, 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' नाटक के शकुंतला-प्रत्याख्यान दृश्य से व्यथित हृदय-सहृदयों को'।

वस्तुतः, अनिंद्य सुंदरी, अप्सरा मेनका की पुत्री और कण्व ऋषि की पोषित पुत्री, शकुंतला की वेदना ने उसके जन्म और जीवन से जुड़े रहे माँ मेनका, ऋषि विश्वामित्र, गौतमी और सबसे बढ़कर ऋषिवर कण्व को क्या व्यथित और उद्विग्न नहीं किया होगा?

निस्संदेह, प्रो. गोपबंधु मिश्र द्वारा औपन्यासिक शैली में लिखी गई यह विशिष्ट कृति विलक्षण कल्पना का अप्रतिम उदाहरण हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है।

'शेष कथन' कृति निश्चय ही कविकुल कालिदास की अनूठी कल्पना को सर्वथा विलक्षण रूप में पाठकों के सामने रखते हुए, कालिदास द्वारा विस्मृत कर दिये गए ऐसे पात्रों की व्यथा को वाणी देती है, जो शकुंतला के साथ-साथ व्यथित हुए होंगे, लेकिन नाटक के संयोजन-क्रम में महाकवि कालिदास उन्हें पाठकों के सामने नहीं प्रस्तुत कर सके।

भारत में पत्रकारिता

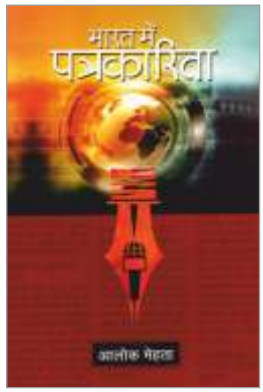

समीक्षक : **सुधांशु गुप्ता**

लेखक : **आलोक मेहता**

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली-110070

पृष्ठ : 396

मूल्य : रु. 470/-

पिछली सदी के नौवें दशक में आर्थिक उदारीकरण, वैश्वीकरण, सैटेलाइट चैनलों की शुरुआत, लाइव प्रसारण, इंटरनेट, सोशल मीडिया, यू-ट्यूब ने भारतीय समाज को बहुत बदल दिया था। यह वह दौर था, जब अचानक पाँच से दस हजार रुपये माह पगार पाने वाले पत्रकारों की आय दोगुनी-तिगुनी तक हो गई थी। पत्रकार अब कॉलर खड़े करके कारों में घूमने लगे थे। समाज में और भी बहुत कुछ तेजी से बदला था। पैसे की भूख लगातार बढ़ती गई, जीवन-मूल्यों का पतन हो गया। नए मूल्य क्या थे, ये किसी को पता नहीं था। हम आत्मकेंद्रित समाज बना रहे थे। जहाँ सिर्फ 'मैं' ही 'मैं' रह गया था, 'हम' जैसी कोई चीज नहीं बची थी। जाहिर है कि पत्रकारिता पर इस स्थिति ने दबाव बहुत बढ़ा दिया। ऐसे में वरिष्ठ पत्रकार आलोक मेहता भारत में पत्रकारिता के इतिहास, पत्रकार और पत्रकारिता की दुविधा, सत्ता से उसके संबंधों, पत्रकार की नैतिकता आदि अनेक विषयों के अपने अनुभवों को अपनी पुस्तक 'भारत में पत्रकारिता' के आईने में दिखाते हैं। आलोक मेहता 'हिंदुस्तान', 'दैनिक भास्कर', 'आउटलुक साप्ताहिक', 'नई दुनिया', 'नेशनल दुनिया' आदि अखबारों के संपादक रहे। वे रेडियो वॉइस जर्मनी-कोलोन में तीन वर्ष तक हिंदी के संपादक रहे। उन्होंने अनेक देशों की यात्राएँ कीं। उन्हें अनेक पुरस्कार मिले। जाहिर है कि उनके अनुभवों का दायरा वृहद् है। पत्रकारिता के रास्ते खोजते हुए उन्होंने बताया कि दो शताब्दी पहले जब पत्रकारिता अपनी बाल्यावस्था में थी, इसे हड़बड़ी में रचे गए साहित्य के रूप में परिभाषित किया गया था। वह यह भी कहते हैं

कि पत्रकार जब पत्रकारिता से हटकर काम करते हैं, तब पत्रकारिता दूषित होती है। राजनेता कभी विचारों के आधार पर, कभी प्रलोभन के बल पर, कभी सांप्रदायिक आधार पर पत्रकारों को प्रभावित करते हैं। इसमें एक नया आधार और जुड़ गया है, और वह है पत्रकारों को डरा-धमकाकर अपने पक्ष में करना। इन दबावों में पत्रकारों की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। पत्रकार इस समय इस जिम्मेदारी को किस तरह उठा पा रहे हैं, यह पुस्तक में खोजना होगा। एक दिलचस्प तथ्य की ओर आलोक मेहता ध्यान दिलाते हुए लिखते हैं, '90 के दशक में अखबारों को उत्पाद की तरह मानने के साथ बाजार में अग्रणी होने के लिए तेज दौड़ने वाले घोड़े की तरह अनुभवी और बुजुर्ग संपादकों की अपेक्षा कम उम्र के संपादक बनाए जाने का सिलसिला शुरू हुआ।' 90 के दशक में 'संडे टाइम्स', लंदन से प्रकाशित होने वाले 'ऑब्जर्वर', 'गार्जियन', 'संडे मेल', 'टेलिग्राफ', 'इंडिपेंडेंट' और 'द टाइम्स' में कई संपादकों की उम्र 45 साल से अधिक नहीं थी। कमोबेश, यही स्थिति भारत में भी दिखने लगी।

पत्रकारिता में अपनी यात्रा के अनुभव पर वह लिखते हैं, 'सन् 1968 की बात है। उस समय 'नई दुनिया' के माथुर जी पत्रकार-लेखक के रूप में सितारे की तरह थे। एक दिन मैंने उनसे पूछा, "पत्रकारिता के नियम-कानून क्या होते हैं और कहाँ मिल सकते हैं?" माथुर जी ने मीठी मुसकान के साथ उत्तर दिया, "पत्रकारिता के नियम-कानून किसी किताब में नहीं मिलेंगे। वे तो आपको खुद बनाने होंगे। लक्ष्मण रेखा घर के लोग ही खींच सकते हैं, बाहर वाला तो रेखा गलत ही खींचेगा या फिर अपहरण करके ले जाएगा।'

आलोक मेहता ने पुस्तक में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से मुकाबला, इंटरनेट क्रांति और सोशल मीडिया, भाषा के प्रयोग, अपराध की खबरों में संयम, अदालत की रिपोर्टिंग, फिल्म पत्रकारिता, कार्टून की महत्ता, सूचना पाने का अधिकार और जिम्मेदारी पर चर्चा की है। साथ ही, 'सेंसरशिप का काला अध्याय' में आपातकाल के दौर में पत्रकारों और खबरों को कैसे सेंसर किया गया, उन्होंने इस पर भी विस्तार से लिखा है। पत्रकारिता के छात्रों के लिए किताब उपयोगी है। इसमें उन्हें ब्रिटिश राज के काले कानून, एडिटर्स गिल्ड की आचार संहिता, भारतीय प्रेस परिषद् : पत्रकारिता के आचरण के मानक, प्रेस परिषद् में शिकायत का तरीका, प्रेस परिषद् में शिकायत और निवारण, सांप्रदायिक हिंसा : मीडिया की भूमिका जैसे विषयों पर भरपूर जानकारियाँ मिलेंगी।

आलोक मेहता ने आधुनिक पत्रकारिता के जनक जोसेफ पुलित्जर के इस ब्रह्म वाक्य का हवाला देते हुए कहा है कि 'प्रगति और सुधार के लिए सदैव संघर्ष करो, अन्याय और भ्रष्टाचार को कभी न सहो, सभी दलों के नेताओं से निपटो, किसी एक दल से मत जुड़ो, विशिष्ट वर्ग और सामाजिक लुटेरों का विरोध करो, गरीबों के प्रति सहानुभूति में कमी मत आने दो, जन कल्याण के लिए समर्पित रहो और केवल समाचार छापने मात्र से संतुष्ट न हो जाओ। पत्रकारिता का मतलब है यथार्थ में जीना, सत्य को पाने और सही रास्ता दिखाने के लिए ठीक देखना और वर्णन करना।'

अगर पुलित्जर के इस कथन का दस प्रतिशत भी पत्रकार अपना लें तो सच में पत्रकारिता की दुनिया बदल सकती है।

संस्कृति के आयाम

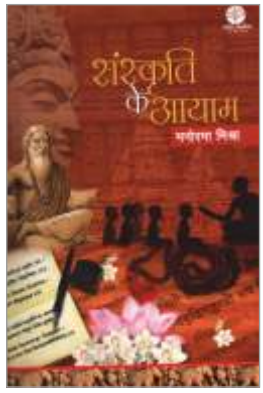

समीक्षक : **सूर्य कांत शर्मा**
लेखिका : **डॉ. मनोरमा मिश्रा**
प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली-110070
पृष्ठ : 150
मूल्य : रु. 215/-

वर्तमान परिदृश्य में और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में, संस्कृति, संस्कार और लोकमंगल जैसी आधारभूत सारगर्भित अवधारणाएँ अब भारतीय जनमानस में प्रभावपूर्ण ढंग से अपना अस्तित्व और उपादेयता को तर्कपूर्ण ढंग से जनमानस में रच-बसकर मूर्तिमान हो रही हैं। ऐसा होना राजनीतिक इच्छाशक्ति और बदले युग में अवश्यंभावी ही है। ग्लोकल से ग्लोबल और आत्मनिर्भर होने के आत्मविश्वास से लबरेज भारत अब युवाओं का देश है। भारत आजादी के अमृतकाल के बाद अब अमृत कालखंड में अपनी युवाशक्ति को अर्वाचीन और प्राचीन संस्कृति, संस्कार और लोकमंगल की त्रिभुजीय संरचना से परिचित कराकर, उन्हें 'वसुधैव कुटुंबकम्' की वृहत संस्कृति के जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनाना चाहता है और प्रयासरत भी है, इसलिए भारतीयता का भविष्य उज्ज्वल होना स्वाभाविक है। प्रश्न उठता है कि सरल, सहज और सारगर्भित, परंतु संक्षिप्त साहित्य या पुस्तकें कैसे आएँगी? सरकारी प्रकाशन संस्थानों में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत इसी क्रम में पुस्तकों के प्रकाशन में लगा हुआ है और संभवतः समीक्षित पुस्तक उसी दिशा को इंगित करता है।

पुस्तक की लेखिका भी साहित्य और अध्यापन से जुड़ी रही हैं और प्रस्तुत पुस्तक में यह झलक देखी जा सकती है। पुस्तक में अनेक प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्रिकाओं, ग्रंथों, आलेखों और लेखकों, जिनमें विषय प्रवर्तक, मूर्धन्य विद्वान और गजब के शिक्षक और शिक्षा शास्त्री भी हैं, का समावेश बखूबी किया गया है। उदाहरण के तौर पर, पहले क्रमशः पुस्तक, पत्रिकाएँ, ग्रंथ और फिर साहित्यिक विभूतियाँ, 'कल्याण' पत्रिका के विभिन्न अंक, आधुनिक हिंदी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, 'शतपथ ब्राह्मण', 'वेद', 'संस्कृति के चार

अध्याय', 'भारतीय संस्कृति की रूपरेखा', 'श्रीमद्भागवत', 'गरुड़ पुराण', 'महाभारत के विभिन्न पर्व', 'अथर्ववेद', 'मनुस्मृति', 'साहित्य का समाज शास्त्र', 'कालिदास की लालित्य योजना', 'हिंदी साहित्य का वृहद् इतिहास', 'नालंदा अध्ययन कोश' और प्रसिद्ध नामों में गोस्वामी तुलसीदास, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पं. राहुल सांकृत्यायन, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, डॉ. सावित्री सिन्हा, विजयेंद्र स्नातक, डॉ. नागेंद्र, डॉ. भोलानाथ तिवारी, मैनेजर पांडेय, रामधारी सिंह दिनकर, स्वामी करपात्री जी, बाबू गुलाब राय, डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार के साथ-साथ विदेशी पुस्तकों और विद्वानों के संदर्भ भी यथास्थान पर दिये गए हैं।

पुस्तक कुल तीन अध्यायों में संस्कृति, संस्कार और लोकमंगल को विस्तृत रूप में बताती है। इन तीनों अवधारणाओं की उत्पत्ति, परिभाषा, भाषा विज्ञान की दृष्टि से इनकी उत्पत्ति और उपादेयता बतायी गई है।

पुस्तक का पहला अध्याय संस्कृति की ज्ञान मीमांसीय और तत्व मीमांसीय विवेचना करता है। संस्कृति-निर्माण के प्रमुख तत्वों पर प्रकाश डालता है और संस्कृति-स्थापना में संस्कारों की भूमिका को सत्यापित भी करता है। पुस्तक का दूसरा अध्याय व्यक्ति और संस्कार पर आधारित है। सही शब्दों में कहा जाए तो संस्कार मानव-जीवन की शोधन शाला है, जो एक सुसंस्कृत समाज के निर्माण की गारंटी भी है। इसमें सबसे आधारभूत या महत्वपूर्ण बात यह भी है कि इसे हम एक अनिवार्य तत्व या घटक भी कह सकते हैं कि उन संस्कारों में लोकमंगल भाव का होना भी परम आवश्यक है।

लेखिका ने संस्कृति और संस्कार के अध्यायों को वर्णित कर लोकमंगल को विशेष रूप से गहन अध्ययन करके तीसरे और अंतिम अध्याय के रूप में पाठक को समग्र रूप से सूचित करने का सफल प्रयास किया है। लोकमंगल को देखा जाए, तो यह संस्कार और संस्कृति का साकार रूप है। पुस्तक में लोकमंगल को आम पाठकों तक पहुँचाने हेतु उसके आयामों को, यथा लोक मांगलिक वस्तुएँ, लोक मांगलिक चिह्न, लोक मांगलिक पुष्प, लोक मांगलिक वृक्ष एवं फल, लोक मांगलिक तृण एवं वनस्पति, लोक मांगलिक पशु-पक्षी, धातुएँ, पात्र, सरिताएँ, लोक मांगलिक मानव, लोक मांगलिक देवी-देवता, लोक मांगलिक वचन एवं आशीष और उनका सटीक वर्णन पाठकों को एक अनोखी यात्रा पर ले जाता है।

अस्तु, कुल मिलाकर यह पुस्तक संस्कृति, संस्कार और लोकमंगल को एक विस्तृत कैनवास पर बड़े मनोयोग से उकेरती है और संग्रहणीय पुस्तक की श्रेणी में आती है।

समीक्षक : **मनोहर चमोली 'मनु'**

लेखक : **रोल्ड डाल**

अनुवाद : **मृणालिनी पांडेय**

प्रकाशक : मंजुल पब्लिशिंग हाउस, मालवीय नगर, भोपाल

पृष्ठ : 246

मूल्य : रु. 350/-

मटिल्डा

'मटिल्डा' एक बाल उपन्यास है। मंजुल पब्लिशिंग हाउस विश्व प्रसिद्ध कृतियों को हिंदी में प्रकाशित करने के लिए प्रसिद्ध है। ब्रिटिश लेखक रोल्ड डाल बाल साहित्य में बेहद मशहूर रहे। लघुकथाओं के साथ उन्होंने कविताएँ भी लिखी हैं। वे 20वीं सदी के उन चुनिंदा बाल साहित्य के लेखकों में एक हैं, जिनकी पुस्तक की प्रतियों की बिक्री लाखों में होती रही है। इस जाने-माने बाल उपन्यास का हिंदी में अनुवाद कर मृणालिनी पांडेय ने भारतीय पाठकों के लिए एक अनुपम कृति उपलब्ध कराई है। मटिल्डा ब्रिटिश लेखक रोनाल्ड डाल की एक पुस्तक है। यह उपन्यास इतना मशहूर हुआ था कि लंदन में इसे 80 के दशक में क्वेंटीन ब्लेक के चित्रों के साथ प्रकाशित किया गया। इसे ऑडियो रीडिंग के तौर पर भी लाया गया। इस उपन्यास पर एक फिल्म भी बनायी गई है। यह इतना चर्चित रहा कि बी.बी.सी. रेडियो ने इस पर केंद्रित चार भागों का प्रसारण किया।

उपन्यास के केंद्र में मटिल्डा ही है। अन्य पात्रों में माइकल, मिस हनी, श्री एवं श्रीमती वर्मवुड, ब्रूस बॉग ट्रॉटर, अमैडा थ्रिप, मिस ट्रंचबुल हैं। मटिल्डा मेधावी है। वह एक साल की आयु में ही बोलना सीख जाती है। लाइब्रेरी में वह बहुत कम उम्र में ही किताबें पढ़ लेती है। वह लंबी कहानियाँ भी पढ़ लेती है। हालाँकि, माता-पिता से इतर उसका स्कूल उसकी कुशाग्र बुद्धि से, खासकर अध्यापिका मिस हनी हैरान हो जाती हैं। मटिल्डा के साथ बहुत कुछ ऐसा होता है, जिसे पसंद नहीं किया जाता। मिस हनी ही हैं, जो मटिल्डा को समझ पाती हैं। अनुमान और कल्पना का इस उपन्यास में शानदार मिश्रण है। मटिल्डा के पिता के न रहने पर उसके अपने उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते। उपन्यास की कथावस्तु बेहद शानदार है। कथा रोमांचक ढंग से आगे बढ़ती है। पाठक हर बार मटिल्डा के साथ होने वाली घटनाओं के प्रति सतर्क रहता है। उसे यह जानने की इच्छा हरदम रहती है कि अब मटिल्डा के साथ क्या होने वाला है। मिस हनी के साथ मटिल्डा का चित्रण शानदार बन पड़ा है।

हिंदी में अनूदित इस उपन्यास के छोटे-छोटे 21 उपखंड हैं। सब उपखंड एक-दूसरे के साथ इस तरह गुँथे हुए हैं कि किसी खंड को छोड़कर आगे नहीं बढ़ा जा सकता। हिंदी में अनूदित इस पुस्तक में

यह खंड पुस्तकप्रेमी, श्री वर्मवुड, कारों का एक माहिर डीलर, हैट और सुपरग्लू, एक भूत, अंकगणित, प्लैटिनम का सुनहरा आदमी, मिस हनी, ट्रंचबुल, माता-पिता, हैमर थ्रोइंग, ब्रूस बॉग ट्रॉटर और केक, लैवेंडर, साप्ताहिक परीक्षा, पहला चमत्कार, दूसरा चमत्कार, मिस हनी की कुटिया, मिस हनी की कहानी, सबके नाम, अभ्यास, तीसरा चमत्कार और एक नया घर के नाम से हैं।

माना जाता है कि उपन्यास की कथावस्तु रोल्ड डाल के जीवन के आस-पास की घटनाओं से ही प्रेरित है। सन् 2022 में एक फिल्म भी मटिल्डा पर आधारित आई है। यह फिल्म नेट-फ्लिक्स पर उपलब्ध है। क्वेंटीन ब्लेक के बनाये हुए चित्र इस हिंदी संस्करण में हू-ब-हू लिये गए हैं। ये चित्र इतने प्रभावी हैं कि वह उपन्यास को आगे बढ़ाते हैं। अनुवाद शानदार हुआ है। एक बानगी इसी पुस्तक से—आगे की कतार में बैठा हुआ एक बहादुर छोटा लड़का बोल पड़ा, "आप भी तो कभी एक छोटी बच्ची रही होंगी न, मिस ट्रंचबुल?"

"मैं कभी भी छोटी नहीं थी," वे झल्लाईं। "मैं हमेशा से ही बड़ी रही हूँ और मुझे समझ नहीं आता कि बाकी लोग इस प्रकार क्यों नहीं हो सकते।" इसी पुस्तक से मटिल्डा के चरित्र की एक बानगी, "क्या तुम कभी पढ़ना नहीं छोड़ती?" उन्होंने उससे झिड़कते हुए कहा। "ओ, हेलो, डैडी", उसने प्यार से उत्तर दिया। "क्या आपका दिन अच्छा रहा?"

"यह क्या कचरा है?" उन्होंने उसके हाथों से किताब छीनते हुए कहा, "डैडी, यह कचरा नहीं है, यह दिलचस्प है। इसका नाम है 'द रेड पोनी'। इसको जॉन स्टीनबेक ने लिखा है कि वे एक अमेरिकी लेखक हैं। आप इसे क्यों नहीं पढ़ते? आपको ये अवश्य पसंद आएगी।"

"कचरा", वर्मवुड ने कहा, "अगर इसे एक अमेरिकी ने लिखा है तो फिर यह जरूर कचरा होगी। वे सब कचरा ही लिखते हैं।"

"नहीं, डैडी, यह सचमुच बहुत सुंदर है। यह एक..."

कुल मिलाकर यह उपन्यास पाठकों को आनंद देने वाला है। बहुत ज्यादा भाव-भूमि, पृष्ठभूमि और विदेशी धरती से इतर बचपन, परिवार और बच्चों के इर्द-गिर्द की दुनिया के दर्शन वाली यह पुस्तक है। इसे जरूर पढ़ा जाना चाहिए। यह पसंद भी की जाएगी, यह तय है।

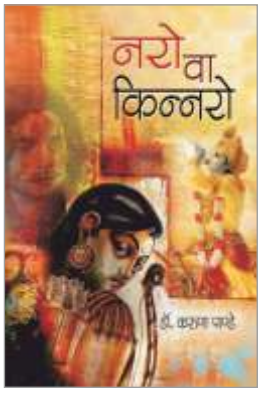

समीक्षक : **डॉ. हरिसुमन बिष्ट**
लेखक : **डॉ. करुणा पांडे**
प्रकाशक : नारवाल प्रकाशन, पिलानी, राजस्थान
पृष्ठ : 184
मूल्य : रु. 550/-

नरो वा किन्नरो

'नरो वा किन्नरो' शीर्षक की पुस्तक को देखते ही स्मृति में महाभारत के कई पात्रों की वेदनापूर्ण कथा साकार हो उठती है। जब इस पुस्तक के पृष्ठ-दर-पृष्ठ पलटते हैं, तो इसमें इतिहास और पुराख्यानों से जुटाए तथ्यों की भरपूर जानकारी होने की पुष्टि होती चली जाती है। पूरी तरह से किन्नर जीवन से संबंधित आवश्यक एवं महत्वपूर्ण तथ्य इस पुस्तक के मूलाधार भी बनते जाते हैं। पुस्तक को तीन खंडों में विभाजित किया गया है। पहला शोध खंड है, जिसमें किन्नर जीवन से जुड़े पौराणिक संदर्भों, ऐतिहासिक तथ्यों, सामाजिक परिस्थितियों का गहन अध्ययन किया गया है। इस जीवन के प्रति पुरानी भ्रांतियों और आधुनिक जीवन में उन भ्रांतियों के टूटने को विस्तारपूर्वक सोदाहरण बताने का प्रयास किया गया है। दूसरा काव्य खंड है, जिसमें छह कविताएँ हैं, जो इसी जीवन के मर्म को छूती हैं और तीसरा कथा खंड है। इसके अंतर्गत नौ लंबी कहानियों को समाहित किया गया है। संपूर्णता में यह विपुल सामग्री मानव-जीवन की विसंगतियों से परिचित ही नहीं कराती, अपितु पाठक के अंतर्मन को भी विचलित कर देती है। पुस्तक में किन्नरों के जीवन का सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ही नहीं किया गया, बल्कि संपूर्ण मनुष्य जीवन की उत्पत्ति के साथ ही इस जीवन की शुरुआत होने के विमर्श को गंभीरतापूर्वक रखा गया है। यद्यपि विश्व साहित्य में किन्नरों के जीवन से जुड़े किस्से-कहानियाँ और लिखित साहित्य की भरमार है, जिनमें हर रचनाकार की अपनी दृष्टि और उनके अपने विमर्श देखने को मिलते हैं, किंतु यह शोध सामग्री अपने पूर्ववर्ती रचनाकारों की रचनाओं से कुछ संदर्भों में अपनी विशिष्टता लिये हुए है, भिन्न है।

डॉ. करुणा पांडे ने इस पुस्तक में किन्नरों की जीवन-शैली और उनकी जीवन-दृष्टि और उनके विमर्श को भी समझने और समझाने का प्रयास किया है। यह भी कि हम और हमारा समाज किन्नर के संबंध में क्या सोचता है? किन्नरों का ऐतिहासिक महत्व और उनसे जुड़े प्रसंगों को सिलसिलेवार देना ही यहाँ महत्वपूर्ण नहीं समझा गया है, बल्कि विज्ञान के इस युग में ऐसे जीवन के होने के कारणों को बताते हुए उनके जीवन के महत्व को भी यथारूप रखने का प्रयास किया गया है। समाज में किन्नर के होने का मतलब शुभ कार्यों के समय तालियाँ बजाना, गायन करना और ओछी हरकतें करना नहीं है, बल्कि शारीरिक रूप से वे विकलांग अवश्य हैं, पर मानसिक, भावात्मक और मानवीय सरोकारों में हमारी ही तरह होना है। कई बार तो उससे भी आगे बढ़कर सही अर्थों में अपने मानवीय सरोकारों का प्रदर्शन करने में भी वे नहीं चूकते हैं। अतः हमारी तरह ही किन्नर भी समाज, देश की हर गतिविधि में भागीदारी करना चाहते हैं।

ये लोग न हेय हैं और न ही घृणा के पात्र हैं। इनको भी हमारे जैसा सम्मानित जीवन जीने का मौलिक अधिकार है।

दरअसल, सृष्टि के आरंभ से लेकर रामायण, महाभारत काल, मुगल काल तक किन्नरों को एक सम्मानित और सुरक्षित जीवन प्राप्त था। इनके अस्तित्व के प्रमाण प्रामाणिक ग्रंथों और इतिहास की पुस्तकों से प्राप्त होते हैं। अंग्रेजी शासनकाल में किन्नरों को 'थर्ड जेंडर' के रूप में मान्यता दी गई। स्वतंत्रता आंदोलन में इनकी सक्रिय सहभागिता को देखकर इन पर नियंत्रण रखने के उद्देश्य से सन् 1871 में ही अपराधी जनजाति अधिनियम पारित कर इस समुदाय को अपराधी घोषित कर दिया गया था और इस अधिनियम के अंतर्गत पुलिस निगरानी बढ़ा दी गई और इनकी निजी जानकारियों को पंजीकृत करना आरंभ कर दिया गया था।

अब इस विकृति का सम्मानजनक समाधान ढूँढ़ने की आवश्यकता है। किन्नर होने की जो एक अलग पहचान रूढ़ हो चुकी है, उसकी जड़ों पर ही प्रहार किया जाए। वे हमारी तरह सोचने और वैसा ही विमर्श करने का सामर्थ्य रखते हैं। अकेलेपन, अवसाद, अवहेलना और सामाजिक तिरस्कार से ग्रस्त किन्नर हमारी तरह का जीवन जीना चाहते हैं। हमारी तरह सामाजिक होना चाहते हैं। ये हमारे समाज में घुल-मिल नहीं पाते। आखिर क्यों? इसकी भी पड़ताल होनी चाहिए, लेकिन जब किन्नर हमारे बीच आते हैं, शुभाशीष लेकर आते हैं और लौटते हैं तो शुभाशीष ही देकर जाते हैं। आदिकाल से मुगल काल तक जब दृष्टि दौड़ती है, तो अपनी विश्वसनीयता, वचनबद्धता और अपने समर्पण के लिए किन्नर हमेशा जाने जाते रहे हैं। फिर भी, हम उनसे दूरी बनाते हैं, तो हमें अपना व्यवहार, अपना विमर्श बदलना होगा। विश्व में जो एक जैसा क्रूरतापूर्वक किन्नर बनने का चलन रहा है, उसे दृढ़ता से बदलना होगा। इस दृष्टि से 'नरो वा किन्नरो' पुस्तक को किन्नर जीवन को समझने के लिए इस पुस्तक का आना एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में देखा जाना चाहिए। भले ही यह कोई समाधान देने के उद्देश्य से नहीं लिखी गई है, किंतु इस गंभीर पीड़ा को प्रभावपूर्ण ढंग से रखने में यह अवश्य ही एक सफल पुस्तक मानी जा सकती है। इसकी भाषा सरल और बोधगम्य है। आरंभ से अंत तक इसे पढ़ने की उत्सुकता बनी रहती है।

समीक्षक : **रामलाल शर्मा**

लेखक : **जगदम्बा मल्ल**

प्रकाशक : सुरभि प्रकाशन, दिल्ली

पृष्ठ : 1146

मूल्य : रु. 1750/-

पूर्वोत्तर के प्रहरी : नागालैंड

» नागा समाज के बारे में अनेक मिथक प्रचलित हैं। 'नागा लोग जंगली होते हैं, अर्ध-नग्न होते हैं, कच्चे मांस और कीड़े-मकोड़े सब खाते हैं। गाय-बैल, भैंस, हाथी, घोड़े, सूअर, कुत्ता, बिल्ली, सियार, लोमड़ी, बंदर, साँप, बिच्छू और मानव मांस—सब खाते हैं। 15-15 दिन का सड़ा मांस भी खा जाते हैं। ये पहाड़ की चोटियों के घने जंगलों के बीच बसे गाँवों में रहते हैं और थोड़ा भी आपसी कलह या पड़ोसी गाँव से मतभेद होने पर घात लगाकर आक्रमण करके धोखे से अपने विरोधी का गला काट लाते हैं और उसे अपने घर में विजय-चिह्न के रूप में सँजोकर रखते हैं।' ईसाई मिशनरियों ने ऐसा प्रचारित किया। चर्च ने इस परंपरा को शिरोच्छेदन (head-hunting) कहा। बस, क्या था, अंग्रेजों के टट्टू और साम्यवादी लेखकों ने इसे पकड़ लिया और खूब प्रचारित किया। यह अपमानजनक अफवाह चर्च और अमेरिकन तथा ब्रिटिश ईसाई मिशनरियों ने समग्र ईसाई देशों और भारतवर्ष में चर्च संगठन और ईसाई तथा भारतवर्ष विरोधी संचार माध्यमों द्वारा फैलाया और अपील की कि इन जंगली और वनैले नागाओं को सभ्य बनाने और शिक्षित करने के लिए मिशनरी स्कूलों और चर्च को आर्थिक संसाधन भेजें। वृहत्तर हिंदू समाज ने इन नागा हिंदुओं की चिंता नहीं की। चर्च, ईसाई मिशनरियों की सेना, अंग्रेजों की सरकार और अंग्रेज कमांडरों के अधीन कार्यरत हिंदुओं की सेना (असम राइफल्स और गोरखा रेजिमेंट आदि) इन सबके गर्हित गठजोड़ ने हिंदू नागाओं को त्रस्त कर दिया, उनकी कमर तोड़ दी; जिन्होंने इनका विरोध किया, उनकी हत्या कर दी।

ईसाई मिशनरियों द्वारा बल, धोखा और लालच दिखाकर ईसाई बनाने के साथ चर्च ने देश-विरोधी कथानक प्रचारित किया—'नागा अनादि काल से स्वतंत्र थे, भारतवर्ष से अलग थे और कभी भी हिंदू नहीं थे, इन नागाओं को भारतवर्ष की हिंदू सरकार ने बलात् गुलाम बना लिया है।' ईसाई मिशनरियों ने नागा नेशनल काउंसिल (NNC) नामक आतंकवादी संगठन का गठन कर उसे चर्च सेना का काम सौंप दिया। एन.एन.सी. ने मार-मारकर हिंदू नागाओं को ईसाई बनाया, विरोध करने वालों की हत्या कर दी और गाँव-गाँव में चर्च बनवाए। ये सभी चर्च आतंकवादियों की शरणस्थली बन गए। उनके शस्त्रागार बन गए। चर्च ने गाँव-गाँव में एन.एन.सी. की इकाइयों का गठन किया। वर्ष 1980 आते-आते चर्च ने मुनादी करवा दी कि 99.9 प्रतिशत नागा ईसाई बन गए हैं और सभी नागा भारतवर्ष से अलग होना चाहते हैं। भारतवर्ष की हिंदू सरकार अपनी फौज लगाकर इन 'स्वतंत्रता सेनानी' नागाओं (चीन-प्रशिक्षित बंदूकधारी ईसाई नागा आतंकवादियों को चर्च स्वतंत्रता सेनानी कहता है) को कुचल रही है,

उनका नरसंहार कर रही है। इस प्रकार, चर्च ने पूरे भारतवर्ष में नागाओं की आतंकवादी और जंगली छवि प्रचारित कर उनके साथ महा अन्याय किया।

लेखक का कहना है कि आतंकवादी ईसाई नागाओं की संख्या पाँच प्रतिशत से ज्यादा नहीं है, किंतु इन पाँच प्रतिशत ईसाई आतंकवादी नागाओं (चीन प्रशिक्षित) ने 40 हजार नागाओं की हत्या कर दी और बंदूक दिखाकर 95 प्रतिशत भारत-भक्त नागाओं के मुँह पर ताला लगा दिया। जो नागा व्यक्ति भारतवर्ष के समर्थन में अपनी आवाज उठाता है, उसे ये आतंकवादी घर से दिन के दोपहरी में भी अपहरण कर लेते हैं और गोली मारकर जंगली हिंसक जानवरों के आगे फेंक देते हैं, जिन्हें वे जिंदा रहते समय ही नोंच-नोंचकर अपनी क्षुधाग्नि शांत करते हैं। इतने अत्याचार के बावजूद, ये ईसाई आतंकवादी 'शांतिदूत' होने की घोषणा करते हैं और चर्च उन आतंकवादियों का महिमामंडन करता है और इनको 'स्वतंत्रता सेनानी' के रूप में सम्मानित करता है।

इतना होने के बावजूद, पूरे भारतवर्ष में नागाओं की आतंकवादी, अलगाववादी और हिंदू-द्रोही छवि ही प्रचारित हुई है। लेखक का मानना है कि ऐसा होना भारत-भक्त नागाओं के प्रति घोर अन्याय है, पर इस तथ्य को साबित करना भी बड़ी टेढ़ी खीर है। इस तथ्य को स्वीकार करने और नागाओं के भारत भक्ति पर विश्वास करने के लिए कोई राजी नहीं है। इसलिए इन्होंने 'काने सुनाऊँ या आँखें दिखाऊँ' उक्ति का अनुगमन किया और एक ग्रंथ ही लिख डाला, जिसमें 62 ऐसे लोगों के भारत-भक्ति का वर्णन किया गया है, जिनकी आतंकवादियों ने हत्या कर दी अथवा हत्या का प्रयास किया। कुछ लोगों ने चर्च और चर्च सेना (NNCs - NSCNs) के उत्पातों को अंगीकार करते हुए आजीवन सेवा कार्य के माध्यम से भारत माँ की सेवा करते रहे हैं, किंतु देश उनकी इन कुर्बानियों से अनभिज्ञ है अथवा बहुत कम सही जानकारी बाहर आ पाई है। इनमें से कुछ सपूत गैर-नागा हैं।

पद्मभूषण रानी गाइदिन्ल्यू (रानी माँ) एक ऐसी नागा स्वतंत्रता सेनानी और धर्म-प्रचारक हैं, जो दस वर्ष की अवस्था से ही समाज-निर्माण के कार्य में लगी रहीं, अविवाहित रहकर हेपाउ जादोनांग की सेना में महिला बटालियन की कमान सँभाली। हेपाउ जादोनांग की फाँसी के बाद रानी गाइदिन्ल्यू ने हरक्का स्वतंत्रता सेनानियों का नेतृत्व किया और अंग्रेजों का जीना दूभर कर दिया। चर्च की मदद से ब्रिटिश सेना ने 18 फरवरी, 1932 को 'पौलुवा' नामक जेमी नागा गाँव से इस शेरनी को कैद कर लिया और कोहिमा, इंफाल, गुवाहाटी, शिलांग, आइजॉल और तूरा की जेलों में 15 वर्ष तक जेल यातना दी। एन.एन.सी. की यातना के कारण अपने हरक्का हिंदू नागाओं की रक्षा के लिए इनको आजाद भारतवर्ष में भी 1960 से 1966 (छह वर्ष) तक भूमिगत रहकर एन.एन.सी. से सशस्त्र युद्ध करना पड़ा। एन.एन.सी. के अलगाववाद और आतंकवाद के विरोध में भारत-भक्त नागाओं ने अगस्त 1957 में इसके समानांतर नागा पीपुल्स काउंसिल (NPC) का गठन किया और मोकोक्चुंग के डॉ. इंकांग्लिबा आओ इसके चेयरमैन बनाये गए। NNC के आतंकवादियों ने 25 अगस्त, 1961 को मोकोक्चुंग में गोली मारकर इनकी हत्या कर दी। मुख्यमंत्री डॉ. होकिसे सेमा ने दो हजार आतंकवादियों का आत्मसमर्पण कराया था, जिसमें कमिश्नर सुबोधचंद्र देव ने निर्णायक भूमिका अदा की। जान से मार डालने के लिए एन.एन.सी. ने 1962 में इन दोनों पर कई बार आक्रमण किए और उन पर गोलियाँ चलायी गईं, किंतु ये बच गए। मुख्यमंत्री पद्मभूषण डॉ. एस.सी. जमीर ने NNC और National Socialist Council of Nagaland (NSCN) पर शिकंजा कस दिया। इस कारण NSCN-IM प्रमुख थुइंगालेंग मुइवा ने इन पर दिल्ली सहित चार स्थानों पर जानलेवा आक्रमण किया, किंतु ये हर बार बचते गए। यह पूरी कहानी प्रेरणादायक है।

मैं चुप नहीं रहूँगी
(कहानी-संग्रह)

समीक्षक : **प्रो. नामदेव**

लेखक : **संजीव जायसवाल 'संजय'**

प्रकाशक : अद्विक पब्लिकेशन, पहाड़गंज, दिल्ली

पृष्ठ : 148

मूल्य : रु. 220/-

'मैं चुप नहीं रहूँगी' कहानी-संग्रह की कहानियाँ बदलते परिवेश और नए आधुनिक जीवन-मूल्यों की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, जिनमें अपने समय का सच और युवा-मन की सोच का मजबूती से चित्रण हुआ है। कहानीकार संजीव जायसवाल 'संजय' ने फास्ट ट्रैक की शैली अपनाते हुए बिना किसी लाग-लपेट के कहानियों को उनके चरम तक पहुँचा दिया है, जिसके कारण 'मैं चुप नहीं रहूँगी' संग्रह की कहानियाँ रोचकता, रोमांच और उत्सुकता बनाए रखने में अग्रसर दिखती हैं। कहानी-कला की दृष्टि से कहानियाँ सफल हैं। इनका कथ्य प्रेम, विद्वेष, बदला, धोखा, कश्मीर समस्या, स्त्री-चेतना, पितृसत्तात्मक सोच, समानता, नैतिक-अनैतिक इत्यादि जैसे मानवीय व्यवहारों के बीच निर्मित हुआ है, जिससे समाज, संस्कृति और मनुष्य की नई व्याख्या सामने आती है। प्रस्तुत संग्रह की कहानियों के स्त्री पात्र बहुत सशक्त और संवेदनशील हैं, जो पाठक पर प्रभाव डालते हैं। मसलन, 'सहमत' कहानी में अनामिका एक ऐसी पात्र के रूप में सामने आती है, जो एक ही मुलाकात में अनिमेष से शारीरिक संबंध बना लेती है और

भावी जीवन की संभावना भी इस रिश्ते में तलाशती है। आज की कॉरपोरेट जीवन-तीव्रता इस कहानी में दिखाई पड़ती है। विश्वविद्यालयों में शोध-पत्र और शोध-प्रबंध का चोरी होना आम हो चला है। 'सोने का पिंजरा' की दीपा भी अपने सहपाठी और प्रेमी रोहित के धोखे की शिकार है और जो उसके शोध-प्रबंध पर पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त कर लेता है। वहीं दीपा उसे अपनी कंपनी में पाँच साल के लिए गुलाम बनाकर बदला लेती है। भारतीय समाज में नोटबंदी का फैसला एक भयावह त्रासदी के रूप में सामने आया था। 'विसर्जन' कहानी में खन्ना और दीप्ति इसके प्रमाण हैं। खन्ना जैसे भ्रष्ट अफसर बेईमानी से अर्जित किये हुए करोड़ों-अरबों रुपये को यमुना नदी में फेंकते हुए खुद भी नदी में समा जाते हैं। 'मैं चुप नहीं रहूँगी' की मोनिका का मंत्री के बेटे द्वारा बलात्कार किया जाता है। मंत्री के खौफ से त्रस्त मीडिया, पुलिस, प्रशासन के बीच वह सोशल मीडिया पर बलात्कार का वीडियो क्लिपिंग अपलोड करके और व्हाट्सअप ग्रुपों पर फॉरवर्ड करके मंत्री और उसके बलात्कारी बेटे को बेनकाब कर देती है। कई बार जब सच्चा प्यार नहीं मिलता है, तो व्यक्ति अपराधी बन जाता है। 'काश, तुम न मिले होते' का जावेद एक ऐसा ही व्यक्ति है, जो नेहा से प्यार करता था, लेकिन नेहा के माँ-पिता की मनाही के बाद दोनों जुदा हो जाते हैं। नेहा पढ़-लिखकर सेना में डॉक्टर बन जाती है और जावेद जिहादी। कश्मीर की सेना परिसर में वह आक्रमण करता है और वहीं नेहा के चिकित्सीय सान्निध्य में मर जाता है। आजकल युवाओं में लिव-इन-रिलेशनशिप को लेकर एक उत्साह रहता है, जो आए-दिन बदलते रहते हैं। 'रियल रिलेशनशिप' में रागिनी लिव-इन-रिलेशन में रहना चाहती है तो उसका प्रेमी नितिन उससे विवाह करना चाहता है। अकसर कहा जाता है कि पति-पत्नी का संबंध जन्मों-जन्मों का होता है, जो अब आधुनिक शिक्षित समाज में बेअसर हो चला है। अब स्त्री पति के साथ समानता चाहती है, सम्मान चाहती है। कहानी 'असंतुलित रथ का हमसफर' की दामिनी एक ऐसी स्त्री है, जो कॉलेज में प्रोफेसर है, लेकिन उसका अधिकारी पति गीतेश श्रेष्ठता बोध के नशे में चूर होकर उसे थप्पड़ मार देता है। उसके इस तेवर से आहत होकर दामिनी तलाक ले लेती है। इसी तरह, दीपा भी रवीश के वहशीपन और शंकालु स्वभाव से दुखी होकर उससे अलग हो जाती है। भावना, नीलिमा, दीपिका, कविता, नगमा, सावित्री जैसी स्त्री पात्र भी अपने संघर्ष, चेतना, समर्पण और बोल्डनेस के कारण बहुत प्रभावित करती हैं और जिनके कारण ये कहानियाँ रचनात्मक ऊँचाई को प्राप्त करती हैं।

वस्तुतः, इस तरह की प्रभावशाली कहानियाँ 'मैं चुप नहीं रहूँगी' शीर्षक पुस्तक को पठनीय और विचारणीय बनाती हैं, जो सिर्फ अपने समय के सच को बयान करती हैं और कहानी विधा की भारी-भरकम बुनावट के सिद्धांतों को दरकिनार करके सहज और तीव्रता से कहानी की मूल कथा को कह डालती हैं।

इन कहानियों में मौजूद यही रवानगी और खूबसूरती इनको और आकर्षक बनाती है।

समीक्षक : **दीनदयाल शर्मा**

लेखक : **चक्रधर शुक्ल**

प्रकाशक : बालसाहित्य संवर्धन संस्थान, कानपुर, उत्तर प्रदेश

पृष्ठ : 32

मूल्य : रु. 20/-

दादी की प्यारी गौरैया

बाल कहानी हो या बाल कविताएँ अथवा बाल साहित्य की कोई भी विधा, बच्चों के लिए बालमन के अनुरूप सृजन करना बहुत ही दुरूह कार्य है। ऐसे में सरस, सरल, सहज और बालमन के अनुरूप कोई पुस्तक मिल जाए तो मन को बड़ा सुकून मिलता है। बालमन को आनंदित करने वाली इस बाल पुस्तक का नाम है, 'दादी की प्यारी गौरैया' और इसके रचनाकार हैं चक्रधर शुक्ल।

कुल 32 पृष्ठों की इस बालकृति में कुल 26 बाल कविताएँ हैं, जिनके विषय भी बालमन के अनुसार ही है, यथा— गौरैया, बादल, आँधी, जाड़ा, आम, गुब्बारा आदि। पुस्तक की लगभग सभी कविताएँ बहुत ही मजेदार बन पड़ी हैं।

शीर्षक कविता 'दादी की प्यारी गौरैया' बहुत ही सरल और सहज होने के साथ-साथ लयबद्ध रूप में प्रस्तुत की गई है कि मन बार-बार गाने लगता है। कविता द्रष्टव्य है—

दादी की प्यारी गौरैया,
खाना खाने आती।
बड़े चाव से दादी उसको,
चावल-दाल खिलाती।
उसके लिए एक प्याले में,
पानी रखा हुआ है।
छुट्टी वाले दिन गौरैया,
खाती मालपुआ है।

बाल काव्यकृति की एक खास विशेषता यह भी है कि इसमें प्रत्येक कविता सुंदर चित्रांकन के साथ एक-एक पृष्ठ पर प्रस्तुत की गई है। चित्रकार सृष्टि पांडेय द्वारा बनाया गया पुस्तक का आवरण शीर्षकानुकूल और मनमोहक है।

पुस्तकें मिलीं

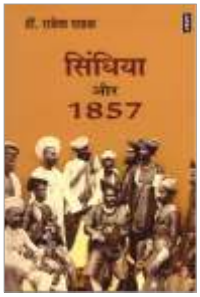

सिंधिया और 1857

डॉ. राकेश पाठक

प्रस्तुत पुस्तक 1857 की क्रांति पर ऐतिहासिक जानकारियाँ देती है। लेखक ने अपनी बात में लिखा है कि 'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का विद्रोह मई 1857 में मेरठ से शुरू हुआ। दिल्ली, आगरा और ग्वालियर होते हुए जून में ग्वालियर छावनी में विद्रोह का बिगुल बज उठा।' भूमिका इतिहासविद् अशोक कुमार पांडेय ने लिखी है। वे सिंधिया परिवार, नेवालकर वंश, रानी लक्ष्मीबाई समेत बुंदेलखंड एवं विद्रोही राजाओं के संबंध की राय बताते हैं। पुस्तक में कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य भी उजागर किये गए हैं।

सेतु प्रकाशन, नोएडा

पृ. 264; रु. 300.00

पांडेय जी के किस्से

लालित्य ललित

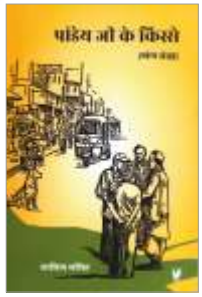

प्रस्तुत पुस्तक में 22 व्यंग्य संकलित हैं। इसकी भूमिका फारुख आफरीदी ने लिखी है। वे कहते हैं कि लालित्य ललित ने समर्पित होकर व्यंग्य को साधने का प्रयास किया है। पुस्तक में पांडेय जी से संबंधित अनेक वाकये हैं, जो हास्य के माध्यम से व्यंग्यों में उकेरे गए हैं। 'पांडेय जी बने प्रकाशक', 'पांडेय जी और रामप्यारी का झगड़ा', 'पांडेय जी और धनतेरस का लोचा' आदि प्रमुख व्यंग्य हैं।

ग्लोरिओसा सुपर्बा, नई दिल्ली

पृ. 162; रु. 299.00

चंदा मामा कब आओगे

कैलाश बाजपेयी

प्रस्तुत बाल कविता संग्रह में 34 कविताएँ संकलित हैं। कवि इन मनोरंजक कविताओं के माध्यम से शैक्षिक अवधारणा 'खेल-खेल में पढ़ाई' को पल्लवित कर रहा है। इस संग्रह की कविताओं के विषय हमारे आसपास के सामाजिक, पारिवारिक परिवेश को प्रतिबिंबित करने में समर्थ हैं। इसमें परिवार का महत्व, पर्यावरण संरक्षण का संदेश, देशभक्ति की भावना एवं बाल मनोरंजन आधारित विषय हैं। इस संग्रह की विशेषता यह है कि इसमें संकलित कविताओं की सरल-सहज भाषा बच्चों के साथ-साथ सामान्य पाठकों को भी गुनगुनाने के लिए आकर्षित करती है।

श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली

पृ. 44; रु. 99.00

विलियम रामायण ले गया

सीतेश आलोक

प्रस्तुत पुस्तक किशोरोपयोगी उपन्यास है, जिसमें लंदन से अपने भारतीय मित्रों के साथ भारत देखने आए 14 वर्षीय अंग्रेज बालक के अनुभव की कहानी है। वह एक भारतीय परिवार में ठहरता है और वहाँ टीवी पर रामायण सीरियल देखकर कई प्रश्न करता है, जिसका सविस्तार उत्तर दादी जी देती हैं। वह भारतीय पर्यटन स्थलों का भ्रमण करके लंदन लौटते समय रामायण की सीडी भी ले जाता है। इस उपन्यास की कहानी इसी संदर्भ पर केंद्रित है।

अमरसत्य प्रकाशन, दिल्ली

पृ. 160; रु. 300.00

कल जब मैं नहीं रहूँगा

सुरेश ऋतुपर्ण

प्रस्तुत कविता संग्रह में 52 कविताएँ संकलित हैं। कवि और छायाकार सुरेश ऋतुपर्ण के इस संग्रह में उनकी कविताओं और तसवीरों का एक ऐसा अद्भुत संयोजन है, जिसमें उनकी पिछले पचास वर्ष की कविता और तसवीरों को एक सूत्र में पिरोया गया है। तसवीरों में चित्रित दृश्य और रंग उनकी कविताओं को एक जीवंत अनुभव में बदल देते हैं।

गौरव प्रकाशन, दिल्ली

पृ. 112; रु. 950.00

मुँह नोंचवा

डॉ. अजीत सिंह राठौर 'लुल्ल कानपुरी'

प्रस्तुत पुस्तक बाल कविता संग्रह है, जिसमें 15 कविताएँ संकलित हैं। इस संग्रह में बाल मनोवृत्ति के अनुरूप कौतूहलवर्धक विषयों पर आधारित कविताएँ संकलित हैं, जैसे—'चीं चीं चिड़िया', 'लल्ली-लल्ला', 'कटहल की बतिया', 'मुँह नोंचवा', 'ले लो पुदीना', 'नेता चूहे राजा', 'हाथ की सफाई' और 'मुंगेरी सामान' आदि। भाषा की दृष्टि से ये कविताएँ सहज, सरल और सुगम्य हैं। इन कविताओं में गेयता है, लयात्मकता है, जो पाठकों को गुनगुनाने के लिए आकृष्ट करती है।

बाल साहित्य संवर्धन संस्थान, कानपुर, उत्तर प्रदेश

पृ. 32; रु. 60.00

पहरुआ जन

मिथिलेश्वर

यह उपन्यास एक समर्पित समाजसेवक के जीवन-संघर्ष की जीवंत कथा व्यक्त करते हुए सामाजिक विसंगतियों के खिलाफ उनके सक्षम प्रतिकार को न सिर्फ उजागर करता है, बल्कि समाज-सेवा और राजनीति के अंतर्संबंधों को उद्घाटित करते हुए समाज-सेवा के नए मूल्य स्थापित करता है। इस रूप में सर्वथा नए विषय पर नूतन मूल्यों की स्थापना का यह उपन्यास भारतीय लोकतंत्र की बेहतरी के लिए उत्कृष्ट मार्ग प्रशस्त करता है।

सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

पृ. 200; रु. 500.00

अमिरती

काव्य संग्रह

अकबर सिंह यादव 'अकेला'

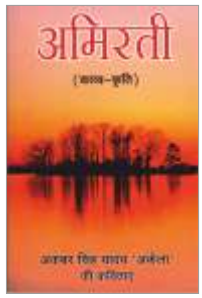

इस संग्रह की कविताएँ जीवन को सार्थक बनाने वाली हैं। इन सभी कविताओं में कवि का चिंतन सामाजिक संचेतनाओं के रूप में परिलक्षित होता है। कवि-मन कभी खुशियों के क्षणों में डूबता-उतराता है तो कभी पीड़ा के निहितार्थ कोई समाधान खोजता है। इसके अतिरिक्त, कवि ने अपनी कविताओं में जीवन के कुछ अनछुए पहलुओं पर भी प्रकाश डाला है, जिन्हें पढ़कर मन को सुकून-सा मिलता है।

प्राची डिजिटल पब्लिकेशन, नैनीताल

पृ. 114; रु. 186.00

सबकी धरती सबका देश

गोविंद शर्मा

यह पुस्तक 11 बाल कहानियों का संग्रह है। इसकी भूमिका लिखते हुए दिविक रमेश ने कहा है कि गोविंद शर्मा जी का मूल दखल बाल-कथा लेखन में ही है। 2019 में उन्हें बाल-कथा संग्रह के रूप में 'काचू की टोपी' पर साहित्य अकादेमी का पुरस्कार भी मिल चुका है। संग्रह की कहानी 'बातवीर की दोस्ती' का जिक्र करते हुए कहा है कि दादा जी और बातवीर की बातें होती हैं तो इसमें मसखरापन, मजा भी है। मनोरंजन और गुदगुदी भी है।

साहित्यागार, जयपुर, राजस्थान

पृ. 56; रु. 200.00

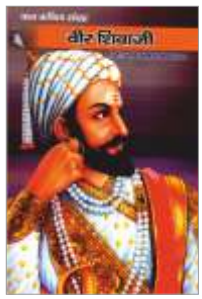

वीर शिवाजी

बाल कविताएँ

डॉ. ऋषि मोहन श्रीवास्तव

इस संग्रह में कुल 13 बाल कविताएँ हैं। ये सभी कविताएँ बच्चों का मनोरंजन करने के साथ ही आसपास के अनेक विषयों की जानकारी देती हैं। इन कविताओं की पंक्तियों में लय तो है ही, इन्हें सार्थक शब्दों के प्रयोग के साथ ही बड़े भावपूर्ण रूप में प्रस्तुत किया गया है। कविताओं के शीर्षक बच्चों को लुभाने वाले हैं, जैसे कि 'कड़वा करेला', 'हम कितने खुशकिस्मत', 'पुस्तकें', 'झूठ कभी न बोलो', 'सत्यनिष्ठा', 'वीर शिवाजी' आदि।

राज पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

पृ. 20; रु. 100.00

हम धरती के फूल

बालगीत संग्रह

पुरुषोत्तम तिवारी 'साहित्यार्थी'

इस संग्रह में विभिन्न विषयों पर कुल 63 बालगीत हैं। सभी गीत बच्चों को विभिन्न विषयों की जानकारी व संदेश देते हैं। इन गीतों की पंक्तियों में बाल मनोभावों का सुंदर समावेश किया गया है। एक बालक अपने विकास के प्रारंभिक चरण में सभी बातों को गहराई से समझना चाहता है। वह कौतूहल से आकाश, तारे, सूरज, चंद्रमा, नदी, पहाड़, वन, वनस्पति आदि के बारे में समग्रता में जानना चाहता है।

आईसेक्ट पब्लिकेशन, भोपाल

पृ. 124; रु. 200.00

बंदर ने जब खाई मिठाई

बाल कविता-संग्रह

डॉ. मेजर शक्तिराज

इस कविता संग्रह में बच्चों को रुचिकर लगने वाली कुल 36 बाल कविताएँ हैं। सभी कविताओं के विषय अत्यंत रोचक, शिक्षाप्रद एवं ज्ञानवर्धक हैं, जो बच्चों को हँसाएँगे, गुदगुदाएँगे। बच्चों को पशु-पक्षियों और जानवरों से अधिक लगाव रहता है, तभी तो इस संग्रह में इन्हीं विषयों पर कविताएँ हैं। इनके अलावा, फल एव सब्जियों से संबंधित कविताएँ भी हैं। बाल मनोविज्ञान की चाशनी में लिपटी ये सभी कविताएँ मनोरंजन के अतिरिक्त कोई-न-कोई संदेश अवश्य देती हैं।

जी.एस. पब्लिशर डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली

पृ. 52; रु. 150.00

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले ने भाषायी विविधता को एकता के सूत्र में पिरोया

(10 से 18 फरवरी, 2024)

–पुस्तक संस्कृति डेस्क

"पुस्तक मेला भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत और साहित्य का उत्सव है। भारत के भोजपत्र से लेकर चीन के पेपर तक छपी पुस्तकें अक्षुण्ण हैं। भारत में नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय और पुस्तकालय प्राचीन और वर्तमान समय, दोनों में उपस्थित थे। ब्रिटिश काल से आज तक पुस्तकों ने अपना आकर्षण नहीं खोया। पुस्तकें हमें ज्ञान, मनोरंजन और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती हैं।" उक्त संबोधन माननीय शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम् में 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2024' के उद्घाटन सत्र के दौरान व्यक्त किए। उन्होंने आगे कहा कि वेद, पुराण, खगोल, आयुर्वेद, गणित, औषधि सभी पुस्तकों का ही भाग हैं। हमें अपने लेखकों और पाठकों पर गर्व है। भारत दुनिया में एकमात्र ऐसा देश है, जो 22 भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करता है। इसके अलावा, अन्य भाषाओं में भी यहाँ पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। बहुभाषा भारत की विविधता को दर्शाता है।

उन्होंने 2047 तक विकसित भारत के विजन पर कहा कि भारत ने सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक रूप से अभूतपूर्व प्रगति की है। भाषा और पुस्तक हमारी विरासत हैं। कोई भी भाषा उच्च या निम्न नहीं है। हर भाषा का अपना महत्व है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का कहना है कि सभी भाषाएँ, राष्ट्रीय भाषाएँ हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मातृभाषा पर जोर दिया गया है।

ध्यातव्य है कि यह पुस्तक मेले का 31वाँ संस्करण था। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के तौर पर माननीय केंद्रीय शिक्षा मंत्री के अलावा विश्व पुस्तक मेला में अतिथि देश सऊदी अरब के भारत में राजदूत श्री सालेह ईद अल हुसैनी; माननीय शिक्षा राज्यमंत्री, श्रीमती अन्नपूर्णा देवी; उच्चतर शिक्षा विभाग के सचिव श्री संजय के. मूर्ति; स्कूली शिक्षा सचिव श्री संजय कुमार, आई.टी.पी.ओ. के कार्यकारी निदेशक श्री रजत अग्रवाल; राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अध्यक्ष प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे एवं न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक ने दीप प्रज्वलन कर सत्र का शुभारंभ किया।

अपने स्वागत संबोधन में न्यास-अध्यक्ष प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे ने कहा कि एकात्मकता ही भारत के मूल में है, जो भारत की विविधता में परिलक्षित होती है। विविधता में एकता ही भारत की विशेषता है। अतिथि देश सऊदी अरब के भारत में राजदूत श्री सालेह ईद अल हुसैनी ने कहा कि भारत और सऊदी अरब के ऐतिहासिक संबंध रहे हैं। पुस्तक उत्सव में हमें एक-दूसरे को जानने का और अधिक अवसर मिलेगा। हमें रणनीतिक साझेदारी बनानी है। रणनीतिक सिद्धांतों पर उन्होंने कहा कि हमें भविष्य में सशक्त कदम उठाने होंगे। हमें शिक्षा, महिला सशक्तीकरण, स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इससे हमारा आने वाला समय अधिक उत्पादक बनेगा। इस तरह से हम युवा पीढ़ी को सऊदी अरब और भारत के संबंध को समझा पाएँगे। धन्यवाद-ज्ञापन के दौरान न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक ने कहा

कि यह पुस्तकों का महाकुंभ है। भाषाओं के बारे में उन्होंने कहा कि इनमें विविधता जरूर है और यही देश की खूबसूरती है।

इस अवसर पर राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय, ई-जादुई पिटारा, एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित तीन मॉड्यूल—जी20, विकसित भारत और नारी शक्ति वंदन; माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा लिखित 'एक्जाम वारियर्स' का ब्रेल संस्करण; 'इग्नाइटिंग कलेक्टिव

गुडनेस : मन की बात@100' (13 भाषाओं में) और 'क्रिएटिंग इंटेलेक्चुअल हेरीटेज' प्रोजेक्ट के तहत प्रकाशित पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। इस प्रोजेक्ट के तहत बौद्धिक विरासत को पृष्ठों पर सहेजती पुस्तकें—'फाइनेंशियल इन्क्लूजन : अ स्टडी बाई डेल्ही स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय'; 'होलिस्टिक हेल्थकेयर : अ न्यू इंडिया, अ स्टडी बाई यूनिवर्सिटी ऑफ हैदराबाद' तथा 'टुवार्ड्स नया भारत : अ स्टडी बाई आईआईएम, मुंबई' आदि थीं। वीडियो क्लिप के माध्यम से इन पुस्तकों के बारे में जानकारियाँ भी दी गईं। इस अवसर पर पुणे से आए निकिता मोघे के पायलवृंदा ग्रुप द्वारा शानदार प्रस्तुति दी गई।

इंटरनेशनल पवेलियन

हॉल संख्या 4 में स्थापित इंटरनेशनल पवेलियन दुनिया के तमाम देशों को सांस्कृतिक-साहित्यिक विरासत को एक-दूसरे से साझा करने का अवसर प्रदान कर रहा था। यहाँ विभिन्न देशों के प्रतिनिधिमंडल ने कई कार्यक्रम आयोजित किए। इनमें से **इंस्टीट्यूटो सर्वेन्तेज, नई दिल्ली** द्वारा 'कोमो से डाइस' कार्यशाला; **ऑस्ट्रियाई दूतावास** द्वारा 'द रिवेटर', जिसमें भारत और ऑस्ट्रिया के 75 वर्षों के इतिहास पर चर्चा की गई। **ऑस्ट्रियन एंबेसी और रत्नव फाउंडेशन** के संयुक्त तत्वावधान में 'कॉमिक किताबें और कार्टून : बुनियादी शिक्षा और विदेशी भाषा एवं संस्कृति को बढ़ावा देने का सबसे बड़ा स्रोत' पर चर्चा हुई। **'प्रतीक'** के ऑस्ट्रेलियन संस्करण और 'तुंगना' पुस्तक का लोकार्पण कार्यक्रम हुआ। **भारत एक्सप्रेस न्यूज** के मुख्य संपादक श्री उपेंद्र राय ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के 'पीएम युवा' योजना के लेखकों के मार्गदर्शन हेतु संबोधित किया।

बोलोना प्रतिनिधिमंडल द्वारा 'बोलोना बुक प्लस और बोलोना चिल्ड्रंस बुक फेयर' पर एक प्रस्तुति और चर्चा आयोजित की गई। पैनलिस्ट में इलेना पॉलिसी और जैक थॉमस शामिल थे। **इटालियन एंबेसी कल्चर सेंटर** द्वारा ग्युशेप तुची के जीवनचरित पर प्रस्तुति का आयोजन किया गया। **ईरान बुक एंड लिटरेचर हाउस** के तत्वावधान में 'ईरान के प्रकाशन परिदृश्य और तेहरान अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले के परिचय' पर आयोजित चर्चा में अली रामेजानी और हुसैन बेहरामी उपस्थित थे। **ऑस्ट्रिया एंबेसी और रतनाव फाउंडेशन** के सहयोग से ऑस्ट्रिया के साहित्य पर भारतीय लेखकों के साथ परिचर्चा का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

सऊदी अरब द्वारा आयोजित 'द आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड व्हाट इज इन विजुअल आर्ट्स : द अरेबिक कैलिग्राफी ऐज ऐन एग्जांपल' कार्यक्रम में सिराज अल्फाक और सलमान अलसामा उपस्थित थे। **स्पेन के प्रतिनिधिमंडल** द्वारा आयोजित स्पैनिश भाषा के शिक्षकों और छात्रों के साथ एक आदान-प्रदान 'एंगेजिंग

एस्पेनियाल' में एस्थर फ्रेंच और एंटोनियो मारिया एविला उपस्थित थे। **ऑस्ट्रियन एंबैसी** ने ऑस्ट्रियाई साहित्य अनुवाद, रूपांतरण पर एक प्रस्तुति दी। **ईरान बुक एंड लिटरेचर हाउस** ने 'ईरान और भारत में फ़ारसी कविता की समानताएँ' विषय पर वार्ता में भारतीय तथा ईरानी इतिहास, संस्कृति और साहित्य पर चर्चा हुई।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 'सऊदी अरब पर भारतीय सिनेमा के प्रभाव' पर चर्चा आयोजित हुई। न्यास द्वारा आयोजित

अन्य नेटफ्लिक्स एनिमेटेड शो 'जिंगल किड्स' पर चर्चा हुई। **व्हाइट लोटस बुक शॉप नेपाल** द्वारा युयुत्सु शर्मा की 'प्रतीक पत्रिका' और पंकज बिष्ट के द्वारा 'स्केंट ऑफ रेन : रिमेंबरिंग जयंता महापात्रा' का लोकार्पण किया गया। **इग्नू** की ओर से 'कॉन्सेप्चुअल फाउंडेशन ऑफ जेंडर' पुस्तक का लोकार्पण किया गया।

थीम मंडप

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने विषय आधारित थीम मंडप में कई कार्यक्रम आयोजित किए, जिसका विवरण इस प्रकार है—'भाषाएँ अनेक, भाव एक' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में श्री चमू कृष्ण शास्त्री, प्रो. चंद्रशेखरन, अग्नि रॉय आदि उपस्थित थे। 'भाषा के रूप में कला-शैली : वक्तृता और मौन की गतिशीलता' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में उज्ज्वल नागर, डिजाइनर जोनक दास और

ओड़िसी नर्तकी और लेखिका जया मेहता उपस्थित रहे। तकनीकी नवाचार से संबंधित चर्चा में भारत सरकार की तकनीकी से संबंधित पहल 'भाषिणी' के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अमिताभ नाग और आईआईटी दिल्ली के प्रो. अर्जुन उपस्थित रहे। 'रियल टाइम अनुवाद' कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जॉय सेबेस्टियन रहे। श्री प्रणब मुखर्जी की बेटी सुश्री शर्मिष्ठा मुखर्जी ने अपनी पुस्तक 'प्रणब माई फादर : ए डॉटर रिमेंबर्स' पर चर्चा की। 'भारत की बहुभाषी जीवंत परंपरा से जुड़ाव : अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य' पर चर्चा आयोजित हुई। स्वामी विवेकानंद के जीवन और उनके विचारों पर आधारित अंशुल चतुर्वेदी की हैंडबुक 'द विवेकानंद : हैंडबुक फॉर एवरीडे लिविंग' के बारे में चर्चा हुई। 'शहरों की संस्कृति और शहरी क्षेत्रों की बहुभाषी संस्कृति' पर चर्चा हुई। राष्ट्रीय लोकाचार में सहयोगी भाषाओं पर चर्चा आयोजित हुई। अशोक दिलवाली की किताब 'ऑल अबाउट ट्रैवल फोटोग्राफी' का लोकार्पण किया गया, जिसमें न्यास-अध्यक्ष प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा आयोजित 'बहुभाषी भारत : एक जीवंत परंपरा : असम, ओडिशा और पश्चिम बंगाल से अभिव्यक्ति' पर चर्चा हुई। डॉ. रचना गुप्ता की पुस्तक 'शिमला' का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे, न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक, लेखिका रचना गुप्ता, दैनिक जागरण समूह के डिजिटल संपादक श्री कमलेश रघुवंशी व वरिष्ठ पत्रकार श्री राहुल देव मौजूद थे। 'सूर्योदय' पुस्तक का लोकार्पण आईटीपीओ के अध्यक्ष, श्री प्रदीप सिंह खरोला (आईएएस) ने किया। 'उर्दू की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा' पर चर्चा आयोजित हुई, जिसमें प्रसिद्ध शिक्षाविद् प्रो. ख्वाजा मो. इकरामुद्दीन ने उर्दू को गंगा-जमुना तहजीब का पोषक बताया। 'समकालीन भारत में संस्कृत' पर चर्चा का आयोजन किया गया। 'वी. शांताराम' और 'मानसून' पुस्तकों का लोकार्पण किया गया, जिसमें न्यास-अध्यक्ष प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे उपस्थित रहे। 'गुजरात : भाषाओ अने बोलियो' पर चर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें न्यास-अध्यक्ष प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे, विष्णु पंड्या, वकुल टेलर, नितिन आचार्य और हितेश जी मौजूद थे। न्यास-अध्यक्ष प्रो. मराठे ने कहा कि भाषा हर कोस पर बदलती है और कार्यक्रम का उद्देश्य ही बहुभाषी भारत पर चर्चा है। 'जीवन, जिज्ञासा और शास्त्र' पुस्तक का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि चंद्रप्रकाश द्विवेदी ('चाणक्य' के रूप में प्रसिद्ध), पुस्तक के लेखक डॉ. एस.सी. मिश्रा, न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक और न्यास में हिंदी संपादक श्री दीपक गुप्ता उपस्थित थे। 'द आइडिया ऑफ क्रिएटिंग इंटेलेक्चुअल हरिटेज' पर चर्चा आयोजित हुई। इस अवसर पर प्रो. बद्री नारायण, एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अर्चना सिंह, डॉ. पामी दुआ और न्यूज नाइन में उप प्रबंध संपादक कार्तिकेय शर्मा उपस्थित रहे।

भारत लिटरेचर फेस्टिवल द्वारा 'अनलीशिंग पोटेंशियल : द पॉवर ऑफ एटीट्यूड एंड मेंटल वेलनेस' पर चर्चा आयोजित की गई। **भारत साहित्य महोत्सव** द्वारा आयोजित 'अदालत की कहानी रजत शर्मा की जुबानी' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। **भारत साहित्य उत्सव** द्वारा 'अनसुनी कहानियों का किस्सागोई' कार्यक्रम आयोजित किया गया। **ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया** द्वारा आयोजित पुस्तक 'बहुभाषी भारतीय संस्कृति' के लोकार्पण कार्यक्रम में संगठन से जुड़े लेखकों की दस पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। **ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया** द्वारा 'बहुभाषी कवि सम्मेलन' आयोजित किया गया। **भारत लिटरेचर फेस्टिवल** द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'सांस्कृतिक पुनर्जागरण' के मुख्य अथितिगण मशहूर इतिहासकार डॉ. मीनाक्षी जैन और लेखक संदीप बालाकृष्णा रहे। **सोल्ह वेलनेस** के तत्वावधान में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जीवन पर आयोजित कार्यक्रम में इग्नू के प्रो. कपिल कुमार, पूर्व रॉ अधिकारी कर्नल आर.एस.एन. सिंह उपस्थित थे।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मशहूर लेखक और अनुवादक रूमी मलिक की पुस्तक 'लीला' पर प्रो. के. अनिल कुमार, रूमी मलिक, डॉ. बच्चन कुमार ने चर्चा की।

राष्ट्रीय उर्दू विकास परिषद ने 'भारत के बहुभाषी परिदृश्य में उर्दू की संस्कृति के प्रतिबिंब' पर चर्चा का आयोजन किया। **मंजुल पब्लिशिंग हाउस** द्वारा माउंट एवरेस्ट फतह करने वाली मेघा परमार की पुस्तक 'द एवरेस्ट गर्ल' का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर न्यास-अध्यक्ष प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे उपस्थित रहे। **द ग्रेट इंडियन बुक टूर** द्वारा 'पोएट्री थ्रू द लेंस ऑफ इंडिया' पर आयोजित चर्चा हुई। **भारत लिटरेचर फेस्टिवल** द्वारा आयोजित भारतीय विदेश सेवा में पूर्व राजनयिक अजय बिसारिया ने भारत-पाकिस्तान संबंधों में कूटनीति पर चर्चा की। पुस्तक मेला के अंतिम दिन थीम मंडप पर आयोजित एक कार्यक्रम में पूर्व शिक्षा मंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक की अन्य प्रकाशनों से प्रकाशित कुछ पुस्तकों के साथ, न्यास से मूल हिंदी में प्रकाशित 'हिमालय में विवेकानंद' के ओड़िया, पंजाबी तथा तमिल अनुवाद का भी लोकार्पण किया गया।

बाल मंडप

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के तत्वावधान में कहानीकार मंडल द्वारा 'जहाँ कहानियाँ जीवंत हो उठती हैं' आयोजित किया गया। इसके अलावा, 'गणित का जादूगर—वैदिक गणित के साथ मनोरंजन', 'कहानीकार का स्वर्ग : जहाँ शब्द चमत्कार करते हैं' विषय पर एक किस्सागोई सत्र का आयोजन किया गया। **कैलिग्राफी फाउंडेशन, नई दिल्ली** द्वारा 'परंपरा का प्रभाव : हस्तलिपि के माध्यम से भारतीय लिपियों का सम्मान' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। **वंडररूम बाल पुस्तकालय** द्वारा आयोजित 'लेखक और कथाकार बच्चे' कार्यक्रम में बच्चों की कहानियों के लिए समर्पित एक विशेष सत्र आयोजित किया गया। **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत** द्वारा आयोजित 'वंस अपॉन अ टाइम : कहानी सत्र' में प्रसिद्ध बाल साहित्य लेखिका और पूर्व आईएएस अधिकारी श्रीमती अनीता भटनागर जैन ने बच्चों को अपनी किताबों से कई कहानियाँ सुनाईं। **एकलव्य फाउंडेशन टीम** ने 'समंदर और तारों की छाँव' एनिमेटेड बोर्ड बुक का लोकार्पण किया। **क्यूमैथ** द्वारा 'नंबर निंजा : मास्टरिंग मैथ विद फन' का सफल आयोजन किया गया। **मुस्कान (पोगो)** द्वारा 'लिटिल सिंघम : थैंक यू लेटर्स टू अवर हीरोज इन यूनिफॉर्म' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। **बचपन सोसायटी फॉर चिल्ड्रेन'स लिटरेचर एंड कल्चर** द्वारा 'कॉकटेल फ्यूजन : अ मल्टीलिंगुअल स्टोरीटेलिंग एडवेंचर' विषय पर आयोजन किया गया। **एनलिट किड्स केटी ग्लोबल** की ओर से 'कथाशतकम ग्लोबल स्टोरीटेलर कलेक्टिव कार्यक्रम' के तहत बहुभाषी भारत को सेलिब्रेट करने के उद्देश्य से एक स्टोरीटेलिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। **इटालियन एम्बेसी कल्चरल सेंटर** ने बच्चों के लिए एक ओरिगामी कार्यशाला में इटालियन एम्बेसी कल्चरल सेंटर के निदेशक श्री आंद्रिया अनस्ताजियो, इरिसॉल्यूट फ्लावर टीम, आर्टिस्ट श्रीमती सोफिया बेनिनी और कम्युनिकेशन मैनेजर श्री गुरदीप सिंह मौजूद थे। '**अमर उजाला**' द्वारा 'युवा संपादक कार्यशाला' का तीसरा सत्र आयोजित किया गया। **एक कोशिश स्पेशल स्कूल** तथा **उन्नाव सिंह मेमोरियल एजुकेशनल सोसाइटी** के संयुक्त तत्वावधान में 'डांस एंड मूवमेंट थेरेपी फॉर स्पेशल चिल्ड्रन' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। **तख्ते राइटर एंड पब्लिशर्स** द्वारा 'स्याही और कल्पना—लेखक बनना सीखना' नामक कार्यशाला आयोजित की गई। **पोगो कार्टून** के प्रसिद्ध लेखक और एनिमेटर रजनीकांत शुक्ला द्वारा 'छोटा भीम स्क्वाड : स्टोरी राइटिंग एंड ड्राइंग क्लब' कार्यक्रम आयोजित किया गया। **हाउ टू मेक कॉमिक बुक्स एकेडमिक्स** नामक कार्यशाला में शिक्षकों को कॉमिक बुक्स बनाने की बारीकियों से परिचित कराया गया।

सीएसआईआर-निस्पर द्वारा 'साइंस कम्यूनिकेशन विद साइंटिस्ट एंड कार्टून कॉम्पिटिशन' का आयोजन किया गया। **जागो टीन्स एनजीओ** द्वारा एक पपेट शो आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य बच्चों को कठपुतली के माध्यम से आसान कहानियों द्वारा

इंटरनेट व साइबर सिक्योरिटी के संबंध में जागरूक करना था। **डिस्कवरी किड्स** द्वारा आयोजित 'कल की कल्पना' विषय पर कला प्रतियोगिता आयोजित की गई, जो 'संयुक्त राष्ट्र के 17 सतत लक्ष्य' पर केंद्रित था।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा आयोजित 'साहित्यिक सितारों-लेखकों से एक मुलाकात' में बाल साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्तकर्ता सूर्यनाथ सिंह और मधु पंत जैसे जाने-माने कवि और लेखकों ने सहभागिता की। **एनसीसीएल, रा.पु. न्यास** द्वारा 'अनफोल्डेड टेल्स' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। **एकलव्य फाउंडेशन** द्वारा 'डिजाइन डायलॉग : ब्रिजिंग आर्ट एंड पब्लिशिंग' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत** और **एनसीसीएल** की ओर से आयोजित 'नन्हे लेखक बड़ी आवाज' कार्यक्रम में बाल लेखकों ने हिस्सा लिया। **एनसीसीएल** की ओर से आयोजित 'ग्रीन गार्जियन' के अंतर्गत एनिमल प्लैनेट के संरक्षण अभियान के लिए कार्ड बनाने की कार्यशाला आयोजित की गई। **साहित्य अकादेमी** द्वारा 'बाल साहिती' का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्राप्तकर्ता दृष्टिबाधित बालिका गरिमा और उसके माता-पिता से संवादात्मक सत्र का आयोजन किया गया। **एनसीसीएल** द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बच्चों को परियों की कहानियाँ सुनायी गईं। **माउंट आबू पब्लिक स्कूल** द्वारा 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' पुस्तक का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक, न्यास की संपादक श्रीमती कंचन वांचू शर्मा, माउंट आबू पब्लिक स्कूल से श्रीमती रानू पाठक, श्रीमती ऋतु भारद्वाज, नेत्रा बिष्ट और राशि बथनी उपस्थित रहे। **एनसीसीएल और कार्टून नेटवर्क** के संयुक्त तत्वावधान में 'कार्टून केपर्स : लेट्स ड्रॉ अ सुपरहीरो' कार्यक्रम में बच्चों ने अपने मनपसंद कार्टून सुपरहीरो को उत्साहित होकर चित्रित किया। **पराग इनीशिएटिव ऑफ टाटा ट्रस्ट्स** द्वारा 'मेलोडी ऑफ द माइंड : अ पोएट्री सेशन' का आयोजन किया गया। **रिनोवा इंटरनेशनल** की ओर से दिव्यांग बच्चों के लिए 'आर्टफुल एबिलिटीज' कार्यक्रम आयोजित किया गया। **एनसीसीएल** द्वारा 'इंक एंड एलिगेंस : वर्कशॉप ऑन कैलिग्राफी' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यशाला में कैलिग्राफी कलाकार इंकू कुमार ने बच्चों को कैलिग्राफी की तकनीक और बारीकियाँ सिखाईं। **एनसीसीएल** द्वारा आयोजित 'स्टोरी सैंक्टम : अ स्टोरीटेलिंग सैंक्चुअरी' कार्यक्रम में 'कथाशाला' की संस्थापक सिमी श्रीवास्तव ने बच्चों को कहानी सुनाई। **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास** द्वारा 'पेजेज अलाइव : इंटरेक्टिव सेशन ऑन द लिटरेरी आर्ट्स' कार्यक्रम आयोजित हुआ। **'नेहरू प्लैनेटोरियम'** द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'स्पेस सफारी : ऐन एडवेंचर इन एस्ट्रोनॉमी' के अंतर्गत वक्ता ने बच्चों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। **एनसीसीएल और कार्टून नेटवर्क** की ओर से आयोजित 'ड्रीम्स बिकम रियलिटी' के अंतर्गत 'माई फ्यूचर सेल्फ' पर पोस्टर मेकिंग कंपिटीशन आयोजित किया गया। **साहित्य अकादेमी** की ओर से 'बाल साहिती' कार्यक्रम आयोजित किया गया। **पराग इनिशिएटिव ऑफ ट्रस्ट** के तत्वावधान में 'थिएट्रिकल टेल्स : ब्रिंगिंग स्टोरी टू द स्टेज' पर चर्चा आयोजित हुई। **सावन कृपाल रूहानी मिशन** द्वारा 'फेबीज एंड फैंटास्टिक : अ वर्ल्ड ऑफ स्टोरीटेलिंग' कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें इनर्जी (innergy) एप को प्रमोट किया गया। **इंद्रप्रस्थ स्कूल सहोदय** द्वारा 'लाइब्रेरियन मीट' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. राजन, प्रो. डी.वी. सिंह, ममता मधु सिंह उपस्थित रहीं। **सेंटर फॉर स्पेस साइंस एंड अर्थ हैबिटैबिलिटी, भोपाल** द्वारा आयोजित 'ल्यूनर सेशंस : हाउ मेनी मून्स इन अवर कॉस्मिक नेबरहुड' कार्यक्रम में जी. श्रीनिवासन और जेएनयू छात्रा रितिका गौड़ ने विभिन्न प्लैनेट के बारे में बच्चों को जानकारी दी। **एनसीसीएल और डिस्कवरी किड्स** के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'मार्स मिस्टिक : इमैजिन एंड ड्रॉ द एलियन फ्रॉम मंगल ग्रह' कार्यक्रम में बच्चों से मंगल ग्रह का एलियन अपनी-अपनी कल्पनानुसार बनाने के लिए कहा गया। **हासी एंपावरिंग स्माइल्स** की ओर से 'स्केच इट आउट' कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चों को काल्पनिक चित्र बनाने का चैलेंज दिया गया।

साहित्यिक गतिविधियाँ

पेटल्स पब्लिशर्स; द ग्रेट इंडियन बुक टूर; प्रखर गूँज; नोशन प्रेस पब्लिशर्स; अंगूर प्रकाशन; साहित्य अकादेमी; प्यारा केरकेकट्टा फाउंडेशन; सोल्ह वेलनेस; अहमदाबाद इंटरनेशनल लिटरेरी फेस्टिवल; इंविंसबल पब्लिशर्स; प्रगति ई-विचार लिटरेचर फेस्टिवल; ओम बुक्स; बोधरस प्रकाशन; अश्रुतपूर्वा संस्थान; सर्वभाषा ट्रस्ट; केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली; शिवना प्रकाशन; सामयिक प्रकाशन; वाणी प्रकाशन; जैको पब्लिशिंग; प्रभात प्रकाशन; आकार बुक्स; राष्ट्रीय सिंधी विकास परिषद; बुकलवर पब्लिशिंग हाउस; भारतीय शिक्षण मंडल, दिल्ली; वितस्ता पब्लिशिंग; एमेरिल्स; नागरी लिपि परिषद; हिंदी श्री पब्लिकेशन; प्रवासी संसार फाउंडेशन; हिंद युग्म प्रकाशन; क्लेवर फॉक्स पब्लिशिंग हाउस; प्रकाशन विभाग; श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ एवं साधुमार्गी पब्लिकेशन; राजपाल एंड संस; समदर्शी प्रकाशन; सामयिक प्रकाशन; अक्षर प्रकाशन; फ्लेयर्स एंड ग्लेयर्स; पानी संस्था; हिंदी अकादमी, दिल्ली; राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत; आलमी उर्दू ट्रस्ट; ओम बुक्स; वाव पब्लिशिंग हाउस; रूपा पब्लिकेशन की ओर से विषय आधारित कार्यक्रम, पुस्तक लोकार्पण, थीम आधारित प्रस्तुतियाँ दी गईं।

प्रभात प्रकाशन द्वारा हेमंत शर्मा की पुस्तक 'राम फिर लौटे' पर चर्चा आयोजित की गई। इस अवसर पर राज्यसभा सांसद श्री सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि राम साक्षात् ईश्वर हैं और उनके आध्यात्मिक, राजनीतिक और सामाजिक स्वरूप को लेखक ने इस किताब में रचनात्मक ढंग से प्रविष्ट किया है। सांसद श्री मनोज तिवारी ने कहा कि राम जी की कहानी भाईचारे, सौहार्द से भरपूर है, उनके लिए सब

समान हैं और यही इस किताब में सामने आएगा। **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत** द्वारा आयोजित कार्यक्रम में दो पुस्तकों 'गहने क्यों पहनें? : सामाजिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक अध्ययन' और

'कम्युनिकेशन : सोल ऑफ इवोल्यूशन' का लोकार्पण किया गया। इन दोनों पुस्तकों के लेखक गुलाब कोठारी जी हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय विदेश और शिक्षा राज्यमंत्री डॉ. राजकुमार रंजन सिंह रहे। माननीय मंत्री जी ने पुस्तक संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत को धन्यवाद दिया। न्यास-अध्यक्ष प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे ने कहा कि संवाद माँ की कोख में आने के साथ ही जन्म लेता है और जीवन के अंत तक चलता है। संवाद की बात वेदों में भी कही गई है। न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक ने माननीय मंत्री जी एवं लेखक गुलाब कोठारी जी का स्वागत करते हुए उनकी पुस्तकों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी।

प्रभात प्रकाशन द्वारा 'कारगिल' पुस्तक पर चर्चा आयोजित हुई। इस अवसर पर कर्नल वी.एन. थापर, डॉ. ऋषिराज, प्रभात कुमार, पीयूष कुमार उपस्थित रहे। न्यास-अध्यक्ष श्री युवराज मलिक ने 'कारगिल' पुस्तक के लिए लेखक डॉ. ऋषिराज को धन्यवाद दिया। लिफी पब्लिशर्स के तत्वावधान में 'ऑथर्स स्पीक' आयोजित की गई। इस अवसर पर सेवानिवृत्त आईआरएस डॉ. साधना शंकर,

सीआरपीएफ की उपमहानिरीक्षक सुश्री नीतू, सुश्री अर्चना मिराजकर, डॉ. रश्मि सिंह, सुश्री अदिति दास उपस्थित रहीं।

ब्लू रोज वन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'द डीकेट ऑफ डेवलपमेंट' पुस्तक का लोकार्पण हुआ। **सिने दरबार** के तत्वावधान में 'फूड, फ्रेंडशिप और कम्यूनियन' पर चर्चा आयोजित हुई। **व्हाइट फाल्कन पब्लिकेशन** के तत्वावधान में 'ऑथर्स मीट' का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें परमजीत कुमार की पुस्तक 'द गॉड वेक्स' पर चर्चा हुई। **अद्विक प्रकाशन** द्वारा जे.पी. पांडेय का बाल कहानी संग्रह 'नीली राजकुमारी', सुभाष चंद्र का व्यंग्य संग्रह 'दाने अनार के', गिरीश पंकज का 'चयनित व्यंग्य' और पंकज प्रसून का 'सच बोलना पाप है' का लोकार्पण किया गया। **द ग्रेट इंडियन बुक टूर** द्वारा 'अ जर्नी विद इन एंड आउटवर्ड्स थ्रू द लिटरेचर' सत्र में 'माई डैड्स डॉटर', आशीष राय सिंघानिया की पुस्तक 'कन्फेशंस ऑफ़ ए ट्रैवलहॉलिक्स', रविंद्र गरिमेला की पुस्तक 'बाउंडलेस होरिजन' और 'पार्लियामेंट ऑफ़ इंडिया', मृदु की पुस्तक 'अ विडो रिबर्थ फ्रॉम हर एशेज' और 'स्पैरोज ऑफ मिशीगन' और नूतन खुराना की पुस्तक 'रिक्रिएट योर डेस्टिनी' पर चर्चा हुई। **हाइब्रो स्क्राइब पब्लिकेशन** द्वारा शकुंतला अजीत भंडारकर की 'शूरवीर की अमर गाथा' और कैप्टन रामनाथ मंगेशकर कामत की 'सकू' का लोकार्पण किया गया। **परिवर्तन साहित्यिक मंच** की ओर से 'एक नदी थी सई', 'बुद्ध होने के मायने' एवं 'गुल्ली-डंडा ब होइगा, पेट चीर दिया ब होइगा' पर चर्चा आयोजित हुई। **आइसेक्ट पब्लिकेशन** की ओर से संतोष चौबे की पुस्तक 'घर बाहर' और उनकी अन्य कविताओं पर चर्चा का आयोजन किया गया।

भारत लिटरेचर फेस्टिवल द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'लल्लनटॉप' के प्रधान संपादक सौरभ द्विवेदी का साक्षात्कार सुनने के लिए विशाल हुजूम उमड़ पड़ा। सौरभ द्विवेदी का साक्षात्कार अंजुम शर्मा ने किया।

सीईओ स्पीक

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा सीईओ स्पीक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस आयोजन ने प्रकाशन उद्योग के महत्वपूर्ण पहलुओं पर विचार-विमर्श करने के लिए एक मंच प्रदान किया, जिसमें बहुभाषी परिदृश्य और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) के एकीकरण पर विशेष ध्यान दिया गया। इसका उद्देश्य प्रकाशन के लिए एक मंच के रूप में काम करना था। इस अवसर पर सीईओ, एमडी और वरिष्ठ प्रकाशन पेशेवरों के बीच विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक मंच प्रदान करने की कल्पना की गई। संचालन एनबीटी के संपादक और परियोजना प्रमुख श्री कुमार विक्रम ने किया। न्यास-अध्यक्ष श्री मिलिंद सुधाकर मराठे द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। उन्होंने बताया कि कैसे न्यास बहुभाषी प्रकाशन में अग्रणी रहा है। उन्होंने माननीय शिक्षा राज्य मंत्री डॉ. सुभाष सरकार और

महामहिम डॉ. अब्दुललतीफ अब्दुलअज़ीज़ अलवासेल का आभार व्यक्त किया। इसके बाद प्रकाशन साहित्य, प्रकाशन और अनुवाद आयोग के महाप्रबंधक डॉ. अब्दुललतीफ अब्दुलअज़ीज़ अलवासेल द्वारा 'द बुक मार्केट इन सऊदी अरब' पर एक प्रस्तुति दी गई, जिसने

दोनों के बीच सऊदी अरब और भारतीय साहित्य के माध्यम से विचारों के आदान-प्रदान पर ध्यान केंद्रित किया।

माननीय शिक्षा राज्य मंत्री डॉ. सुभाष सरकार ने बहुभाषी भारत के संदर्भ में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए मुख्य भाषण दिया। उन्होंने वैश्विक दक्षिण में भारतीय शैक्षिक प्रणाली के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि कैसे प्रकाशन उद्योग भारत की मातृभाषाओं के माध्यम से ज्ञान प्रसार को बढ़ावा देने में भविष्य की संभावनाओं के लिए इसके साथ हाथ मिला सकता है।

नई दिल्ली राइट्स टेबल

"मेले का 40 प्रतिशत बाजार अंतरराष्ट्रीय है, जहाँ एमएसएमई और बड़े प्रकाशकों के लिए अवसर बढ़ रहा है। भारत और विदेशों से पुस्तकों का बॉलीवुड रूपांतरण भारतीय उद्योग-सहयोग का सूचक है। विश्व पुस्तक मेला भारतीय संस्कृति का प्रतिबिंब है।" उक्त उद्‌गार विश्व पुस्तक मेले में नई दिल्ली राइट्स टेबल के आयोजन के अवसर

पर मुख्य अतिथि लंदन बुक फेयर के निदेशक गैरेथ एडवर्ड राप्ले ने व्यक्त किए।

इस आयोजन में भारत सहित 10 देशों के 60 से अधिक प्रकाशक सहभागी थे और 400 से अधिक बी2बी मीटिंग संपन्न हुईं। ये देश थे—अर्जेंटीना, बांग्लादेश, फ्रांस, ईरान, नेपाल, स्पेन, श्रीलंका, तुर्किये, संयुक्त अरब अमीरात, यूनाइटेड किंगडम। इस अवसर पर न्यास-अध्यक्ष प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे व न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक उपस्थित रहे।

'फर्टिलाइजिंग द फ्यूचर' : डॉ. मनसुख मांडविया

"कृषि क्षेत्र में हो रहे बदलाव एक नए भारत की निशानी है। स्वयं सहायता समूह के द्वारा कृषि में ड्रोन का उपयोग करके नई कृषि क्रांति लाई जा रही है। 'फर्टिलाइजिंग द फ्यूचर' पुस्तक मोदी सरकार के पिछले 10 सालों में हुए कृषि बदलावों को चिह्नित करती है।" नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में भ्रमण के दौरान भारत के उर्वरक एवं रसायन मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने उक्त उद्‌गार व्यक्त किए। वे कहते हैं कि इस सरकार में दूसरी कृषि क्रांति आई है। विदित हो

कि यह पुस्तक रूपा पब्लिकेशन से प्रकाशित हुई है। तदुपरांत, डॉ. मांडविया ने थीम मंडप का अवलोकन भी किया। इससे पहले न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक ने उनका स्वागत किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी विश्व पुस्तक मेले में सांस्कृतिक कार्यक्रम में देश के जाने-माने कलाकारों द्वारा प्रस्तुतियाँ दी गईं। इसमें अतिथि देश सऊदी अरब के कलाकारों द्वारा स्वार्ड डांस किया गया। इसके अलावा, कथक केंद्र, नोएडा; दिल्ली विश्वविद्यालय के कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज ग्रुप; हंसराज कॉलेज की छात्राओं; दिल्ली पब्लिक स्कूल, रोहिणी के छात्रों; दिल्ली तकनीकी विश्वविद्यालय; पुरुषोत्तम राणा द्वारा मास्टर ऑफ पपेट शो; जम्मू-कश्मीर के लोक नृत्य; साधो बैंड, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास और रेख्ता के हिंदी उपक्रम 'हिंदवी' के संयुक्त तत्वावधान में बहुभाषी कवि सम्मेलन; महाराष्ट्र के सांस्कृतिक कार्यक्रम, फैजल आशूर खान एंड बैंड; फ्यूजन बैंड; यूसुफ निजामी एंड ग्रुप द्वारा सूफी कव्वाली; रामिष्ट बैंड की ओर से शानदार प्रस्तुतियाँ दी गईं।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2024 में 700 से अधिक साहित्यिक और रचनात्मक कार्यक्रम हुए।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की द्विमासिक पत्रिका

पुस्तक संस्कृति

के सदस्य बनें

सदस्यता प्रपत्र

नाम : _____

पता : _____

जिला : _____ शहर _____ राज्य _____ पिन कोड _____

फोन : _____ ई-मेल : _____

मैं राशि रु. (अंतर्देशीय : 225/- रु.; अंतर्राष्ट्रीय : 1000/- रु.) _____ वार्षिक सदस्यता हेतु (बैंक ड्राफ्ट/नगद) _____ ड्राफ्ट संख्या _____ बैंक एवं शाखा द्वारा जारी _____ भेज रहा/रही हूँ (संलग्न)।

सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट द्वारा (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के पक्ष में देय), सदस्यता प्रपत्र के साथ निम्नलिखित पते पर भेजें :

संपादक

पुस्तक संस्कृति

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, 5 नेहरू भवन, वसंत कुंज, सांस्थानिक क्षेत्र, फेज-2,

नई दिल्ली-110070

ई-मेल : editorpustaksanskriti@gmail.com

दूरभाष : 011-26707758/26707876

ऑनलाइन शुल्क भेजने का विवरण इस प्रकार है :

For	National Book Trust, India
Bank	Canara Bank
Branch	Vasant Kunj, New Delhi-110070
A/c No.	3159101000021
IFSC Code	CNRB0003159
MICR Code	110015187

शुल्क भेजने के पश्चात् कृपया फोन अथवा पत्र द्वारा सूचना अवश्य दें।

सदस्यता के आवेदन हेतु इस सदस्यता प्रपत्र की प्रतिलिपि का उपयोग करें।

RNI NO. DELHIN / 2016 / 68219

मनोरंजन, ज्ञान और जिज्ञासा की अनूठी दुनिया!

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के कुछ नए प्रकाशन

गोवा के पारंपरिक खेल

भूषण भावे

खेल कभी भी केवल मनोरंजन का साधन नहीं होते। खेल शिक्षाप्रद और मूल्य सृजनकारी होते हैं। पारंपरिक मानव संस्कृति का सार हैं। लोगों को रीति-रिवाज और नैतिकता सिखाने का सरल माध्यम हैं। इससे शरीर और मस्तिष्क तेजस्वी और फुर्तीला बनता है। निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा पैदा करने के लिए पारंपरिक खेलों को सभी स्तरों पर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। चित्रों के साथ सुंदर साज-सज्जा में पुस्तक।

पृ. 204; रु. 275.00

आर्यनंद और जीवन मुकुट

वर्नर बैंडेल

अनुवाद : **मृत्युंजय राव**

यह कहानी एक परी कथा की तरह है, लेकिन परी कथा नहीं है। आर्यनंद की मुलाकात एक ज्ञानवान मनीषी से होती है। मुलाकात के बाद आर्यनंद खुद के लिए उस जीवन मुकुट की खोज में निकल पड़ता है। यह सुंदर कहानी सृष्टि के सबसे गहन ज्ञान से भरी हुई है। आप चाहे जिस आयु के हों, यह कहानी आपकी आत्मा का उत्थान करेगी।

पृ. 80; रु. 225.00

अंटार्कटिका में दक्षिण गंगोत्री का निर्माण : एक चमत्कार

हर्ष कुमार गुप्ता

अंटार्कटिका दुनिया का पाँचवाँ सबसे बड़ा महाद्वीप है, जो हमेशा बर्फ से ढका रहता है। अंटार्कटिका में भारत की उपस्थिति दर्ज करने के उद्देश्य से 'ऑपरेशन गंगोत्री' चलाया गया। अभियान के तहत प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने हर्ष कुमार गुप्ता से पूछा था, "क्या आप अंटार्कटिका में स्टेशन स्थापित कर पाएँगे?" उन्होंने बताया, "यदि नहीं कर पाया तो मैं वापस नहीं आऊँगा।" इसी घटनाक्रम की कहानी 16 अध्यायों तक फैली है। एक रोमांचक किताब।

पृ. 96; रु. 95.00

कछुआ और खरगोश

डॉ. जाकिर हुसैन

अंग्रेजी अनुवाद : **खुशवंत सिंह**

चित्र : **एम.एफ. हुसैन**

अनुवाद : **पूजा तिवारी**

यह पुस्तक प्रसिद्ध शिक्षाविद् और बुद्धिजीवी डॉ. जाकिर हुसैन ने लिखी है। वे 'भारत रत्न' विजेता और भारत के तीसरे राष्ट्रपति रहे। पुस्तक का उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद चर्चित इतिहासकार खुशवंत सिंह ने किया। इसके चित्र प्रख्यात चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन ने बनाए हैं। अनुवाद डॉ. पूजा तिवारी ने किया है। खरगोश और कछुए की यह कहानी अलग परिष्कार और पटुता के साथ प्रस्तुत की गई है।

पृ. 40; रु. 70.00

चंदरनगर : चाँद का एक शहर

लेखन व रेखाचित्र : **शुद्धसत्व बसु**

अनुवाद : **धनंजय चोपड़ा**

इस पुस्तक में चंदरनगर के विचित्र, लेकिन एक ऐतिहासिक रूप से समृद्ध शहर का सचित्र कालक्रम है। एक पूर्व फ्रेंच बस्ती, चंदरनगर भारतीय-फ्रांसीसी वास्तुकला, उत्सवों, व्यंजनों और संस्कृति के प्रति उत्साही लोगों के लिए एक लोकप्रिय स्थल है। चंदरनगर में ही पले-बढ़े लेखक ने अतीत को स्मरण कराने वाले शब्दों और जीवंत छवियों के माध्यम से अमूर्तन को मूर्त रूप देते हुए शहर की साझा संस्कृति को बहुत ही सरल ढंग से प्रस्तुत किया है।

पृ. 32; रु. 100.00

शिमला

रचना गुप्ता

'शिमला' का नाम ध्यान में आते ही हमारी स्मृति में घने लंबे देवदार और बर्फ से लदे पहाड़ों का दृश्य आ जाता है। यहाँ की हरियाली और ठंडी हवा का नजारा भला किसके जहन में नहीं कौंधता होगा! कुल 27 अध्यायों में पुस्तक का विस्तार है, जिनमें 'झोपड़ी से देश की राजधानी तक', 'दासता की इंतिहा', 'शिमला का दिल-मॉल रोड', 'एक टका और गुनगुनी धूप', 'महल का जलवा', 'दैवीय आस्था', 'चर्च की घड़ी', 'टाउन हॉल' आदि मुख्य अध्याय हैं।

पृ. 180; रु. 425.00

उड़ जा पतंग

बंकिम चंद्र नायक

चित्र : **ब्रज किशोर जेना**

अनुवाद : **सुजाता शिवेन**

प्रस्तुत पुस्तक में 45 अध्याय हैं। इसमें पतंग के इतिहास से लेकर उसके विभिन्न रूपों का विस्तार से वर्णन किया गया है। पत्तों की पतंग, पुतला पतंग, बैलून पतंग, कितने रूप कितने रंग, मौसम का पूर्वानुमान, बेतार संकेत, युद्ध में सहायता, पतंग बम आदि अध्याय रोचक जानकारियाँ देते हैं।

पृ. 64; रु. 105.00

nbt.india
एक सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070.

फोन : 011-26707761 • **ई-मेल** : nro.nbt@nic.in

वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in